लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ पैतालीसवां अंक जुलाई–सितम्बर, 2023



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मु का अभिनंदन करते हुए अपर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री आनंद मोहन बजाज



अपर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री आनंद मोहन बजाज का स्वागत करते हुए महानिदेशक राजभाषा श्री भवानी शंकर



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ पैतालीसवां अंक

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

(जुलाई–सितम्बर, 2023)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली–110124

सरकारी कामकाज हिंदी में करना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

आप शुरू तो कीजिए धीरे-धीरे आपको लगने लगेगा ये तो बहुत ही आसान है।

पत्रिका में अपनी रचनाएं प्रकाशित करने हेतु लेखकों के लिए अनुदेश

1. रचना जहां तक संभव हो, वर्ड सॉफ्ट कॉपी में भेजी जाए। यदि भौतिक प्रति भेजी जा रही है तो मंगल फॉन्ट में फॉन्ट साइज़ 10 रखते हुए पृष्ठ के एक ओर टंकित करके निम्न पते पर भेजें।

   संपादक 'लेखापरीक्षा प्रकाश', 10, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली–110002

2. कृपया लेख के साथ मौलिकता प्रमाणपत्र भी संलग्न करें।
3. ईमेल से भेजते समय अपना नाम, पदनाम एवं विस्तार/मोबाइल संख्या का भी उल्लेख अवश्य करें।
4. यदि पत्रिका के वर्तमान अंक के लिए पर्याप्त रचनाओं की संख्या प्राप्त हो चुकी हो तो उसी रचना को अगले अंक के लिए आरक्षित कर लिया जाता है। अतः लेखकों से निवेदन है कि अपनी रचना के प्रकाशन के संबंध में अनावश्यक पूछताछ न करें।
5. संभव हो तो संबंधित पत्र व्यवहार भी राजभाषा में करने का प्रयास करें।
6. सॉफ्ट कॉपी में रचना भेजने का पता :– **ईमेल : anuragp.cag@cag.gov.in; Whatsapp : 9402275468**

आशा है आप अपना सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ पैतालीसवां अंक (जुलाई–सितम्बर, 2023)

अनुक्रमणिका

	पृ.सं.
पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5
पाठकों के नाम संदेश	6
माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	7
आपके पत्र	11

लेख

1.	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका *नीतीश कुमार*	14
2.	विश्व फलक पर परचम लहराती हिंदी *डॉ. लाखा राम*	16
3.	राजभाषा हिंदी में संग्रहीत सुशासन का पाठ *अभय राम सिंह*	21
4.	शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता *विनोद कुमार शर्मा*	24
5.	भूस्खलन – एक प्राकृतिक आपदा *इम्तियाज अहमद*	28
6.	सकारात्मक सोच का मानव जीवन पर प्रभाव *सुश्री राजकुमारी शर्मा*	31
7.	परिवार सहित मेरी पहली हवाई यात्रा *बिजेन्दर कुमार बेरवाल*	35
8.	पानी की बचत आज की आवश्यकता *मदन गोपाल शर्मा*	41
9.	शौर्य मूर्ति बन्दा वैरागी *सुश्री सं.ग. श्रीमती*	43
10.	फतेहपुर सीकरी व भरतपुर स्थित केवलादेव राष्ट्रीय पार्क की सैर *ललित कुमार वर्मा*	46

	पृ.सं.
11. चुनावी सफरनामा : 1951–1952 से 2024 तक *अनुराग प्रभाकर*	49
कहानी	
12. चरित्रहीन *संजय कुमार सिंह*	60
13. मदर्स डे *प्रवीण कुमार सहगल*	68
कविताएँ	
14. ग़ज़ल *रामानन्द शर्मा*	71
15. भाई और बहन का रिश्ता *सुश्री ज्योति यादव*	72
16. देहली वाली गर्लफ्रेंड *मेहरबान सिंह नेगी*	73
17. ट्रेन में देखा मैंने सारा संसार *सुमित कुमार-III*	75
18. बिखरे लम्हें *श्रीमती ललिता मैनाली*	76
19. संजीवनी *आकाश त्रिवेदी*	77
20. जीवन *विदित अग्रवाल*	78
21. नारी शक्ति *सतनाम सिंह*	79
22. किस की कब विदाई *श्याम दत्त मिश्रा*	80
23. दुनिया की सच्चाई *सुचित कुमार शुक्ला*	81
24. साड़ी की महिमा *श्रीमती तृप्ता*	82
25. यादों का झरोखा *नवीन 'एकान्त' दैया*	83
26. मुख्यालय की "कीर्ति" *अनुराग प्रभाकर*	84



स्वत्वाधिकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन
''लेखापरीक्षा प्रकाश''
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

एक सौ पैतालीसवां अंक
(जुलाई–सितम्बर, 2023)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

सुश्री रीमा प्रकाश
अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

सहायक संपादक

श्री किरन पाल सिंह
हिंदी अधिकारी

रचना चयन समिति

श्री अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)

श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

श्री किरन पाल सिंह
हिंदी अधिकारी

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेशंस
ए–102, वज़ीरपुर इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा



संपादकीय

हमारी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" का एक सौ पैतालीसवां अंक (145वां) अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिका ने अब तक काफी लंबी यात्रा सम्पन्न कर ली है और ऐसा आप जैसे सुधी एवं जागरूक पाठकों के जीवंत सहयोग से संभव हो सका है।

प्रसिद्ध जन कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की निम्न पंक्तियों;

गरजते जल राशि की उठती हुई ऊंची लहर
आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लपट
ये कंपा सकती कभी जिसके कलेजे को नहीं
भूल कर भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं।

*को आत्मसात करते हुए कदाचित हमारे राजभाषा अनुभाग के हिंदी के प्रचार–प्रसार के पथ पर अविचल, अविरत एवं अविराम चलते रहने के प्रतिफल में **वर्ष 2022-23 का राजभाषा कीर्ति में प्रथम पुरस्कार** इस कार्यालय को मिला है। हम प्रयास करेंगे कि अपने कार्य के इसी स्तर को बनाए रखें।*

पत्रिका को इस बार और अधिक ज्ञानवर्धक, मनोरंजक एवं रोचक बनाने हेतु हमने लीक से हटकर कुछ लेखों, कविताओं एवं कहानियों को सम्मिलित किया है। अठारहवें लोकसभा चुनावों का परिणाम घोषित होने वाला है जिस पर एक लेख हमने अपने पाठकों के ज्ञानवर्धन हेतु सम्मिलित किया है। समाज में महिलाओं की बढ़ती भूमिका पर कविता को सम्मिलित किया गया है। भूस्खलन की समस्या एक विश्वव्यापी चिंता बन चुकी है जिस पर पत्रिका के एक लेख में विचार किया गया है। इसी अवधि में मुख्यालय में हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस समापन समारोह भी मनाया गया जिस पर विस्तार से चर्चा की गई है।

यह न सिर्फ हमारे प्रयत्नों का परिणाम है बल्कि आप सभी पाठक वृंद के समर्पण, एकनिष्ठता व प्रेम का द्योतक भी है। यह राजभाषा कार्य में हमारे समर्पण एवं कर्तव्य का स्तर भी है जिसे हमने हमारी पत्रिका में बनाए रखने का प्रयास किया है। श्रेष्ठ लेखों एवं रचनाओं को पत्रिका में स्थान प्रदान करने की हमारी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस बार भी हमने उत्तम रचनाओं को स्थान दिया है। चयनित रचनाओं के लेखकों को बहुत–बहुत बधाई। आशा है कि वे भविष्य में भी अपना सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे।

पत्रिका परिवार सभी सुधी पाठकों को हृदय से आभार प्रकट करता है और उनके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत करता है।

आपका शुभाकांक्षी
अशोक सिन्हा
महानिदेशक (राजभाषा)

नई दिल्ली

अस्वीकरण – पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के नाम संदेश

प्रिय पाठकवृंद,

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" का उद्देश्य है कि पाठकों में हिंदी भाषा के लेखन, पठन व पाठन की ओर रूझान बढ़े। अधिकारी व कर्मचारी यह समझना प्रारम्भ कर दें कि जब वे हिंदी में कठिन रचनाओं यथा कविताओं, गद्य, कहानियों जैसे कठिन विधाओं का लेखन व पाठन कर सकते हैं तो कार्यालय कार्य क्यों नहीं कर सकते क्योंकि कार्यालय कार्य करना तो इनसे सरल ही है।

मुख्यालय की आपकी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" भी सरकार के इस उद्देश्य में पीछे नहीं है। पत्रिका के हर अंक की भांति इस अंक में भी पठनीय कविताओं, रोचक कहानियों एवं ज्ञानवर्धक लेखों को इस प्रकार सम्मिलित किया गया है कि पत्रिका हर आयु व वर्ग के पाठकों के लिए सार्थक हो। पाठकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए कुछ नए स्तम्भ भी इस बार सम्मिलित किए गए हैं जो पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि पत्रिका के नए कलेवर को पसंद किया जाएगा। पत्रिका को पठनीय और उत्कृष्ट बनाने के लिए आपके सुझावों की हमें उत्सुकता से प्रतीक्षा रहेगी।

जय हिन्द – जय भारती

आपका शुभाकांक्षी

अनुराग प्रभाकर

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

नई दिल्ली



सत्यमेव जयते



हिंदी दिवस 2023

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार



पत्रिका परिवार को बधाई

त्रैमासिक गृह ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतालीसें अंक (जनवरी–मार्च 2023) के ई–संस्करण की प्रति ईमेल के माध्यम से हमें प्राप्त हुआ है। पत्रिका की साज–सज्जा, आवरण पृष्ठ समेत कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित चित्र अत्यंत ही मनमोहक हैं। मुख्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका अन्य क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रेरणास्रोत है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की हैं अपितु ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायी भी हैं। पत्रिका में निहित विविध विषयों पर आधारित रचनाएँ पाठकों को आकर्षित करती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ हमारे विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हि.अ.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
बिहार, पटना

प्रशंसनीय रचनाएं

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतालीसवें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज–सज्जा अति मनमोहक है। पत्रिका का प्रत्येक अंक राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में अति उल्लेखनीय योगदान निभा रहा है। पत्रिका में समाविष्ट श्री मेहरबान सिंह नेगी का लेख 'हिंदी कथा साहित्य और समाज', डॉ. लाखा राम का लेख 'वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाती हिंदी', सुश्री सं.ग. श्रीमती का लेख 'राष्ट्र के निर्माण में नारी का योगदान' एवं श्री संजय कुमार सिंह का लेख 'भूत' विशेष रूप से पठनीय व ज्ञानवर्धक हैं। इसके अतिरिक्त श्री धर्मवीर भारती की कविता 'गजल', श्री संदीप भसीन की कविता 'दुआ', श्री नवीन एकान्त दैया की कविता 'आओ खेलें होली' एवं श्री केदारनाथ प्रसाद की कविता 'यादों के फूल' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ तैतालीसवां अंक प्राप्त हुआ, इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। यह अंक अपने कलेवर, साज–सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। इस अंक में प्रकाशित श्री मुनीष भाटिया द्वारा लिखित 'दो बेटियों की माँ', सुश्री मीना कुमारी द्वारा लिखित 'पतंग' और श्री केदारनाथ प्रसाद द्वारा लिखित 'यादों के फूल' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
तमिलनाडु, चेन्नै

ज्ञान तथा मनोरंजन से भरी रचनाएं

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतालीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज–सज्जा आकर्षक है। पत्रिका अपने पूर्व अंकों की तरह उच्च कोटि के बेहतरीन ज्ञान तथा मनोरंजन से भरी हुए रचनाओं को समाहित किए हुए है। लेखों में श्री संजीव कुमार का लेख 'राजभाषा हिंदी प्रगति की ओर' में हिंदी की अबाधित विकास यात्रा के कई उदाहरण प्रस्तुत करता है। सुश्री विदुषी वत्स के लेख 'स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका' में स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा की अविस्मरणीय भूमिका का वर्णन मिलता है। श्रीमती पूजा सिंह मण्डल का लेख 'ऊर्जा संरक्षण' सराहनीय है। इसके अलावा श्री ललित कुमार वर्मा का लेख 'आइये दर्शन करें श्री कृष्ण जन्मभूमि के', सुश्री राजकुमारी शर्मा का लेख 'प्रकृति तथा मानव का संबंध', श्री प्रदीप तिवारी का लेख 'मराठा नवजागरण और राष्ट्रीय प्रतिरोध' आदि रचनाएं भी उल्लेखनीय हैं। कहानियों में श्री संजय कुमार सिंह की कहानी 'भूत' रोचक लगी। कविताओं में श्री संदीप भसीन की कविता 'दुआ' मर्मस्पर्शी है। इसके अतिरिक्त श्री पंकज अरोड़ा की 'कुछ पल ठहर तो सही', श्री मुनीष भाटिया की 'मैं पिता', सुश्री कुसुम लता की 'दो बेटियों की माँ', श्री अजित कुमार की 'बचपन' आदि कविताएं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखा अधिकारी (प्रशा. हिंदी सेल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

शिक्षाप्रद, नीतिप्रद एवं रोचक रचनाएं

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतालीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई है, एतदर्थ

धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित छायाचित्र एवं पृष्ठों की साज–सज्जा अत्यंत मनमोहक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं शिक्षाप्रद, नीतिप्रद एवं रोचक हैं। डॉ. लाखा राम द्वारा लिखित 'वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाती हिंदी', सुश्री पूजा सिंह मंडल का लेख 'ऊर्जा संरक्षण, श्री हीरा बल्लभ भट्ट द्वारा लिखित लेख 'ग्रीष्म ऋतु में पथ्य और अपथ्य भोजन', तथा कविताएं जैसे श्री राजकुमार द्वारा रचित कविता 'वह कौन है?' श्री बनवारी लाल सोनी की 'महारानी अहिल्या देवी' तथा श्री केदारनाथ प्रसाद द्वारा रचित कविता 'यादों के फूल' एवं अन्य सभी रचनाएं भी विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिं क.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती रचनाएं

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतालीसवाँ अंक की ई–संस्करण की प्राप्ति हुई, अतः आभार स्वीकार करें। सदैव की भांति इन अंकों की सभी रचनाएं सुसंपादित और मन पर गहरा प्रभाव डालने वाली हैं। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं अच्छी हैं। परन्तु डॉ. लाखा राम जी का लेख 'वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाती हिंदी', श्री संजीव कुमार जी का लेख 'राजभाषा हिंदी प्रगति की ओर', श्री मुनीष भाटिया जी की कविता 'मैं पिता', सुश्री आरती शर्मा जी की कविता 'आस्था अमात्य की' और सुश्री कुसुम लता जी की कविता 'दो बेटियों की माँ' पत्रिका में विशेष रूप से अपनी ओर ध्यान आकर्षित करती हैं। पत्रिका के संपादक मण्डल व रचनाकारों को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई। यह पत्रिका इसी प्रकार 'नभः स्पृशं दीप्तम' के प्रतिमान को साकार करती रहे। लेखापरीक्षा प्रकाश की उज्ज्वल भविष्य के लिए 'प्रागज्योतिष परिवार' हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता है।

वरि. उप महालेखाकार (प्रशा.)
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
असम, गुवाहाटी

दर्शनीय कार्यालयीन चित्र

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ तैतालीसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं विशेषतौर पर हिंदी कथा साहित्य और समाज', 'भारत माता', 'वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाती हिंदी' 'ऊर्जा संरक्षण', राष्ट्र के निर्माण में नारी का योगदान', 'कुछ पल ठहर तो सही', मैं 'पिता' आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं। पत्रिका की साज–सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी (हि. कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II)
मध्य प्रदेश, भोपाल

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका



नीतीश कुमार
आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक
महानिदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय,
मध्य रेल मुंबई (छ.शि.म.ट.)

हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आज़ाद हुआ। यह दिन देश के समस्त नागरिकों/आम जनमानस के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण तथा हर्ष एवं उल्लास से भरा दिन था। महात्मा गांधी ने भी प्रारंभ से ही हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा माना है। संपूर्ण देश में स्वतंत्रता के अलख को जगाने में हिंदी भाषा का बहुत ही बड़ा और अहम रोल है। हिंदी भाषा देश की अलग–अलग भाषाओं का गठजोड़ है। गांधी जी का अनुभव था कि 'पराधीनता चाहे राजनीतिक क्षेत्र की हो अथवा भाषाई क्षेत्र की, दोनों ही एक दूसरे की पूरक और आने वाली पीढ़ियों को परमुखापेक्षी बनाये रखने वाली है।

देश की स्वतंत्रता के लिए अनेक वीर सपूतों ने, क्रांतिवीरों ने साथ ही कई लेखकों, कवियों ने जन जन की भाषा हिंदी में आम जनमानस की विचार धारा में अपने जीवंत लेखों, कविताओं एवं हिंदी साहित्य के माध्यम से देशभक्ति के बीज बोए। उनके लेख, क्रांति स्वर हमें स्वतंत्रता की गौरव गाथा को याद रखने में वर्तमान में नये युवा वर्ग की भी मदद करते हैं। हिंदी कथा सम्राट प्रेमचन्द द्वारा रचित रंगभूमि, कर्मभूमि एवं भारतेन्दु हरिश्चंद्र का भारत दर्शन आज भी पढ़ने के उपरांत देश प्रेम की भावना उमड़ पड़ती है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' में देश सेवा के कार्यों को सर्वोपरि माना है। वे अपने लेखों के माध्यम से देश के सभी नागरिकों को उनके कर्तव्यों का बोध कराते हैं। उनकी लिखीं कुछ अनमोल पंक्तियाँ –

जिसको न निज गौरव और निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर–पशु नीरा और मृतक के समान है।

देश की आजादी में अपना जीवन होम करने वाले भारत माता के वीर सपूतों और उनके रक्त में आजादी की ज्वाला भड़काने के लिए राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी लिखते हैं –

हो जहां बलि शीश अनगिनत,
एक सिर मेरा मिला लो।
तैयार रहो मेरे वीरों,
फिर टोली सजने वाली है।
तैयार रहो मेरे शूरों,
रणभेरी बजने वाली है।
इस बार बढ़ो समरांगण में,
लेकर वह मिटने की ज्वाला।
सागर–तट से आ स्वतंत्रता,
पहना दे तुझको जयमाला।

इसी संदर्भ में एक वीरांगना कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' कविता जिसे आज भी युवा

पढ़कर देश प्रेम की भावना में विभोर हो उठते हैं। इस कविता ने अंग्रेजी राज्य की चूलें हिला दी थीं। वीर नौजवानों, महिलाओं, बुजुर्गों ने भारत माता की रक्षा हेतु आगे आकर मर मिट जाने का जोश जज्बे का संचार करती हुई यह कविता आज भी अनूठी कृति मानी जाती है –

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की, कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन सतावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेलों हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह झाँसी वाली रानी थी।

स्वतंत्रता संग्राम में देश प्रेम की भावना को जन–जन तक पहुंचाने में सुमित्रा नन्दन पंत द्वारा रचित 'जय भारत देश' जयशंकर प्रसाद, कामता प्रसाद, बालकृष्ण शर्मा जैसे कई हिंदी के पुरोधा कवियों ने अहम भूमिका निभाई। इसी कड़ी में श्री कामता प्रसाद के शब्द हैं –

प्राण क्या है, देश के लिए,
देश खोकर जिए तो क्या जिए।

हिंदी कथा सम्राट प्रेमचन्द की कई कहानियों में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक तीव्र विरोध तो दिखा ही, इसके अलावा अफसरशाही से दबीं–कुंचली शोषित जनता के मन में उनके देश के प्रति कर्तव्य बोध का ऐसा बीज अंकुरित कर दिया, जिसने सबको आंदोलित कर दिया था। प्रेमचन्द ने जन जागरण का ऐसा अलख जगाया कि जनता अंग्रेजी सरकार के खिलाफ उठ खड़ी हुई और देश के लिए मर मिटने का जज्बा लिए मैदान में आगे आकर अंग्रेजों का सामना किया। उनके कई लेखों जैसे 'सोजे वतन' पर अंग्रेजों ने आपत्ति जताई और उन्हें परेशान करने लगे, उन्हें डराया–धमकाया गया परंतु वे रूके नहीं और हमेशा की तरह अंग्रेजी हुकूमत की दमनकारी नीतियों के विरोध में लिखते रहे।

हमारे देश की आजादी में हिंदी में रचित वचनों एवं नारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आजादी के लिए बोले गए हर नारे ने भारतीय क्रांतिवीरों में ऐसी जान फूंक दी कि हर नारा अंग्रेजी हुकूमत के ताबूत में आखिरी कील साबित हुआ।

– इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद का नाश हो – भगत सिंह

– करो या मरो, हे राम, भारत छोड़ो – महात्मा गांधी

– जय हिंद, तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा – सुभाष चन्द्र बोस

– पूर्ण स्वराज, आराम हराम है – जवाहरलाल नेहरू

– मारो फिरंगी को – मंगल पांडे

– वंदे मातरम : बंकिम चन्द्र चटर्जी

– सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा – इकबाल

– साइमन कमीशन वापस जाओ – लाला लाजपत राय

– विजय विश्व तिरंगा प्यारा – श्याम लाल गुप्त पार्षद

इस तरह सरफरोशी का जज्बा जगाते कई रचनाकार कवियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भागीदारी निभाई और अपने लेख/कविता के माध्यम से आम –जनमानस में देश प्रेम के प्रति एक नई ताकत, नई ऊर्जा का संचार किया। इस देश में सांस्कृतिक और भाषाई विविधता के बावजूद राजभाषा हिंदी ने देश के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में पिरोकर रखा है। हिंदी राष्ट्रीय एकता का अभिन्न अंग है यह देश की जनता की अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम, शक्तिशाली एवं सबसे प्रभावशाली माध्यम है।

विश्व फलक पर परचम लहराती हिंदी



डॉ. लाखा राम
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

किसी भी देश की पहचान उस देश की भाषा और संस्कृति से होती है, जिसकी छांव में उस देश के लोग पले बढ़े होते हैं। संस्कृतियां और भाषाएं दोनों एक–दूसरे की वाहक होती हैं। इनके बिना मनुष्य जीवन अधूरा है। एक संस्कृति, एक देश और एकता की परिकल्पना भाषा ही हमें सिखाती है। इतिहास साक्षी है कि सभी आक्रमणकारी पराजित देशों पर अपना आधिपत्य सुदृढ़ करने से पहले उनकी भाषा को नष्ट करते हैं। हिंदी हमारे इतिहास, समाज, जीवन मूल्यों, संस्कृति, संस्कारों से जुड़ी धरोहर की सच्ची संवाहक, संप्रेषक एवं परिचायक है।

आज वैश्वीकरण के दौर में हिंदी जन भाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा और वैश्विक भाषा के रूप में अग्रसर है। संस्कृत की पुत्री दर्जनों एशियाई भाषाओं का संगम होने के कारण हिंदी का शब्द भंडार दुनिया की किसी भी भाषा से बहुत बड़ा है। नेताओं, अभिनेताओं, व्यापारियों और उद्योगपतियों का एक बड़ा तबका जो कल तक हिंदी से परहेज करता था, आज उसकी तरफ उन्मुख है। पठन–पाठन, व्यापार, मीडिया, विज्ञापन आदि क्षेत्रों में हिंदी की पकड़ मजबूत हुई है। आज वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हिंदी भाषा अपनी लिपि एवं उच्चारण की दृष्टि से सबसे शुद्ध और विज्ञान सम्मत भाषा है। हिंदी को विश्व भाषाओं मानदंडों के रूप में विश्लेषित किया जाए तो वह विश्वभाषा के उन सभी अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं पर खरी उतरती है, जो उसे विश्वभाषा बनाते हैं। इसी कारण भाषाओं के विलुप्तीकरण के दौर में हिंदी न केवल अपने को बचाने में सफल रही है, बल्कि इसका उपयोग–अनुप्रयोग निरंतर बढ़ता रहा। हिंदी बहती हुई नदी के समान है, उसे किसी भी तरह का बंधन या मानक रोक नहीं सकता है। माखनलाल चतुर्वेदी के अनुसार 'हिंदी सिंहासनों से तिरस्कृत रही है। हिंदी को संस्कृत, पाली, अरबी, फारसी या अंग्रेजी की तरह राज्याश्रय नहीं मिला।'

हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सामासिक शक्ति है। वह किसी भी भाषा के शब्दों को बिना किसी भेदभाव के अपना लेती है। इसी समावेशिता के कारण हिंदी वैश्विक परिदृश्य में अपनी जगह बना रही है। हिंदी भारत में सर्वाधिक 65 करोड़ लोगों द्वारा बोली व समझी जाती है और पूरी दुनिया में हिंदी भाषियों की संख्या

करीब सौ करोड़ है। इतना ही नहीं आज हिंदी विश्व के करीब 175 देशों में बिना किसी संकोच के पढ़ी–लिखी और बोली जाती है वरन् विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों तथा 550 छोटे–बड़े केन्द्रों में पढ़ी और पढ़ाई जा रही है। अमेरिका व मॉरीशस के कई विश्वविद्यालयों में पीएच.डी. तक का शोध कार्य हिंदी में हो रहा है। अनेकानेक विदेशी हिंदी विद्वान हिंदी और भारतीय संस्कृति के अनुराग में इतने रम गए हैं कि उन्होंने अपनी जीवनचर्या को ही हिंदी के प्रति समर्पित कर दिया है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने भी हिंदी में याचिका स्वीकार करना प्रारंभ किया है। देश के प्रतिष्ठित प्रौद्योगिकी संस्थानों आईआईटी, एनआईटी आदि में भी हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ाई प्रारंभ हुई है। आज हिंदी भाषा ज्ञान–विज्ञान के नए–नए क्षेत्रों को भी उद्धरित करने में किसी से पीछे नहीं है। दिसंबर 2016 में विश्व आर्थिक मंच ने दस सर्वाधिक शक्तिशाली भाषाओं की जो सूची जारी की है उसमें हिंदी भी शामिल है। इसी तरह 'कोर लैंग्वेज' नामक साईट ने दस सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाषाओं में हिंदी को स्थान दिया है। 'के–इंटरनेशनल' ने वर्ष 2017 के लिए सीखने योग्य सर्वाधिक उपयुक्त नौ भाषाओं में हिंदी को स्थान दिया है।

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के दावे को मजबूत करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 1975 से 'विश्व हिंदी सम्मेलन' मनाने की शुरूआत की थी। इस परंपरा को जारी रखते हुए भारत सरकार द्वारा विदेशों में भी विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाने में अब तक आयोजित बारह विश्व हिंदी सम्मेलनों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन से पूरी दुनिया को हिंदी की बढ़ती ताकत का अहसास होता है। प्रारंभ में इसका आयोजन हर चौथे वर्ष होता था, लेकिन अब इसका आयोजन तीन वर्ष के अंतराल में होता है। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की पहल पर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के सहयोग से पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10 से 14 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया था। बारहवां विश्व हिंदी सम्मेलन 15 से 17 फरवरी 2023 को फिजी में आयोजित किया गया। इनमें से अधिकांश सम्मेलन मॉरीशस, त्रिनिदाद, लंदन, सूरीनाम, न्यूयॉर्क आदि स्थलों पर आयोजित हुए। अब तक तीन विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन मॉरीशस में किया जा चुका है। विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्देश्य विश्व में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए जागरूकता और हिंदी के प्रति अनुराग पैदा करना है।

संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी की मान्यता के लिए भारत सरकार द्वारा संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग (डी.जी.सी.) के सहयोग से 2018 में 'हिंदी@यूएन' परियोजना की शुरूआत की गई। इस परियोजना के तहत दो साल के लिए संयुक्त राष्ट्र की कार्यप्रणाली में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र और भारत सरकार के बीच एक स्वैच्छिक वित्तीय योगदान समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। यह किसी भी देश के

साथ संयुक्त राष्ट्र द्वारा हस्ताक्षरित पहला समझौता था। इस समझौते की अवधि को 2019 में बढ़ाकर मार्च 2025 तक कर दिया गया। जहां तक विश्वभाषा के रूप में हिंदी की बात है तो 10 जून 2022 को संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने आधिकारिक भाषाओं के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, उर्दू, पुर्तगाली, स्वाहिली और फारसी को संयुक्त राष्ट्र की सहकारी कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकार किया है। यह भी एक तथ्य है कि हिंदी, बांग्ला और उर्दू बोलने वालों की कुल संख्या मंदारिन बोलने वालों से अधिक है। इन भारतीय भाषाओं को स्वीकार करने से संयुक्त राष्ट्र की पहुंच एक अरब आबादी तक सीधे बन गई है। यह संयुक्त राष्ट्र के कामकाज के तरीके में बड़े परिवर्तन का संकेत है। संयुक्त राष्ट्र की वेबसाइट और उसके इंटरनेट मीडिया खातों के माध्यम से हिंदी में संयुक्त राष्ट्र के समाचार पहले से ही प्रसारित किए जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र रेडियो ने भी अपना प्रसारण हिंदी में करना आरंभ किया है। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र ने साप्ताहिक हिंदी समाचार बुलेटिन आरंभ किया है।

फरवरी 2019 में अबू धाबी ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अरबी और अंग्रेजी के बाद हिंदी को अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल कर लिया है। यह विश्व में हिंदी को मिल रहे सम्मान की एक और मिसाल है। हिंदी संस्कृति से प्रभावित छोटा सा देश फिजी भारत के बाहर एकमात्र देश है जहां हिंदी की लोकप्रियता के कारण ही उसे वहां की तीन आधिकारिक भाषाओं में सम्मिलित किया गया है। फिजी की संसद में भी हिंदी का प्रयोग होता है। मॉरीशस में भारतीय संस्कृति की अक्षुण्णता और सजीवता का कारण वहां विद्यमान हिंदी भाषा है। हिंदी के प्रयोग को लेकर मॉरीशस को छोटा भारत भी कहा जाता है। कवि रामधारी सिंह दिनकर ने मॉरीशस को 'हिंद महासागर का मोती कहा है।' न्यूजीलैंड में चौथी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। इंग्लैंड में अंग्रेजी के बाद हिंदी का स्थान है। अमेरिका की सरकार ने अपने विदेश मंत्रालय की वेबसाइट का हिंदी अनुवाद प्रारंभ किया है। अमेरिका के चिकित्सकों के बीच अंग्रेजी और स्पेनिश के बाद तीसरी सबसे लोकप्रिय भाषा हिंदी है। अमेरिका में कुछ दुकानों के साईन बोर्ड अब हिंदी में भी दिखने लगे हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश का यह कथन है कि "भारत को समझना है तो हिंदी भाषा को समझना होगा।" नेपाल, मॉरीशस, त्रिनिदाद, टोबैगो, सूरीनाम, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप, खाड़ी देश और दक्षेस के सदस्य देशों में भी हिंदी प्रमुखता से बोली जाती है। फिजी, सूरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, जैसे देशों की सरकारें तो हिंदी भाषियों द्वारा चलाई जा रही हैं। हिंदी भाषा को सिखाने के उद्देश्य से दुनिया के कई देश हिंदी साहित्य के जाने–माने विशेषज्ञों की मदद भी ले रहे हैं। यह हिंदी भाषा के लिए अत्यंत गर्व की बात है।

हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में हमारे देश के नेताओं, महापुरुषों, विद्वानों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वामी विवेकानंद ने 11 सितंबर 1893 में शिकागो में 'विश्व धर्म सम्मेलन' में अपना व्याख्यान हिंदी में दिया। भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1977 में

बतौर विदेश मंत्री संयुक्त राष्ट्र महासभा के 32वें अधिवेशन को पहली बार हिंदी में संबोधित कर हमें अपनी भाषा के प्रति गौरवान्वित महसूस करवाया। 2002 में उन्होंने पुनः बतौर प्रधानमंत्री संयुक्त राष्ट्र महासभा को हिंदी में संबोधित किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी वाजपेयी जी द्वारा शुरू की गई मुहिम को जारी रखते हुए 2021 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 76वें अधिवेशन को हिंदी में संबोधित किया। प्रधानमंत्री मोदी जी वैश्विक स्तर पर भारत की सभ्यता, संस्कृति, इतिहास भाव तथा संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए हिंदी में ही प्रवासी भारतीयों से संवाद करते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह की पहल पर 10 जनवरी 2006 से 'विश्व हिंदी दिवस' मनाने की घोषणा की गई। 10 जनवरी का दिन इसलिए निश्चित किया गया क्योंकि प्रथम बार इसी दिन 'विश्व हिंदी सम्मेलन' आयोजित किया गया था। 21 फरवरी 1999 को यूनेस्को ने प्रतिवर्ष 'मातृभाषा दिवस' मनाए जाने की घोषणा की थी ताकि सांस्कृतिक विविधता व मातृभाषा के संरक्षण को बढ़ावा दिया जा सके। आजकल भारत सरकार के विदेशी दौरे में जाने वाले प्रतिनिधि मंडलों में भी हिंदी में बातचीत की प्रवृत्ति बढ़ी है।

यह स्वीकार करना होगा कि हिंदी को दुनिया के कोने–कोने में लेकर जाने में हिंदी फिल्मों का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। हिंदी फिल्मों ने भी अपने संवादों एवं गीतों से पूरी दुनिया में धूम मचा रखी है। आज सारी दुनिया में हिंदी फिल्मों को चाहने वालों की बड़ी तादाद की वजह से ही हिंदी फिल्में देश के बाहर देश से अधिक कमाई कर रही हैं। हॉलीवुड की फिल्में भी हिंदी में ध्वनित हो रही हैं। विश्व में सर्वाधिक चलचित्रों का निर्माण भी हिंदी भाषा में ही होता है। भारतीय धारावाहिक 'कौन बनेगा करोड़पति' विदेशों में भी अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। पौराणिक हिंदी धारावाहिक जैसे – रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण पूरे विश्व में अत्यंत लोकप्रिय हो रहे हैं। यूएई के 'हम एफ–एम' सहित विश्व के अनेक देश हिंदी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं जिनमें बीबीसी,



जर्मनी की डायचे वेले, जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिंदी सेवा विशेष रूप से सराहनीय है।

हिंदी ने अपनी सहजता, सरलता, पहुंच, और विस्तार से वेब मीडिया के क्षेत्र में भी अपनी खास जगह बना ली है। वेब, विज्ञान, विज्ञापन, संगीत, धारावाहिक, सिनेमा और बाजार क्षेत्र में हिंदी की मांग जिस तेजी से बढ़ रही है वैसी किसी और भाषा की नहीं। हिंदी भाषा के बोले जाने में लगभग 94 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही है जो कि हिंदी भाषियों के लिए एक अच्छी खबर है। हिंदी में शब्द संसाधन का कार्य करने के लिए आज बाजार में जिस्ट कार्ड, जिस्ट शैल, सुलिपि, आकृति, ए.पी.एस., शब्द रतन, लीप ऑफिस, अक्षर फॉर विंडोज, सुविंडोज, प्रकाशक तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक साफ्टवेयर उपलब्ध हैं। हिंदी यूनिकोड के अस्तित्व में आने के बाद कंप्यूटर, लैपटॉप यहां तक की स्मार्ट फोन में भी हिंदी में काम करना आसान हो गया है। यूनिकोड एक अंतर्राष्ट्रीय मानक कोड है जिसमें हिंदी सहित विश्व की 200 भाषाओं के लिए कोड निर्धारित किए गए हैं। सोशल मीडिया में हिंदी फांट्स और ऐप्स की उपस्थिति ने भी हिंदी को पंख लगा दिए हैं। आज याहू, गूगल, फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग, वहाट्सएप या अन्य कोई भी नेटवर्किंग साइट सभी में हिंदी भाषा का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। गूगल जैसे सर्च इंजन हिंदी को प्राथमिक भारतीय भाषा के रूप में पहचानते हैं। हिंदी भाषा में चैट ऐप भी बहुत सक्रिय है। आज प्रतिदिन लाखों वीडियो हिंदी भाषा में अपलोड किए जाते हैं और उनके करोड़ों सब्स्क्राइबर्स हैं। आज हिंदी में ब्लॉग लिखना सबसे लोकप्रिय विधा बन गया है। कई प्रसिद्ध हस्तियां ब्लॉग पर सक्रिय हैं। हिंदी का साम्राज्य आजकल अनेक सूचना पोर्टलों एवं साइटों के माध्यम से विस्तार पा रहा है। हिंदी अखबारों की वेबसाइट्स ने करोड़ों नए हिंदी पाठकों को अपने साथ जोड़कर हिंदी को और अधिक समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज विश्वभर में हिंदी के विस्तार से संबंधित अनूभूति, अनुरोध, अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, गीत पहल, भारत दर्शन, शब्दांकन, सृजनगाथा, स्वर्गविभा, पूर्वाभास, साहित्यकुंज, समयांतर, हिंदी चेतना, गर्भनाल, हिंदी समय, कविता कोश, गद्य कोश आदि जैसी सैकड़ों ऐसी वेबसाइट्स हैं जिन पर हिंदी साहित्य विभिन्न विधाओं में प्रचुर मात्रा में लिखा जा रहा है और साथ ही इन वेबसाइट्स पर प्रकाशित साहित्य को विश्वभर में पढ़ा जा रहा है। आज हिंदी अपने तमाम स्पर्धियों को पीछे छोड़ते हुए लोकप्रियता का आसमान छू रही है।

भारतीय संस्कारों को पुष्पित–पल्लवित करने के लिए आवश्यक है कि हिंदी का प्रयोग हर स्तर पर बढ़े। हिंदी को भारत की शान बनाने और उच्च कोटि का दर्जा देने के लिए आमजन और सरकार को साथ मिलकर प्रयास करने होंगे। आमजन को भी अपनी मातृभाषा के साथ हिंदी का भी अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए। हिंदी का प्रचार–प्रसार करना हर भारतीय का परम कर्तव्य है। सरकार को चाहिए कि कार्यालयीन कार्य में भी हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए सभी को प्रतिबद्ध करें।

राजभाषा हिंदी में संग्रहीत सुशासन का पाठ



अभय राम सिंह
सहायक लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)
वी–156, महालेखाकार का कार्यालय (ले. व ह.–प्रथम)
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

परम पूज्य ब्रह्मा जी ने मानव कल्याण हेतु चार वेदों – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की रचना की। सुशासन का परम उद्देश्य मानव कल्याण ही है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस के प्रारंभ में ही उकेरा है –

कीरति भनिति भूति भलि सोइ,
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।

यानी कीर्ति, कविता और संपत्ति वही उत्तम है जो गंगा जी की भांति सर्वहितकारी हो। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है –

पढ़ो लिखो कोई लाख विधि भाषा बहुत प्रकार,
पै जब कछु सोचिहौ, निज भाषा अनुसार।

राम कथा स्वयं में भारतीय संस्कृति, उदात्त चिन्तन एवं सुशासन का प्रतीक है। भारतीय चिन्तन में कहा गया है – 'सर्वशब्देन भासते' यानी हमें सब कुछ शब्दसे ही दिखता है। रामचरित मानस में स्पष्ट कहा गया है –

श्रवन समीप भए सित केसा,
मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा।

नृप जुबराजु राम कहुँ देहू,
जीवन जनम लाहु किन लेहू ।।

अर्थात (यह देखा कि राजा दशरथ के) कानों के बाल सफेद हो गए हैं; मानो बुढ़ापा ऐसा उपदेश कह रहा है कि हे राजन् श्री रामचन्द्र जी को युवराज पद देकर अपने जीवन और जन्म का लाभ क्यों नहीं लेते? राजा दशरथ ने राम का राज्याभिषेक करने का निर्णय तो लिया परन्तु होनी को कौन टाल सकता है। राम को राज्याभिषेक के स्थान पर चौदह वर्ष का वनवास जाना पड़ा। राम का मानवीय रूप भारतीय जनता के लिए महानायकत्व है। उनका जीवन एक गहन सांस्कृतिक पाठ है। गिलहरी से सहायता प्राप्त कर, भिलनी से बेर खाकर, हनुमान को साथी बनाकर उन्होंने एक अलग आयाम प्रदान किया। राम कथा की भाषा जनता के सरोकारों से आती है, इसलिए जनता को छूती है। उनके प्रारंभिक जीवन में सत्ता के त्याग की अनूठी धारणा सामने आकर लेती है जो सुशासन की निःस्वार्थ तत्परता को इंगित करती है। तुलसीदास ने ठीक ही उकेरा है –

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना,
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।

निश्चय ही सुमति सुशासन की आधारशिला है।

श्रेष्ठ कवि आचार्य दण्डी के अनुसार यदि भाषा का प्रकाश न हो, तो हम सभी अंधकार में भटकते रहेंगे। भाषा बौद्धिक और भावनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी संस्कारों, ज्ञान और विश्व–बोध की संवाहक है। वह वर्तमान और विगत संस्कारों को जोड़ने वाला अदृश्य तंतु है। भारत में 19500 से अधिक भाषाएँ और बोलियाँ हैं। यद्यपि भारतीय संविधान में प्रदत्त 22 अनुसूचित भाषाओं में ही देश की 97% जनता कोई एक भाषा बोलती है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं का जन्म हमारी प्राचीन शास्त्रीय भाषाओं से ही हुआ है जिनकी एक समृद्ध साहित्यिक परम्परा रही है। संस्कृत हमारी प्राचीनतम इण्डो–यूरोपियन भाषा है जिसका इतिहास ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी से मिलता है।

प्रसिद्ध भाषाविद् विलियम जोन्स ने 1786 में ही कहा था कि संस्कृत की भाषायी संरचना अद्वितीय है जो ग्रीक भाषा से उत्तम, लैटिन से अधिक समृद्ध और दोनों से अधिक शिष्ट और परिष्कृत है तथा व्याकरण और क्रिया मूल की दृष्टि से इन दोनों से प्रगाढ़ है। एम्सटर्डम विश्वविद्यालय के रेन्स बांड के अनुसार भाषा विज्ञान का इतिहास प्लेटो और अरस्तू से न होकर भारतीय व्याकरण–विद् पाणिनी से प्रारंभ होता है। ईसा पूर्व 500 वर्ष प्राचीन तमिल, 400 वर्ष पूर्व प्राचीन तेलुगू, 450 वर्ष पूर्व प्राचीन कन्नड़, 1198 ई. पूर्व प्राचीन मलयालम तथा 800 ई. पूर्व प्राचीन उड़िया भाषा को भी शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। अध्ययनों के अनुसार आज लगभग 600 भाषाएँ और बोलियाँ विलुप्त होने की कगार पर हैं।

भाषा सहित हमारी साहित्यिक धरोहर को संरक्षित रखना हमारा दायित्व है। भाषा समावेशी विकास की कारक है तथा सुशासन का एक अभिन्न अंग है जिसका निरन्तर प्रोत्साहन सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है।

ऋग्वेद में इन्द्र ने वरुण से कहा ''वृहत् राष्ट्रद्यौइन्वन्ति'' यानी यह विशाल द्विलोक रूपी राष्ट्र सबको प्रसन्नता देता है। यजुर्वेद मन को शिव संकल्प के लिए प्रेरित करता है – जन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। चाणक्य का एक सूत्र कहता है – सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलं अर्थः, अर्थस्य मूलं राज्यं, राजस्य मूलं इन्द्रिय जयः''। इस सूत्र का अर्थ कुछ इस प्रकार है – लोगों की भलाई एक सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने पर निर्भर है (यहाँ धर्म का अर्थ मजहब नहीं), सामाजिक व्यवस्था उत्पादक आर्थिक गतिविधियों और पूंजी पर निर्भर है, आर्थिक गतिविधियां एक मजबूत राष्ट्र पर निर्भर है और मजबूत राष्ट्र ही मजबूत संस्था है। यहां अर्थ (पूंजी) सूत्र का एक छोटा हिस्सा भर है जो राष्ट्र की समृद्धि के लिए बेशक जरूरी है परन्तु स्वयं में यह पर्याप्त नहीं है। अर्थ के संबंध में चाणक्य ने पुनः कहा है –

इदमेव हि पाणित्यं चातुर्यमिदमेव हि।
इदमेव हि सुबुद्धित्वं आयादल्परो व्ययः।।

चाणक्य का उक्त सूत्र हमें आय के अनुरूप व्यय को सीमित रखने का पाण्डित्यपूर्ण एवं बौद्धिक सलाह देती है। सुशासन में समाज में आर्थिक वितरण की समानता सुनिश्चित करने का उद्देश्य निहित है। इस तथ्य को संत कबीर ने अपनी वाणी में निम्नवत् उकेरा है –

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

संत रविदास ने भी अपनी चाहत का इजहार निम्नवत् किया है –

ऐसा चाहूँ राज मैं, जहाँ मिलै सबको अन्न।
छोटे बड़े सब सम बसें, रैदास रहें प्रसन्न।।

सुशासन को समृद्ध करने के लिए एक तरफ शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण आवश्यक है तो दूसरी तरफ शासक को तानाशाही प्रवृत्ति से विरक्त रहने की अपेक्षा की जाती है। गोस्वामी तुलसीदास ने 'भय बिनु होत न प्रीति' कहते हुए शक्तिशाली राष्ट्र की कल्पना की है तो तानाशाही प्रवृति के परिणाम के लिए निम्नवत सचेत किया है –

धरा को प्रमान यही तुलसी
जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना।

यानी जो शासक अत्याचार करेगा उसका विनष्ट होना सुनिश्चित है। तभी तो रावण प्रतापी राजा होते हुए भी अपने पूरे कुल का विनाश देखते हुए स्वयं भी विनष्ट हो गया। निश्चय ही हमारी शास्त्रीय एवं वर्तमान भाषाओं में निर्दिष्ट सूत्रों के अनुपालन से हम एक सुशासित शासन–तंत्र की चिरस्थायी स्थापना कर सकते हैं। जीवन की यात्रा में हमसे भूलें भी होती हैं, हम कभी थकते, गिरते, निराश भी होते हैं, पर मरुस्थल की बारिश से तरल आशाएँ हममें स्फूर्ति भी जगाती हैं। हरिवंश राय बच्चन लिखते हैं –

मैं कितना भी भूलूँ, भटकू या भरमाऊँ।
है एक कहीं मंजिल जो मुझे बुलाती है।
कितने ही मेरे पाँव पड़ें ऊँचे–नीचे।
प्रतिपल वह मेरे पास चली ही आती है।

हमारे ऋषियों की प्रार्थना 'सत्यमेव जयते' को साकार करते हुए हमें असत्य से सत्य की ओर तथा अंधकार से प्रकाश की ओर चलने की निरन्तरता बनाए रखते हुए एक सुदृढ़ सुशासन–तंत्र की व्यवस्था करनी ही होगी जिससे मानव कल्याण की भावना को चरितार्थ किया जा सके। संस्कृत का एक श्लोक है –

स्वस्थिर मानुषेभ्य, उर्धवम् जिकातु भेषजम्,
सम्नो अस्ति द्विपदे, सम चतुष्पदे
ओम शान्तिः शान्तिः शान्तिः

जिसके माध्यम उस नैसर्गिक सामाजिक परिवेश की परिकल्पना की गई है जिसमें सभी मनुष्य समृद्ध हों, सभी वनस्पतियों और सभी जीव–जंतुओं में जो सभी प्राणियों के जीवन का आधार है, फूलें, फलें, सभी मनुष्यों में सद्भाव हो, सभी पशुओं में परस्पर प्रेम हो तथा हर तरफ शांति, शांति व शांति हो। इसमें मानव के साथ ही साथ प्रकृति, इसमें रह रहे जीव–जंतुओं में सदा सद्भाव, प्रेम की कल्पना करते हुए लोकतंत्र का एक सुस्पष्ट स्थायी आधार प्रदान किया गया है। लोकतंत्र का यह आधार तभी साकार होगा जब मंजिल पर पहुँचने के लिए सभी लोगों का परस्पर योगदान हो। शायद नज़ीर बनारसी ने ठीक ही लिखा है –

सर तुम्हारे दर पे रखना फर्ज़ था, सर रख दिया।
आबरू रखना, न रखना ए तुम्हारा काम है।।
जिंदगी का बोझ उठा लेना हमारा काम था।
हमको अब मंजिल पे पहुंचाना तुम्हारा काम है।।

शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता



विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी (से.नि.)
स्वास्तिक प्लाजा, पो.ओ. बंजारावाला
देहरादून–248121

हमारे देश में मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए तथा भाषाई बाधाओं को दूर करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। विशेषकर, विभिन्न भाषा–भाषी युवा वर्ग की दिक्कतों को दृष्टिगत रखते हुए, जोकि उन्हें उच्च शिक्षा ग्रहण करने, प्रतियोगी परीक्षाओं को पास करने तथा अच्छा रोजगार पाने के मार्ग में आड़े आती हैं, को दूर करने के लिए भाषाई बाधाओं का निराकरण किया जाना आवश्यक हो जाता है। नई शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) में भी मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अवसर देने पर विचार किया गया है। देखा जाए तो यह आवश्यक भी है क्योंकि मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाएं अभिव्यक्ति का स्वाभाविक माध्यम होती है। यदि हम बेहतर परिणाम की अपेक्षा करते हैं तो भी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान किया जाना आवश्यक हो जाता है। इसीलिए आज प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक मातृभाषा में या क्षेत्रीय भाषा में दिए जाने की दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है। बताया जाता है कि इसके अंतर्गत नर्सिंग, प्रबंधन, तकनीकी शिक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षाओं को भी शामिल करने पर विचार किया गया है। उच्च शिक्षा से जुड़े ऐसे सभी कोर्स की पहचान करने का कार्य भी किया जा रहा है जिन्हें हिंदी सहित दूसरी भाषा में, अर्थात् पसंद की भाषा में पढ़ाया जा सकता है। वास्तव में यदि देखा जाए तो यह बहुत ही उत्साहजनक है तथा इस पर शीघ्र कार्य करके भाषाई बंदिशों को दूर किया जाना चाहिए।

प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को हम अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाते हैं तथा उक्त दिन मनाने के पश्चात् अपनी मातृभाषा को भूल जाते हैं। वास्तव में यदि देखा जाए तो इस दिवस को प्रत्येक वर्ष मनाने का उद्देश्य ही पूरे विश्व में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता एवं बहुभाषिता को बढ़ावा देना है। सभी भाषाओं का सम्मान किए बगैर हम बहुभाषिता को बढ़ावा नहीं दे सकते हैं। हमारी मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा के साथ सभी भाषाओं को आगे बढ़ने का उचित अवसर प्राप्त होगा तभी तो हमारी राजभाषा हिंदी, जिसको जनमानस की भाषा बताते हुए इसे राष्ट्रभाषा बनाने का सुझाव राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दिया था, का मान भी विश्व में बढ़ेगा। इसमें कोई भी संदेह

नहीं कि भाषा से ही राष्ट्रीय एकता की भावना प्रबल होती है तथा देश की प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त होता है। अपने भावों को संप्रेषित करने के लिए मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा से बेहतर भाषा और कोई नहीं हो सकती।

आज हमारे समाज में अंग्रेजी स्कूलों में अपने बच्चों को शिक्षा ग्रहण कराने के लिए लोगों में होड़ सी मची है। दूधमुंहे बच्चे के साथ भी लोग अंग्रेजी में बोलना शान की बात समझते हैं। कॉन्वेंट स्कूली शिक्षा ने हमारे देश में मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं को बहुत नुकसान पहुंचाया है। अंग्रेजी का ज्ञान होना अच्छी बात है, देखा जाए तो किसी भी भाषा का ज्ञान होना बुरा नहीं है। लेकिन यह दुखद है कि इन कथित अंग्रेजी माध्यम के कई स्कूलों के बारे में ऐसा सुनने में आता है कि कुछ संस्थानों में छात्रों को अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी बोलने की स्थिति में दंडित तक किया जाता है तथा ऐसे छात्रों को एक अपराधीकी दृष्टि से देखा जाता है। हिंदुस्तान जैसे देश में किसी भारतीय भाषा को, जोकि जन–जन की भाषा है, आमजन की भाषा है, बोलने पर दंडित भी किया जा सकता है, इसकी कल्पना करना भी कठिन है। ऐसी स्थिति में शिक्षा के ये केंद्र छात्रों को मातृभाषा में बोलने के लिए कितना प्रेरित करेंगे, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। भाषा की दिक्कत के कारण ही कम पढ़े–लिखे अभिभावकों को अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाने पर बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। टीचर्स–पेरेंट्स मीटिंग में भी ऐसे अभिभावकों को हीन दृष्टि से देखा जाता है। आज जहां एक ओर वैश्विक स्तर पर हिंदी की पहचान बढ़ी है वहीं दूसरी ओर हमारे देश में ही हिंदी के प्रति ऐसी भावना देखने एवं सुनने को मिलती है जिसको हतोत्साहित करने की आवश्यकता है। हिंदी को यदि हम केवल एक भाषा के तौर पर देखते हैं तो यह सरासर गलत होगा। वास्तव में यदि देखा जाए तो हिंदी तो भारत की पहचान है, भारत की शान है। इसके अभाव में हम अपने देश की प्रगति के बारे में सोच भी नहीं सकते। विडम्बना तो यह है कि आज का युवा वर्ग भी अंग्रेजी के प्रति अधिक आकर्षित हो रहा है। युवा वर्ग को यदि कुछ लिखना–पढ़ना भी होता है तो वे अंग्रेजी लिपि में ही हिंदी को पढ़ते–लिखते हैं। तमाम मोबाइल मैसेज एवं व्हाट्स एप पर की जाने वाली चैट एवं टिप्पणियों को इस रूप में देखा जा सकता है। हालांकि इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि हिंदी सहित अन्य सभी भारतीय भाषाओं को समृद्ध बनाने में इंटरनेट एवं मोबाइल फोन का बड़ा योगदान है।

हिंदी एवं आम बोलचाल के शब्दों को बढ़ावा देने एवं आमजन के मार्ग में आने वाली भाषाई दिक्कतों को दूर करने के लिए शासन एवं शासन के विभिन्न विभाग भी प्रयासरत हैं। हाल ही में एक सुखद समाचार पढ़ने को मिला कि दिल्ली पुलिस भी अब हिंदी एवं आम बोलचाल की भाषा को तरजीह दे रही है। उक्त समाचार के अनुसार विभाग ने फैसला किया है कि वे अब एफआईआर आरोप–पत्र के साथ दूसरे कार्यों में आसानी से समझने योग्य हिंदी एवं अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करेंगे तथा कठिन उर्दू एवं फारसी शब्दों को हटाकर

आसान हिंदी या अंग्रेजी शब्दों या शिकायतकर्ता के शब्दों का प्रयोग किया जायेगा। उल्लेखनीय है कि दिल्ली पुलिस ही नहीं हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषा–भाषी तमाम राज्यों के पुलिस विभागों में ऐसे शब्दों का प्रयोग बहुतायत में किया जाता है जिन्हें संबंधित विभाग में काम करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को छोड़कर आमजन के लिए समझना कठिन है। इस समस्या पर ध्यान दिया जाना बहुत अच्छी बात है। उर्दू एवं फारसी के ऐसे ही शब्द बहुतायत में हिंदी भाषी राज्यों में अदालतों के साथ ही साथ राज्य सरकार के अन्य कार्यालयों विशेषकर कोषागार, राजस्व विभाग, सिंचाई विभाग, स्थानीय निकायों एवं जिला पंचायतों में प्रयोग में लाये जाते हैं। उक्त कठिन शब्दों के स्थान पर भी एक विशेष अभियान द्वारा सरल हिंदी एवं आम बोलचाल के शब्दों को अपनाने एवं तरजीह देने की आवश्यकता है। संबंधित विभागों द्वारा आधिकारिक पत्र–व्यवहार में भी शुद्ध हिंदी का प्रयोग करने के स्थान पर, आवश्यकतानुसार उर्दू, अंग्रेजी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के लोकप्रिय एवं प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल दिया जाना चाहिए। क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहन देने के लिए एवं विभिन्न भाषाभाषी युवाओं की भाषा की दिक्कतों को दूर करने के लिए ही हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार आगामी वर्ष से अर्द्धसैनिक बलों में कांस्टेबल की भर्ती परीक्षा हिंदी एवं अंग्रेजी के अलावा असमिया, बंगाली, गुजराती, मराठी, मलयालम, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, ओड़िया, उर्दू, पंजाबी, मणिपुरी और कोंकण सहित 13 भारतीय भाषाओं में आयोजित की जायेगी। निश्चित रूप से हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के उत्थान के लिए उठाया गया यह एक क्रांतिकारी कदम है और इससे हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का विकास होने के साथ ही साथ उनका प्रचार–प्रसार भी होगा।

मातृभाषा एवं स्थानीय भाषाओं को शिक्षा के माध्यम बनाना कितना आवश्यक है इसका सहज अनुमान उच्च शिक्षा में गिरती सकल नामांकन दर (जीईआर) के हाल ही



में प्रकाशित कुछ आंकड़ों से लगाया जा सकता है। उक्त रिपोर्ट के अनुसार प्राथमिक स्तर पर जीईआर 98 प्रतिशत है जोकि 12वीं कक्षा के स्तर तक 57 प्रतिशत रह जाता है। उच्च शिक्षा में वर्तमान जीईआर मात्र 27 प्रतिशत है। यह रिपोर्ट काफी चौंकाने वाली है जिसका उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस संबंध में स्थिति की गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा पहल की गई है। आयोग उच्च शिक्षा तक सभी की पहुंच बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। यू.जी.सी. की पहल के परिणामस्वरूप मातृभाषा एवं स्थानीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने पर कार्य किया जा रहा है। इस संबंध में जिस भी स्तर पर जो भी प्रयास किए जा रहे हैं उनकी सराहना की जानी चाहिए। उल्लेखनीय है कि भाषाई दिक्कतों के चलते ही काफी संख्या में छात्र समय के साथ शिक्षा से दूरी बना लेते हैं। इस वास्तविकता को नकारा नहीं जा सकता कि आज भी हमारे देश में 80 प्रतिशत से अधिक आबादी ग्रामीण या छोटे कस्बों में निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले युवा वर्ग के सामने भाषाई दिक्कतों के कारण उच्च शिक्षा ग्रहण करने में काफी परेशानियां आती हैं। मातृभाषा एवं स्थानीय भाषाओं को, जोकि भारतीय भाषाएं हैं, शिक्षा का माध्यम बनाने से न केवल भाषाई दिक्कत दूर होगी अपितु इससे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सकल नामांकन दर, जोकि वर्तमान में काफी कम है, को बढ़ाने में भी बहुत मदद मिलेगी।

आवश्यकता इस बात की है कि हम अंग्रेजी का मोह त्यागें। इसके लिए हमारे देश के नौकरशाहों को भी आगे आना होगा। क्योंकि हमारे देश में नौकरशाहों का एक विशेष भाषा से प्रेम जग जाहिर है। आज हिंदी विश्व के अनेक देशों में अपना स्थान बनाती जा रही है। विदेशी लोग भी भारत में आकर हिंदी में वार्ता करना या भाषण देना गौरव की बात मानते हैं। हाल ही में सुनने में आया था कि दक्षिण कोरिया के विदेश मंत्री जब भारत के दौरे पर आए तो उन्होंने द्विपक्षीय वार्ता में हिंदी में भाषण देकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया था। हमारे देश के नौकरशाहों के लिए निश्चित ही यह प्रेरणादायक है। फिजी जैसे देश ने भी हिंदी की व्यापकता को स्वीकार किया है। फिजी में सरकार ने अंग्रेजी के साथ हिंदी को भी संसद में बोलचाल के माध्यम के रूप में अंगीकार करके एक आधिकारिक भाषा का दर्जा प्रदान किया है।

अतः मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं को सम्मान प्रदान करते हुए शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए। इसके लिए युद्ध स्तर पर मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं की अध्ययन सामग्री का अनुवाद कार्य एवं स्थानीय भाषाओं में अनुवाद कार्य करने के लिए शिक्षकों एवं विशेषज्ञों का चयन संबंधित संस्थानों में किया जाना चाहिए। वह दिन अब दूर नहीं जब शिक्षा को मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं में प्रदान करने का सपना साकार होगा। अब शिक्षा को भाषाई बंधन से मुक्त करने का सही समय आ गया है और इसके लिए हमें निरंतर कार्य करने की आवश्यकता है तभी हम अपेक्षित परिणाम की आशा कर सकते हैं।

भूस्खलन – एक प्राकृतिक आपदा



श्री इम्तियाज अहमद
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

भूस्खलन जैसी प्राकृतिक आपदा अब प्राकृतिक कम, मानव निर्मित आपदा अधिक प्रतीत होती है। वर्तमान में अंधाधुंध भौतिक विकास होने के कारण हम पारिस्थितिकी तंत्र की हानि से होने वाले परिणाम को भूल जाते हैं। हाल ही में, उत्तराखंड एवं हिमाचल प्रदेश में आए भू–स्खलन के पीछे मुख्य कारण ये सामने आ रहे हैं कि हम इंसानों ने पहाड़ों एवं पहाड़ों की ढलानों पर विभिन्न प्रकार के विकास कार्यों जैसे पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जारी नियमों को नजरअंदाज करके घर बनाना, पाइपलाइनों का निर्माण करना, पर्यटन आकर्षण केन्द्र होने के कारण बहुमंजिला होटल बनाना, आदि कर रहे हैं। इन सभी कार्यों को करने के लिए हम पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जारी किए गए मानदंडों की उपेक्षा कर जाते हैं। कुछ दशकों तक हम इन विकास कार्यों पर इतराते हैं, पर जब हाल की उत्तराखण्ड त्रासदी जैसी घटनाएं होती हैं तो कुछ दिनों तक रोना–धोना मचाते हैं, बड़ी–बड़ी बातें करते हैं, उसके बाद फिर सब कुछ पहले जैसा चलने लगता है।

उचित योजना और आपातकालीन प्रबंधन का अभाव मानव दुर्बलताओं को और बढ़ा देता है, जिसका वजह से आर्थिक, मानवीय और पर्यावरणीय नुकसान पहुँचता है। जनसंख्या की आपदा को बढ़ावा देने या विरोध करने की क्षमता पर अर्थात उनके लचीलेपन पर ये समझ केंद्रित है। इस विचार में "जब जोखिम और दुर्बलता का मिलन होता है तब दुर्घटनाएं घटती हैं।" जिन इलाकों में दुर्बलताएं निहित न हों, वहां पर एक भी प्राकृतिक आपदा घटित नहीं हो सकती है।

उत्तराखंड एवं हिमाचल में भूस्खलन के पीछे क्या कारण हैं?

विशेषज्ञों ने कहा है कि हिमाचल में भूस्खलन के पीछे कई मानव निर्मित कारण हैं, जैसे पारिस्थितिक रूप से नाजुक हिमालय में अवैज्ञानिक निर्माण, घटते वन क्षेत्र, और पानी के प्रवाह को अवरुद्ध करने वाली धाराओं के पास संरचनाएं।

भूवैज्ञानिक भी समय–समय पर हमें चेतावनी देते रहते हैं कि सड़कों के निर्माण और चौड़ीकरण, सुरंगों और पनबिजली परियोजनाओं हेतु विस्फोट के लिए

पहाड़ी ढलानों की बड़े पैमाने पर कटाई भूस्खलन में वृद्धि के मुख्य कारण हैं। हिमाचल में केवल 5–10 फीट की रिटेनिंग दीवारों के साथ सड़क निर्माण के लिए पहाड़ों की ऊर्ध्वाधर कटाई देखी गई है।

विशेषज्ञों ने यह भी कहा है कि तलहटी में चट्टानों के कटने और उचित जल निकासी व्यवस्था की कमी के कारण हिमाचल में ढलानें भूस्खलन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो गई हैं और उच्च तीव्रता वाली वर्षा राज्य के लिए हालात बदतर बना रही है।

लगातार हो रही तबाही के बाद राज्य सरकारों ने भी पहाड़ों में इमारतों और जल निकासी प्रणालियों में संरचनात्मक खामियों को स्वीकार किया है और माना है कि स्थिति पर काबू पाने के बाद राज्य सरकार इन मुद्दों पर विचार करेगी।

जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी पर तापमान बढ़ रहा है, जिससे बारिश की तीव्रता बढ़ गई है और भारी बारिश के साथ उच्च तापमान के कारण तलहटी में नीचे की ओर कटाव होने वाले स्थानों पर परत ढीली होने के कारण भूस्खलन हो रहा है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, इस वर्ष हिमाचल में जून से सितंबर तक पूरे मानसून सीजन के दौरान औसतन लगभग 730 मि.मी. बारिश हुई है। जैसा कि नीति निर्माता और विशेषज्ञ हिमाचल प्रदेश में चल रही तबाही के कारणों की तलाश कर रहे हैं, यह सामने आया है कि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) की एक रिपोर्ट ने पहाड़ी राज्यों में खराब योजना, जनसंख्या दबाव और पहाड़ी में मानदंडों के प्रवर्तन की कमी को चिन्हित किया है। एनडीएमए की रिपोर्ट, जिसका शीर्षक राष्ट्रीय भूस्खलन जोखिम प्रबंधन रणनीति है, ने शिमला शहर को केन्द्र में रखते हुए कहा कि शहर लगभग 25,000 की आबादी के लिए बनाया गया था, लेकिन अब इसमें लगभग 3,00,000 लोग रहते हैं।

पहाड़ी इलाकों में खराब बुनियादी ढांचे और नागरिक सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि "हिमालय के शहर बढ़ रहे हैं और कचरे के पहाड़ों में तब्दील होने लगे हैं।"

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि पहाड़ियों के लिए कोई विशेष योजना नहीं थी क्योंकि योजनाओं को विभिन्न दिल्ली मास्टर प्लान (डीएमपी) की तर्ज पर बनाया गया था, जो पर्यावरण और पारिस्थितिक चिंताओं को ध्यान में रखने के लिए वर्षों से आलोचना के घेरे में रहा है। अब कई वर्षों से, विशेषज्ञ कहते रहे हैं कि दिल्ली



की क्रमिक योजनाओं ने यमुना के बाढ़ क्षेत्र का अतिक्रमण किया और वहां निर्माण की अनुमति दी। बाढ़ के मैदानों के अतिक्रमण का मतलब था कि यमुना के बढ़ने की प्राकृतिक जगह अब उपलब्ध नहीं थी, जिसके परिणामस्वरूप इस साल दिल्ली में अभूतपूर्व बाढ़ आई।

हाल ही में हुए भूस्खलन, बादल फटने और अचानक आई बाढ़ जैसे खतरों के दौरान बड़े पैमाने पर संपत्ति के नुकसान से यह पता चला है कि अधिकांश निर्माण योजनाएं त्रुटिपूर्ण हैं और आवश्यक मानदंडों का पालन नहीं करती हैं। डिजाइन कोड का आमतौर पर सरकारी विभागों द्वारा भी पालन नहीं किया जाता है। यह एनडीएमए की रिपोर्ट में कहा गया है, "एक चिंताजनक स्थिति पैदा हो गई है, जहां प्रतिकूल जलवायु, नाजुक वातावरण और टेक्टोनिक रूप से सक्रिय अस्थिर पहाड़ी इलाकों में पहले से मौजूद असुरक्षित इमारतों में हर साल बड़ी संख्या में असुरक्षित भवन भंडार जुड़ जाते हैं।"

एनडीएमए की आगे की रिपोर्ट में कहा गया है कि जब भी भूस्खलन जैसी घटनाएं होती हैं, तो अधिकारी खामियों के प्रणालीगत सुधार के बजाय "त्वरित सुधार" का सहारा लेते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि ऐसे प्रणालीगत सुधारात्मक कदम पहली बार में महंगे लग सकते हैं, लेकिन आने वाले समय में उनका लाभ लागत से अधिक होगा।

प्राकृतिक आपदा से कैसे बचा जा सकता है?

किसी भी प्राकृतिक आपदा से हम पूरी तरह बच नहीं सकते हैं, परंतु हम इन आपदाओं से बचने का उपाय कर सकते हैं। यदि हम सब पारिस्थितिकी तंत्र को ध्यान में रखकर विकास कार्यों को करते हैं तो काफी हद तक इन आपदाओं से बचा जा सकता हैं और साथ ही साथ इस धरा को लंबे समय तक रहने योग्य रखा जा सकता है।

वृक्षारोपण करना, वनों की कटाई पर रोक लगाना, भूमि के उपयोग के नियमों का पालन कर भूमि को कमजोर होने से रोकना, जल निकासी नियंत्रण के उपायों को अपनाना, भूमि महत्व के प्रति लोगों को जागरूक करना एवं लोगों को शिक्षा प्रदान करना, तीव्र ढालों की अपेक्षा समतल भूमि में कृषि करना, स्थानांतरित कृषि की अपेक्षा स्थायी एवं सीढ़ीनुमा कृषि प्रणाली को अपनाना, ज्वालामुखी व भूकंप से प्रभावित क्षेत्रों में वृक्षारोपण करना एवं खनन व उत्खनन क्रिया को यथासंभव कम करना इत्यादि ऐसे उपाय हैं, जिन्हें करके हम हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखंड में हुई भू–स्खलन जैसी आपदाओं से बच सकते हैं।



सकारात्मक सोच का मानव जीवन पर प्रभाव



सुश्री राजकुमारी शर्मा
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (से.नि.)
एम–143, साउथ सिटी–I,
गुरूग्राम, हरियाणा

सकारात्मक सोच का अर्थ है जीवन की चुनौतियों का सामना सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए करना। मानव जीवन अनेक प्रकार की चुनौतियों, कठिनाइयों से भरा होता है। यह सकारात्मक सोच से ही संभव हो पाता है कि मानव कठिन से कठिन परिस्थितियों से सामंजस्य बनाए रखते हुए विषम परिस्थितियों से पार उतर जाता है। सकारात्मक सोच का अर्थ यह कदापि नहीं है कि कठिन परिस्थितियों का परिहार कर दिया जाए।

कुछेक अनुसंधानकर्ता सोच की दो प्रकार से व्याख्या करते हैं जो इस प्रकार हैं –

1) सकारात्मक व्याख्या : इस प्रकार की सोच रखने वाले व्यक्ति कुछ अच्छी घटनाएं होने पर स्वयं को श्रेय देना पसंद करते हैं। इसी प्रकार जब कुछ अप्रिय घटित होता है तो उसके लिए वे बाह्य ताकतों को उत्तरदायी ठहराते हैं। सकारात्मक सोच का ही परिणाम होता है कि वे नकारात्मक घटनाओं को अस्थायी स्वरूप का मानते हैं और उनका विश्वास होता है कि कोई भी प्रभाव स्थायी नहीं होता। समय बीतने के साथ बुरा वक्त अच्छे वक्त में परिवर्तित हो जाता है।

2) नकारात्मक व्याख्या : नकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति प्रायः अपने को उस समय दोषी मानते हैं जब अप्रिय घटना घटित होती है। वे अच्छी घटना के घटित होने पर स्वयं को श्रेय नहीं दे पाते। नकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों की प्रवृत्ति ही ऐसी हो जाती है कि वे गलत सोचते हैं तथा अप्रिय घटनाएं घटित होने की प्रत्याशा करते हैं। जो बातें आपके नियंत्रण में नहीं होतीं उनके लिए स्वयं को दोषी मानना मानव जीवन की बहुत बड़ी भूल होती है तथा इसका मनःस्थिति पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

सकारात्मक सोच का महत्त्व

सकारात्मक सोच का मानव जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। इसका मानव के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य दोनों पर ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों में जीवन की समस्याओं से निपटने की बेहतर क्षमता होती है। आज मानव जीवन में तनाव, अवसाद जैसी खतरनाक समस्याएं पाई जाती हैं। इनके कारण कई और बीमारियां शरीर में घर बना लेती हैं। अंततः जीवन की

नैय्या मृत्यु की ओर अग्रसर होने लगती है। सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति जीवन के हर पहलु को ध्यान में रखते हुए इन कठिनाइयों से निजात पाता है तथा न केवल अपना जीवन बल्कि अन्य सदस्यों का जीवन भी निर्बाध रूप से चलाने में सहायता करता है। जीवन के प्रति अच्छी सोच रखने से न केवल मानव अपना कल्याण करता है बल्कि समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है।

नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में परिवर्तित करना

जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है। यदि मानव सोच ले तो कुछ भी उसकी पहुंच से बाहर नहीं है। आवश्यकता है तो इस सोच की कि सच्ची लगन, कठोर परिश्रम से सब कुछ संभव हो जाता है। हम स्वयं ही इस बात से बेहतर अवगत होते हैं कि कौन सी परिस्थितियां नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। उन परिस्थितियों को या तो उत्पन्न ही न होने दिया जाए अथवा उन परिस्थितियों का परिहार कर दिया जाए। यद्यपि नकारात्मक विचारों को सकारात्मक सोच में परिवर्तित करने में कठिनाइयां आती हैं तथापि कर्मठ व्यक्ति इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करते हैं और सकारात्मक जीवन की ओर अग्रसर होते हैं।

सकारात्मक सोच को व्यवहार में लाना

सतर्क मानसिक सोच को व्यवहार में लाने से स्वजागरूकता उत्पन्न होती है। इससे हम इस बात के प्रति अधिक सचेत होते हैं कि किस प्रकार नकारात्मक सोच हमारे व्यवहार पर हावी हो जाती है। हमें पता ही नहीं चलता कि प्रसन्न मानसिक स्थिति कब उदासी, चिड़चिड़ेपन, एकाकीपन में बदल जाती है। अतः सकारात्मक सोच के ऊपर नकारात्मक विचारों को हावी नहीं होने देना चाहिए। सावधानीपूर्वक तथा सतर्कतापूर्वक सकारात्मक मनःस्थिति को विकसित करना चाहिए।

सकारात्मक सोच से संबंधित कुछ उक्तियां

सकारात्मक सोच से संबंधित कुछ उक्तियां निम्न प्रकार हैं –

1) खुशी के लिए काम करने से खुशी भले ही न मिले परंतु खुश होकर काम करने से खुशी अवश्य मिलती है।



2) खुशी और आनंद के रंग जीवन के सबसे खूबसूरत रंग हैं। वे जीवन में सदा बने रहते हैं।

3) खुशी ऐसी वस्तु है जिसे जितना बांटो उतनी बढ़ती है।

4) जो कुछ मिला है उसी में प्रसन्न रहना सीखिए क्योंकि उंगलियों से यह सीख लेनी चाहिए कि सभी एकसमान कभी नहीं हो सकती।

5) सब्र को कमज़ोरी कदापि नहीं मानना चाहिए। यह एक ऐसी ताकत है, जो सभी में नहीं मिलती तथा सब्र को कड़ी परीक्षा देनी पड़ती है।

6) मानव जीवन अनमोल है इसको सही मायनों में जीना चाहिए।

7) मीठे बोल बोलने चाहिए क्योंकि शब्दों में वह ताकत होती है जिनके द्वारा जहां एक ओर किसी का दिल खोला जा सकता है वहीं दूसरी ओर किसी का मुंह बंद भी किया जा सकता है।

8) अपनी सोच को सदा काबू में रखना चाहिए क्योंकि सोच ही वास्तविक रूप में परिवर्तित होती है।

9) सदैव अच्छे कार्य करने चाहिएं क्योंकि जैसा कर्म हम करेंगे वैसा ही फल हमें प्राप्त होगा।

10) खराब स्वास्थ्य से मानव उतना कमजोर नहीं होता जितना उसे नकारात्म्क विचार प्रभावित करते हैं।

11) नकारात्मक सोच को मन में प्रविष्ट न होने दें क्योंकि इनसे आत्मविश्वास में कमी आती है।

12) सफलता पाने के लिए एक समय में एक ही काम करो तथा उसमें पूरी एकाग्रता लगा दो, सफलता आपके कदम चूमेगी।

13) समय का महत्व ध्यान में रखिए तथा प्रत्येक कार्य उचित समय पर कीजिए।

14) यह चिंता छोड़ दीजिए कि लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं।

15) सभी का वक्त बदलता है। वक्त न सदा अच्छा रहता है न ही सदा बुरा।

16) दिमाग में विचारों का ट्रैफिक कम होने पर जिंदगी का सफर आसान होगा।

17) जीवन में बड़ा काम करने के लिए दो बातें याद रखना आवश्यक हैं – (1) जो खोया है उसका गम नहीं करना चाहिए (2) जो पाया है वह किसी से कम नहीं है।

18) यह भरोसा रखिए कि अच्छे कर्म का परिणाम अच्छा ही मिलता है।

सकारात्मक सोच के लाभ तथा हानियां

प्रत्येक वस्तु के दो पहलु होते हैं अर्थात् जहां एक ओर कुछ लाभ होते हैं वहीं दूसरी ओर कुछ दुष्परिणाम भी होते हैं। सकारात्मक सोच को जीवन में अपनाने से निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं –

1) **बेहतर शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य** – सकारात्मक सोच का हमारे शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य दोनों पर प्रभाव पड़ता है। इससे बेहतर जीवन जीने में सहायता मिलती है।

2) **तनाव से मुक्ति** – आज का मानव जीवन तनाव से भरा पड़ा है। यदि हमारी सोच सकारात्मक है तो तनाव को काफी सीमा तक कम किया जा सकता है।

3) **बेहतर निर्णय लेना** – यह काफी हद तक केवल हमारी सोच पर निर्भर करता है कि क्या निर्णय

लिया जाता है। अच्छी तथा सकारात्मक सोच सदैव बेहतर निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है।

4) **सफलता** – मानव जीवन में सफलता की सीढ़ियां चढ़ना केवल तभी संभव है जब इंसान की सोच अच्छी हो। सही समय पर सही निर्णय लेने से सफलता मिलती है।

5) **अपने सपनों को साकार करना तथा लक्ष्य प्राप्त करना** – सकारात्मक सोच उस राह पर पथ प्रदर्शित करती है जहां मानव अपने सपनों को साकार करने में काफी हद तक सफल होता है। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रति अग्रसर होता है और इन्हें प्राप्त भी करता है।

6) **आत्मविश्वास में वृद्धि** – आत्मविश्वास में वृद्धि होना इस बात का परिचायक है कि हमारी सोच सकारात्मक हैं। प्रबल आत्म विश्वास वाला व्यक्ति उन्नति के चरम शिखर पर अवश्य पहुंचता है।

इसी प्रकार सिक्के के दूसरे पहलू के रूप में सकारात्मक सोच की कुछ हानियां भी होती हैं जो इस प्रकार हैं –

1) अधिक सकारात्मक सोच के कारण कई बार हमारी प्रत्याशा काफी ऊंची होती है जो कई बार पूरी नहीं हो पाती तथा निराशा में बदल जाती है। मन में हताशा, उदासी तथा अवसाद जैसी कई भयंकर बीमारियां हमारे शरीर में प्रविष्ट हो जाती हैं तथा मानव का जीवन ही पूर्णतः बदल जाता है।

2) कभी कभी दूसरों के प्रति सकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति दूसरों के क्रोध का शिकार हो जाते हैं। इसे ही नजायज़ फायदा उठाना कहा जाता है। इसमें नम्रता का गुण शामिल हैं। कई बार दूसरों के साथ नम्रतापूर्वक व्यवहार अपनी जान की मुसीबत बन जाता है। लोग इसे गलत ढंग से ले लेते हैं तथा नम्रता रखने वाले व्यक्ति को गलत परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

अंत में यही कहा जा सकता है कि सकारात्मक सोच के परिणाम मानव जीवन को पूर्णतः प्रभावित करते हैं। इनसे न केवल मानव जीवन का कल्याण संभव है बल्कि आसपास के लोगों के जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है। परंतु सकारात्मक सोच को एक सीमा तक ही रखना चाहिए ताकि अधिक सकारात्मक सोच के कारण प्रत्याशा अधिक न हो जिसके पूरा न होने पर मानव असवादग्रस्त न हो तथा अन्य प्रकार की कठिनाईयां उसे न भुगतनी पड़ें।



परिवार सहित मेरी पहली हवाई यात्रा



बिजेन्दर कुमार बेरवाल
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, हिंदी अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
गुजरात, राजकोट–360001

इतवार का दिन था मैं जम्मू स्थित ए.जी. कॉलोनी में अपने घर की बालकनी में बैठा हुआ था। मेरा घर जम्मू एयरपोर्ट से मात्र 180 कि.मी. की दूरी पर स्थित था। जब मैं नया–नया जम्मू कार्यालय में नागपुर कार्यालय से स्थानांतरित होकर यहाँ आया था, तब मुझे इसके बारे में पता नहीं था। लेकिन जब एक दिन एक के बाद एक कई हवाई जहाजों का वहाँ से आवागमन हुआ तब अचानक ही उन्होंने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा और मैंने जब जहाजों की भीड़ और उससे उत्पन्न शोर पर गौर किया। फिर अगले दिन मैंने उस बात की चर्चा अपने जम्मू कार्यालय के मित्रों एवं सहकर्मियों से की तो उन्होंने बताया कि एयरपोर्ट यहाँ से बहुत ही नजदीक है इसलिए यहाँ से हवाई जहाजों का अधिक आना–जाना लगा रहता है। हवाई जहाजों के इसी क्रम को याद करते हुए मुझे मेरी परिवार सहित पहली हवाई यात्रा याद आ गई जो मैं आप सबके साथ साझा करने जा रहा हूँ।

इसकी शुरूआत नागपुर से हुई, जहां मुख्यालय, नई दिल्ली से नौकरी ज्वाइन करने के लिए नागपुर स्थित ए.जी. (लेखापरीक्षा) कार्यालय में रिपोर्ट करने का आदेश मिला। उक्त आदेश के अनुसरण में नागपुर आने–जाने का सिलसिला शुरू हुआ और फिर दिल्ली से नागपुर और नागपुर से दिल्ली घर आने के लिए ट्रेन देखने और टिकट का क्रम भी शुरू हो गया। इस विभाग में वह मेरी पहली पोस्टिंग थी। जब मैं वहाँ अपने नागपुर वाले कार्यालय में कार्यरत था, तब मेरे ही अनुभाग में कार्यरत एक अन्य अनुवादक ने अचानक एक दिन मोबाइल पर देखते हुए मुझे ऐसे ही बताया कि सर दिल्ली जाने की फ्लाईट बड़ी ही सस्ती पड़ रही है, टिकट करवा लो अभी बहुत ही कम रेट चल रहा है। मैंने भी उत्सुकता दिखाते हुए और सभी बातें जानने के बाद और घर पर बात करके एक पारिवारिक कार्यक्रम की तिथियों के अनुसार उस से कह दिया कि ठीक है जाने और आने की टिकट कर दो। यह पारिवारिक कार्यक्रम अक्टूबर 2017 में होना था और मुझे याद है टिकट अप्रैल 2017 में ही करवा ली थी, तभी तो टिकट सस्ती पड़ रही थी। बताई गई तिथियों के अनुसार उन्होंने टिकट भी कर दी।

लेकिन जब–जब पहली हवाई यात्रा की बात मन में आती थी तो मन में एक उत्सुकता सी भर जाती थी, क्योंकि इससे पहले केवल दिल्ली में रहते हुए बसों, ऑटो, कारों या दिल्ली की लोकल ट्रेनों में ही सफर किया था। लंबी दूरी की ट्रेन यात्रा भी पहली बार नागपुर जाने पर ही की थी। रही बात हवाई जहाज के सफर की, तो पहली बात यह कि ये मन में आती ही नहीं थी और यदि मन में विचार आ भी जाता था तो तरह–तरह की बातें भी मन में आने लगती थी कि कहाँ जाना होगा? कितने की टिकट होगी? कैसे सफर किया जाता है? पासपोर्ट आदि की भी जरूरत होती होगी या नहीं और एयरपोर्ट पर कैसे बात की जाएगी, क्या–क्या पूछेंगे, और हम क्या जवाब देंगे और सच कहूँ तो हवाई जहाजों की कभी–कभार होने वाली अप्रिय घटनाओं के बारे में सुनकर भी बहुत डर लगता था कि हवाई जहाज में बैठे और कुछ गड़बड़ हो गई तो फिर तो पता नहीं क्या होगा? और ऐसी बातों का अंजाम तो हम सभी अच्छी तरह से जानते ही हैं, आदि बातें दिमाग में आने लग जाती थी। इसलिए एक तरह से विचार मन में आता था और दूसरी तरफ दिमाग से निकल भी जाता था। दूर–दूर तक हवाई यात्रा का कोई आधार भी बनता नहीं दिखता था। लेकिन वो कहते हैं न कि जो होना है वो तो होकर ही रहता है।

ऐसा ही कुछ अब मेरे साथ भी होने जा रहा था। जैसे–जैसे हवाई यात्रा का दिन नजदीक आ रहा था, मन में उत्सुकता और डर दोनों बढ़ते जा रहे थे। मन में अभी भी उन सवालों की बाढ़ सी आ रही थी जो कभी पहले आते थे। लेकिन दूसरी तरफ हवाई यात्रा करने का अपने आप में एक मजा भी था, इस बात को सोचता था तो मन रोमांच से भी भर जाता था। हवाई यात्रा खासतौर पर उन लोगों के लिए जिन्होंने कभी उससे सफर नहीं किया हो, उनके लिए तो पहली बार तो एक बहुत बड़ी बात होती है, जैसे कि मैं मन में महसूस कर रहा था। हाँ, उन लोगों के लिए यह एक साधारण सी बात हो सकती है या हो जाती है जो लोग अक्सर हवाई जहाज से आना–जाना करते रहते हैं। सफर करने वाला निर्धारित दिन नजदीक आ गया और जाने से पहले वहाँ एयरपोर्ट पर क्या–क्या करना है और क्या नहीं, ये सारी बातें दोस्तों और जानने वालों से चलती रहती थी। उधर दूसरी तरफ घर वाले भी बहुत खुश थे कि बच्चे आज पहली बार हवाई जहाज से आ रहे हैं और डर भी था कि ठीक ठाक पहुंच



जाए कहीं यात्रा के दौरान कुछ गड़बड़ या परेशानी न हो जाए।

फिर तय दिवस भी आया और हम सारी बातों को ध्यान में रखते हुए तय समय पर नागपुर एयरपोर्ट पर पहुंच गए और सभी जरूरी प्रक्रियाओं से रू–ब–रू होने के बाद बताए गए स्थान पर बैठकर हवाई जहाज से प्रस्थान करने का इंतजार करने लगे। एयरपोर्ट इतना साफ–सुथरा था और हवाई जहाज देखकर इतना अच्छा लग रहा था कि बाहर आने का मन ही नहीं कर रहा था और मन कर रहा था कि यहीं एयरपोर्ट पर ही रहें। खैर, ये तो वो बातें थी जो एयरपोर्ट और बड़े–बड़े हवाई जहाजों और वहां की चकाचक व्यवस्था को देखकर अचानक ही मन में आने लगी थी।

इससे पहले अक्सर हवाई जहाजों को देखते ही मन में तरह–तरह के विचार भी आते रहते थे कि कैसी इतनी बड़ी भारी भरकम चीज हवा में एकदम उड़ जाती है और फिर कैसे कुछ समय के बाद हवा में रहने के बाद फिर से धरती पर लौट आती है। हवाई जहाज को देखने का एक अलग ही रोमांच का अनुभव महसूस होता था। एक विमान जब उड़ान भरता है तो कैसे ही चंद सेकेंडों में धरती से हजारों फीट की ऊंचाई पर जाकर उड़ने लगता है और फिर बादलों में जाकर आकाश में ओझल हो जाता है।

आपने और हमने अक्सर ऐसे भी सुना होगा कि लोगों को एयरपोर्ट पर विमानों को देखने का शौक होता है और जो देखने जाते भी हैं। बच्चे जब–जब बहुत ही नजदीक से किसी हवाई जहाज को उड़ता देखते थे, तो बहुत ही रोमांचित हो जाते थे, और जब उसे देख कर वे इतनी जिद्द करने लगते थे कि पापा हमें भी हवाई जहाज में कहीं ले चलो, देखो न सब हवाई यात्रा करते हैं। आज उनका ये सपना भी पूरा होने जा रहा था। उनकी इसी बात का उत्तर देते हुए कहा कि बेटे अभी थोड़ा इंतजार करो हम भी अभी थोड़ी ही देर में हवाई जहाज में ही होंगे और हवाई यात्रा कर रहे होंगे। इसके अतिरिक्त, मैं यह यकीन से कह सकता हूं कि अगर आप कहीं एयरपोर्ट के आसपास से गुजर रहे हो या आपका घर एयरपोर्ट के आस–पास ही है तो यकीनन जब भी कोई हवाई जहाज या तो उड़ान भरता हो या उतरने के लिए लैंडिंग कर रहा हो तो हम उसे देखने के लिए जरूर रूक ही जाएंगे। वो क्षण भी बहुत ही रोमांचकारी होते हैं जब हम हवाई जहाजों को ऐसी स्थिति में देख पाते हैं। ऐसे दृश्य हम कई बार देख भी चुके होते हैं लेकिन फिर भी जब भी देखते हैं तो हर बार अच्छे और नए लगते हैं। इसीलिए मेरे विचार में तो एयरपोर्ट पर खड़े छोटे–बड़े विमानों का अवलोकन करना भी अपने आप में कौतूहल का विषय है।

यह विमान यात्रा इंडिगो एयरलाइंस से होने वाली थी। एयरपोर्ट पर हवाई जहाज का इंतजार जारी था कि तभी घोषणा हुई कि इंडिगो के विमान से दिल्ली जाने वाले यात्री कृपया गेट पर पहुंचे और विमान में बैठने से पहले फिर से जांच प्रक्रिया में सहयोग करें। आदेशानुसार वैसा ही किया गया और फिर वह क्षण भी आया जब हम पहली बार विमान में बैठने के लिए आगे बढ़ रहे थे। जांच स्थल से सीधे हवाई जहाज में जाने के लिए एयरपोर्ट पर Passenger Boarding Bridge की सुविधा भी

उपलब्ध थी और जिसके जरिए हम विमान में बैठने के लिए आगे बढ़ रहे थे और जैसे ही हमने विमान में पहला कदम रखा तो एक पल के लिए यकीन ही नहीं आया कि हम विमान में आ चुके हैं और थोड़ी ही देर में हवा में उड़ने वाले हैं। खैर, यकीन तो करना ही था यह सब वास्तव में जो हो रहा था। उसके बाद फिर टिकट में अपनी सीट संख्या देख कर हम सब अपनी–अपनी जगह पर बैठ गए और फिर विमान और एयरपोर्ट के बारे में तरह–तरह की बातें करने लगे।

बच्चों की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं रहा। उनकी बातों में मानो अपना बचपन ही लौट आया था। जैसे कि देखो पापा हवाई जहाज कितना बड़ा है, और वो देखो पापा दूसरी एयरलाइंस के हवाई जहाज भी वहाँ खड़े हैं। अरे पापा वो देखो वो हवाई जहाज उड़ने के लिए तैयार है, अरे वो देखो हवाई जहाज ने उड़ने के लिए चलना शुरू कर दिया है। वो देखो एक दूसरा हवाई जहाज देखो उतरते हुए कितना सुंदर लग रहा है। पापा क्या हम भी थोड़ी देर में ही वैसे ही आकाश में होंगे जैसे कि जब दूसरे विमानों को हवा में उड़ते देखा करते थे। मैंने कहा हाँ बेटे, हम भी अभी थोड़ी देर में इसी विमान के जरिए कुछ ही क्षणों में हवा में होंगे और हमारा विमान भी आकाश में उड़ रहा होगा। अब तो बच्चे मजाक में ये भी बोलने लगे थे कि पापा अब हम तो इस हवाई जहाज से उतरेंगे ही नहीं, हमें नहीं उतरना, हम तो बस अब इसी में ही बैठे रहेंगे और साथ में हम पति–पत्नी से भी यह मांग होने लगी कि पापा–मम्मी आप दोनों भी मत उतरना। उनके चेहरों पर हवाई यात्रा की वो खुशी और हवाई जहाजों के बारे में उनकी उत्सुकता मुझे आज भी अच्छी तरह याद है, सही में वे होने जा रही पहली हवाई यात्रा के बारे में बातें करके बहुत ही खुश हो रहे थे।

उधर, मैं भी उनकी खुशी देखकर



बहुत खुश हो रहा था और मन में कहने लगा कि बेटे मेरा बस चले तो मैं तुम सबको हर बार हवाई जहाज से ही यात्रा करवाऊं। विदेश में तो नहीं जा सकते लेकिन देश में तो कम पैसे में ही यात्रा का आनंद ले सकते हैं। लेकिन ये बातें सोचकर अच्छा तो लग रहा था, परंतु वास्तविकता कुछ और ही थी। वास्तव में हर बार मेरे लिए ऐसा करना संभव नहीं था, क्योंकि कब और कहां जाना होगा यह तय नहीं होता था और इसी कारण अगर यात्रा करनी पड़ भी जाए तो अधिकतर टिकट का महंगा होना हर बार हवाई यात्रा और हमारे बीच दूरी बना देता था। इसलिए एक सामान्य व्यक्ति के लिए हवाई यात्रा का संयोग कभी–कभी ही बैठता है।

हम सब विमान और अपनी पहली हवाई यात्रा के बारे में बातें कर ही रहे थे कि तभी विमान कौन चला रहा है? कौन इसका कैप्टन है? कितनी ऊंचाई पर हम उड़ेंगे? कितने समय में दिल्ली पहुंचेंगे? अगर यात्रा के दौरान कोई परेशानी आ जाए तो यात्रीगण क्या करें आदि के बारे में द्विभाषी रूप में पहले हिंदी और फिर अंग्रेजी में विमान में घोषणा हुई। विमान परिचारिका ने साथ–साथ घोषित हो रही कुछ अन्य हिदायतों को हाव–भाव से समझा दिया, जिसे विमान के सभी यात्री बड़े ही ध्यान से सुन व देख रहे थे।

फिर हवाई जहाज ने चलना शुरू किया और बच्चे एक बार फिर से बहुत रोमांचित हो गए और जब विमान ने रनवे पर उड़ने के लिए रूक कर चलना शुरू किया तो एक पल के लिए मुझे ऐसा लगा कि शायद ही दुनिया में इससे कोई तेज वाहन चलता होगा। और जब विमान उड़ने के लिए थोड़ा ऊपर उठा तो कहने ही क्या थे, वो क्षण भी अपने आप में रोमांच से भरा हुआ था। तब ही पता चला कि अब हम धरती को छोड़ते हुए हवाई जहाज में ऊपर आकाश की ओर बढ़ रहे थे। थोड़ी ही देर में खिड़की से जब नीचे देखा तो बिल्कुल वैसा ही लग रहा था जैसे कि गूगल में हमें कोई मानचित्र या क्षेत्र देखने पर लगता है।

हवाई यात्रा के दौरान प्रत्येक क्षण अपने आप में बहुत रोमांचकारी था। हवा में उड़ते हुए विमान में बैठ कर सैर करना एक बार तो सपना सा लग रहा था, लेकिन दूसरी ओर मजा भी बहुत आ रहा था। उस यात्रा के दौरान ही हम सभी यह सोच कर बहुत ही खुश हो रहे थे कि अभी तो एक विमान यात्रा और होनी बाकी है, अभी वापिस भी तो आना है, क्योंकि हमने पहले ही वापिस आने की भी टिकट करवा ली थी। जाते समय विमान यात्रा नागपुर से दिल्ली के लिए सीधी थी कहीं कोई बीच में पड़ाव नहीं था।

विमान में पहली यात्रा होने के कारण कुछ तो उत्साह में ही भूल गए कि यात्रा के दौरान कानों आदि में जब दर्द होने लगे तो क्या करना चाहिए। हम सभी के कान में हल्का–हल्का सा दर्द होना शुरू हो गया था, फिर बच्चे भी इसकी शिकायत करने लगे। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? फिर अचानक ध्यान आया कि किसी ने बताया था कि जब यात्रा के दौरान कानों में दर्द हो तो कोई टॉफी वगैरह आदि मुंह में रखना इससे मुंह की मूवमेंट बनी रहेगी और इस समस्या से गुजरना नहीं पड़ेगा। हवाई यात्रा का मजा जारी था, कभी मैं और कभी बच्चे खिड़की से

बाहर बादलों को देखते तो हम सबके चेहरे खुशी से चमक उठते थे। बच्चों के चेहरों की खुशी देख कर मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था, कि चलो हम सभी अपनी पहली हवाई यात्रा का पूरा मजा ले रहे हैं और सबसे ज्यादा तो बच्चे इस यात्रा का पूरा मजा ले रहे हैं।

विमान जब कभी हवा में थोड़ा मुड़ता था तो उस क्षण तो हमें बिल्कुल साफ ही पता चल जाता था कि विमान मुड़ रहा है वरना तो विमान की इतनी स्पीड होते हुए भी लग रहा था कि हवा में आकर अटक गया है, चल भी नहीं रहा है। फिर कुछ मूल्य चुकाकर खाना–पीना भी हुआ, क्योंकि हवाई जहाज में जलपान हेतु पेड–सर्विस थी। इधर समय अपनी गति से आगे बढ़े जा रहा था। अब यात्रा समाप्त होने का समय भी नजदीक आ रहा था। हमारे चेहरे थोड़ी देर के लिए उदास हो गए कि हमारी विमान यात्रा अब समाप्त होने वाली है और हमें विमान से उतरना होगा। विमान में घोषणा हुई कि सभी यात्रीगण ध्यान दें कि कुछ ही देर में हमारा विमान दिल्ली एयरपोर्ट पर लैंड करेगा, सभी यात्री अपनी सीट में लगी पेटी को बांध लें और विमान रूकने पर उसे खोल दें। बताए गए निर्देशानुसार वैसा ही किया गया और थोड़ी ही देर में विमान दिल्ली की धरती पर था और हम विमान से बाहर आ गए थे। ऊपर वाले की दया से पहली यात्रा सफल भी रही, कहीं कुछ परेशानी नहीं हुई। पूरी यात्रा लगभग एक घंटा चालीस मिनट में पूरी हो गई थी।

बताई गई बेल्ट पर सामान लेने के लिए जाते वक्त बार–बार हम अपने विमान को मुड़–मुड़ कर देख रहे थे कि पहली बार हवाई यात्रा करते हुए हम इसी विमान से नागपुर से दिल्ली आए हैं। यह विमान हमारी पहली हवाई यात्रा का हिस्सा बन गया था या यूँ कह लीजिए कि हम उस विमान यात्रा से जुड़ गए थे। हमेशा के लिए वह इंडिगो का विमान (अभी उसका नंबर तो ज्ञात नहीं है, क्योंकि अभी इस यात्रा को पूरे चार वर्ष हो गए हैं) हमारी पहली विमान यात्रा के रूप में हमसे जुड़ गया। ऐसा इसलिए कह रहा हूँ कि अब जब भी कभी किसी पहली हवाई यात्रा की बात आती है तो उसी इंडिगो फ्लाइट का जिक्र चलता है।

उसके बाद हम अपना सामान लेने के लिए बताई गई बेल्ट पर पहुंच गए और अपने सामान का इंतजार करने लगे। थोड़ी ही देर में हमारा सामान हमने बेल्ट से उठा लिया और एयरपोर्ट से बाहर आ गए। बाहर घर से छोटा भाई लेने आया हुआ था, बच्चे फिर खुश हो गए कि चाचा लेने आए हैं अब हम अपनी इस यात्रा के बारे में सब कुछ बताएंगे। एयरपोर्ट से घर पहुंचने तक बच्चों ने एक क्षण भी विमान की कोई बात नहीं छोड़ी और जो याद आता गया बताते ही रहे। छोटे भाई ने भी कहा कि लगता है कि सबसे ज्यादा बच्चों ने ही इस जर्नी को एंजॉय किया है। हमारा उत्तर हाँ में था।

मन फिर से परिवार सहित किसी नई हवाई यात्रा पर जाने के लिए सोचने लगा कि तभी बड़े बेटे ने कहा कि पापा देखो लगता है दरवाजे पर कोई है, घंटी बज रही है और फिर मैं हवा में उड़ते हुए हवाई जहाज को टाटा करते हुए और मन में पहली हवाई यात्रा की यादों को याद करते हुए दरवाजा खोलने चला गया।

पानी की बचत
आज की आवश्यकता

मदन गोपाल शर्मा
60, अनुपम नगर, विश्वविद्यालय मार्ग,
ग्वालियर

आज भारत सहित दुनियाँ के अनेक देश पानी की किल्लत झेल रहे हैं अतः आज की प्राथमिक आवश्यकता पानी की बचत की ओर ध्यान देना है। यह ठीक है कि पृथ्वी पर कुल भू भाग मात्र 29 प्रतिशत है और 71 प्रतिशत समुद्र है पर खारे पानी की उपलब्धता से समस्या का हल नहीं निकलता, क्योंकि खारा पानी किसी उपयोग में नहीं आता और पीने योग्य पानी का भंडार अनवरत घटता जा रहा है। सभी देश जल संरक्षण की दिशा में प्रयास कर रहे हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ में भी प्रेरित करता रहा है। हमारे देश में भी जल संरक्षण के अभियान में काफी कुछ सार्थक कार्य हुआ है। भूजल को सुरक्षित रखने, उसे बढ़ाने व जल का कम दोहन करने के प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार के साथ–साथ निजी संस्थाएं व वैयक्तिक प्रयास भी इस दिशा में हो रहे हैं। घटते जल भंडार को रोकने के लिए पुराने जल स्रोतों जैसे कुँओं, सरोवरों, झीलों आदि को संरक्षित करने का प्रयास किया जाना आवश्यक है। नदियों का भी संरक्षण जरूरी है तथा नदियों का भी संरक्षण जरूरी है तथा नदियों का दुरुपयोग रोकना आवश्यक है क्योंकि नदियाँ जीवन दायिनी हैं।

जल संरक्षण के साथ–साथ जल की बचत का अभियान भी राष्ट्रीय स्तर पर चलाया जाना चाहिए, ऐसा नहीं किया गया तो जल संकट दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जाएगा। पुराने जमाने में काफी जनसंख्या नहाने, कपड़े धोने, पशुओं के लिए तथा सफाई आदि के लिए सरोवरों, झीलों, पोखरों आदि का उपयोग करते थे, इससे काफी पेयजल बच जाता था। समय के साथ–साथ पेय व साफ जल का खर्च पहले के मुकाबले काफी ज्यादा बढ़ गया है जो चिंता का विषय है। बढ़ती आबादी व आधुनिक सुविधाओं ने भी पानी का खर्च बढ़ा दिया है। सिंचाई में भी पहले की अपेक्षा काफी ज्यादा पानी का उपयोग होता है जो कृषि उत्पादन के लिए आवश्यक भी है। इन्हीं सब संदर्भों को ध्यान में रखते हुए पानी की बचत से ही इस महा संकट से मुक्ति पाना संभव है।

पानी की बचत के लिए सभी को सामूहिक प्रयास करने होंगे, केवल सरकार के प्रयास ही काफी नहीं होंगे। हमें पानी की बचत करना अपनी आदत में डालना होगा और हर व्यक्ति को यह सोचना होगा कि कहाँ पानी का दुरुपयोग रोका जा सकता है। यह सोचिए कि जब धरती के भीतर ही जल नहीं रहेगा, ग्लेशियरों से निकलने वाली नदियाँ क्रमशः सूखेंगी तब क्या स्थिति होगी। धरती के भीतर पर्याप्त जल सुरक्षित रहे इसके लिए अभी से प्रयास किए जाने चाहिए। हमारे यहाँ कहावत है –

"बूँद बूँद से घट भरे" इस कहावत को – "बूँद बूँद से जल बचे" में परिवर्तित करना होगा। पानी के व्यर्थ खर्च से बचना होगा। कुछ छोटे–छोटे कामों से भी पानी की बचत हो सकती है। पानी पीते समय उतना ही पानी लें, जितना पीना हो, झूठा पानी न छोड़ें, सफाई, पौंछा, धुलाई आदि से निकले पानी का उपयोग सीवर आदि में डालने में किया जाता है, कपड़े धोने से निकला पानी बाथरूम की सफाई के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। सार्वजनिक कार्यक्रमों में काफी पानी व्यर्थ फैलता है, इसे भी रोका जा सकता है। घरों में नल आदि टपकते रहते हैं इन्हें तत्काल ठीक कराया जाना चाहिए। घर में यदि कच्ची जगह है तो वर्षा के पानी को भूतल में समाने का प्रयास किया जाना चाहिए। घरों में बच्चों को पानी की बचत के बारे में समझाया जाना चाहिए। पेड़–पौधों की सिंचाई में भी जितना आवश्यक हो उतना ही जल खर्च किया जाना चाहिए। हर मोहल्ले में जल बचत अभियान चलाया जाना चाहिए और इसे अधिक से अधिक लोगों को जोड़ा जाना चाहिए। कुछ लोग सुझावों के व्यवहारिक पक्ष को लेकर शंका प्रकट कर सकते हैं पर जल संकट के भविष्य को देखते हुए आज नहीं तो कल हमें इस दिशा में सोचने को मजबूर होना ही पड़ेगा। जिन इलाकों में आज पेयजल का अभाव है, उनके दिल से पूछिए कि वे किस स्थिति में हैं और जल उनके लिए कितना महत्वपूर्ण है। यह मान कर चलिए – जल ही जीवन है, जीवन ही जल है।



शौर्यमूर्ति बन्दा वैरागी



सुश्री सं.ग. श्रीमती
सेवानिवृत्त (हि.अ.)
सं. 135, न्यू वी.ई.एल. रोड
एजीज लेआउट, बेंगलूर, कर्नाटक

भारत में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के इतिहास में शौर्य के क्षेत्र में बन्दा वैरागी का स्थान सर्वोत्तम है। विश्व के इतिहास में एक से बढ़कर एक वीर और त्यागियों की कीर्ति गाथाएँ पढ़ने को मिलती हैं, पर जो साहस, ओज, दिलेरी और परिस्थितियों से जूझने की जो वीरतापूर्ण उमंग बन्दा वैरागी की जीवन–कथाओं में मिलती हैं, वह अन्यत्र नहीं मिलती। बन्दा वैरागी अपने शौर्य तथा त्याग के कारण भारतीय इतिहास में एक परम उज्ज्वल और अनमोल रत्न के समान है। उनका बलिदान तथा दृढ़ता सदा याद रहेगा। उनका शौर्य और त्याग सदा सर्वोपरि रहेगा।

बन्दा वैरागी का नाम बाल्यावस्था में लक्ष्मण देव था। उनका जन्म पुँछ के पास राजौरी नामक गाँव में संवत्, 1727 की कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी को हुआ। वे राजपूत थ। लक्ष्मण देव ने अपनी तरुणाई के पूर्व ही घुड़सवारी तथा अस्त्र–शस्त्र चलाना भली प्रकार से सीख लिया था। इतना सीखने पर भी युवावस्था के प्रथम चरण में ही लक्ष्मण देव के मन में संसार के प्रति विरक्ति हो गई। वे घर छोड़कर कसूर के पास रामथम्मन गाँव में रामदास वैरागी के अखाड़े में चले गए। उनके शिष्य बनकर वहीं रहने लगे। रामदास वैरागी का शिष्य बनने पर लक्ष्मण देव का नया नामकरण हुआ 'माधवदास'।

बन्दा वैरागी को देश तथा धर्म की रक्षा के लिए कई बार विदेशियों से लड़ना पड़ा। फलतः उन्हें बार–बार सेना का संगठन और अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण भी करना पड़ा। उनकी सेना में हिंदू और सिख, दोनों ही थे। हिंदुओं में सबसे अधिक राजपूत और जाट थे। बन्दा वैरागी अपने सैनिकों का बड़ा ध्यान रखते थे। वे स्वयं कष्ट उठा लेते थे पर अपने सैनिकों को कभी भी कष्ट का जीवन नहीं बिताने देते थे। सैनिक अस्त्र–शस्त्रों के संचालन में दक्ष तो थे ही बल्कि कर्त्तव्य पालन में भी दृढ़ रहते थे। वे देश–प्रेमी और श्रद्धालु थे।

बन्दा वैरागी स्वयं भी शूरवीर, साहसी और अद्‌भुत शक्ति संपन्न थे। वे घुड़सवारी में भी बड़े दक्ष थे। जब हाथ में तलवार लेकर शत्रु पर टूटते थे तो ऐसा लगता था, मानों वे सहस्रबाहु हों। वैरागी अच्छे निशानेबाज भी थे। शत्रु कहते थे कि यह इंसान नहीं, कोई फरिश्ता है इस पर विजय पाना असंभव है।

बन्दा वैरागी का संपूर्ण जीवन युद्ध के क्षेत्र में ही बीता। उन्होंने कई भयंकर लड़ाईयाँ लड़ी। उनके युद्ध का

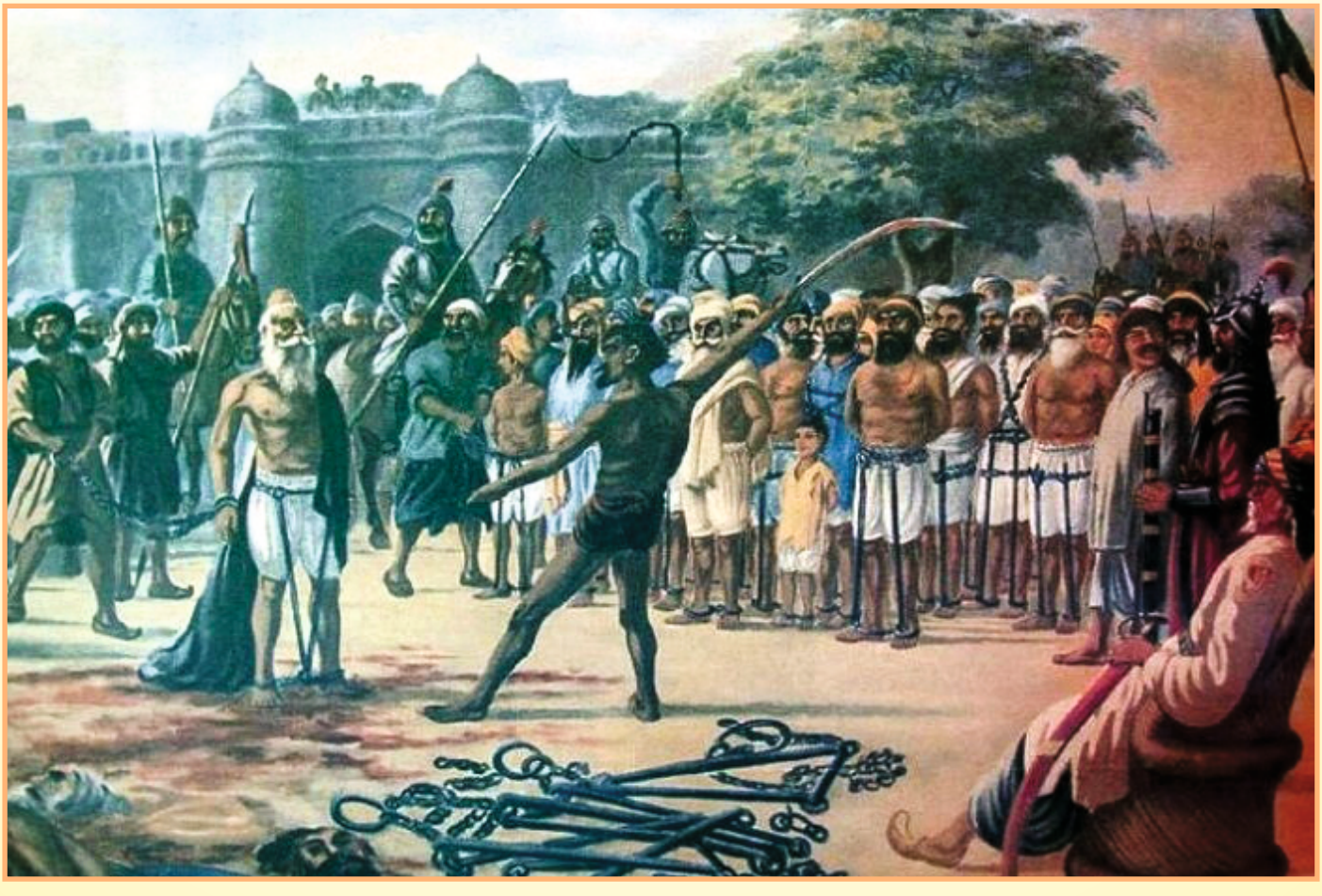
क्रम जो नवम्बर 1709 में प्रारंभ हुआ वह 1715–16 तक चलता रहा। उन्होंने सिढौरा पर आक्रमण करके साढ़ोरा के हाकिम उस्मान खाँ को दंडित किया। उस्मान खाँ बड़ा अत्याचारी था। सिख सेनाएँ जब सरहिंद में घुसी तो लगातार तीन दिनों तक नगर में लूटपाट करती रही। सारा सरहिंद बन्दा की जय–जयकार करने लगा जो उस्मान खाँ के आतंक से काँप रहा था।

बन्दा ने मालेर कोटला पर चढ़ाई करके उस पर विजय प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने जमराँव और रायकोट आदि नगरों को भी जीता। इन विजयों से बन्दा की कीर्ति कथा चारों ओर फैल गई वे एक बड़े क्षेत्र के शासक तथा एकाधिकारी माने जाने लगे। उन्होंने सोढ़ा के निकट मुखलिस के पुराने किले की मरम्मत कराकर उसे एक नया रूप दिया। उसका नया नामकरण किया 'लोहगढ़'। इसको ही बन्दा ने अपनी राजधानी बनाया। उसकी दीवारें लोहे की भाँति सुदृढ़ थी।

बन्दा वैरागी ने लोहगढ़ को राजधानी बनाकर गुरू गोविंदसिंह जी के नाम का सिक्का भी चलाया। उन्होंने आदेश–पत्रों पर लगाने हेतु एक मुहर बनवाई। उस मुहर पर निम्नांकित शब्द खुदे हुए थे –

"देग तेह फतह व नसरत रंग।
याफत अजनानक गुरू गोबिन्द सिंह।।"

बन्दा वैरागी की बढ़ती हुई शक्ति और निरंतर होने वाली विजयों के समाचार दिल्ली के बादशाह के कानों



में पड़ते थे। बन्दा की चमत्कारिक शक्तियों से शत्रु सैनिक घबराते थे। स्वयं बन्दा के सैनिक बन्दा की वीरता पर अटूट श्रद्धा रखते थे। बन्दा की प्रसिद्धि और उनकी सफलताओं का कारण उनके गुण थे। वे महान शूरवीर और योद्धा थे। इतना होने पर भी बड़े अनासक्त तथा निर्लोभी थे। सचमुच वैरागी थे। देश और धर्म के सच्चे सेवक थे। महान शूरवीर और विजेता होने पर भी साधुओं सा जीवन व्यतीत करते थे। जो कुछ जीतते थे, सिख–सरदारों को सौंप देते थे। रूपया–पैसा, धन–दौलत सब कुछ सैनिकों में बाँट देते थे। बन्दा वैरागी यदि अनासक्त न होते तो शायद ही यवन–शासक उन्हें बन्दी बना पाता।

पर दुर्भाग्यवश बन्दा वैरागी एक महान विजेता होने पर भी शासन व्यवस्था के प्रति सदा उदासीन थे। सिख सरदार भी स्वार्थों में लिप्त हो गए। वे बन्दा को समझ न सके। सिखों ने बन्दा का साथ छोड़ दिया। बन्दा ने, गुरूदासपुर नंगल में बड़ी दृढ़ता और साहब के साथ शत्रुओं का सामना किया। वे कई महीनों तक भूख से लड़ते रहे। उनका शरीर जर्जर हो गया था। सन् 1 जून, 1716 को बन्दा और उनके साथियों को जेल से बाहर निकाला गया। वे जंजीरों से जकड़े हुए थे। बन्दा से कहा गया कि वे इस्लाम को स्वीकार कर लें। जिस धर्म की रक्षा के लिए बन्दा ने बड़े–बड़े युद्ध लड़े, बड़े–बड़े संकटों का सामना किया, उस धर्म को वे कैसे छोड़ सकते थे? जब वे तैयार न हुए तो जल्लादों ने उनकी गोद में उनके चार वर्षीय पुत्र को बिठाकर, उनसे कहा कि वह अपने हाथों से पुत्र को मार डालें, पर इस हृदयबेधक कार्य को वे कैसे कर सकते थे? आखिर में जल्लादों ने बन्दा की आँखों के सामने ही उनके बच्चे के टुकड़े–टुकड़े कर डाले। इस विकट और हृदयबेधक परिस्थिति में भी उनका धैर्य स्थिर था। उनका धर्म–प्रेम अविचलित था। इससे क्रोधित होकर, जल्लादों ने बन्दा को अनेक शारीरिक यातनाएं देकर उनकी भी हत्या कर दी।

वीर–प्रवर बन्दा ने सभी कष्ट तथा यातनाओं को बड़े धैर्य के साथ सहन करके, धर्म तथा देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। अंत तक उनके होठों पर केवल एक ही वाक्य था, "हे प्रभु! मुझे शक्ति दो कि मैं परीक्षा में खरा उतर सकूँ।" बन्दा परीक्षा में खरे ही नहीं उतरे, वरन अमर हो गए। धर्म के लिए बलिदान देकर प्रेरणा के स्रोत बन गए। उनके साथियों ने भी धर्म और देश की रक्षा हेतु अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। बन्दा वैरागी जैसे सुपुत्र पाकर भारतमाता धन्य हो गईं।



फतेहपुर सीकरी व भरतपुर स्थित केवलादेव राष्ट्रीय पार्क की सैर



ललित कुमार वर्मा
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवायें)
सातवीं मंजिल, ए–ब्लॉक, रक्षा कार्यालय कॉम्पलैक्स
अफ्रीका एवेन्यू, नई दिल्ली–110066

आगरा से लगभग चालीस कि.मी. की दूरी पर स्थित है फतेहपुर सीकरी, जिसे 1986 में यूनेस्को ने वर्ल्ड हैरीटेज स्थल घोषित किया है। मुगल काल में अकबर ने 1569 में सूफी संत शेख सलीम चिश्ती के सम्मान में सीकरी को बसाना शुरू किया था। सन् 1571 में अकबर ने आगरा से राजधानी सीकरी स्थानांतरित किया और इसे फतेहाबाद नाम दिया। सन् 1571 से 1585 तक मुगल साम्राज्य की यह राजधानी रही और इसे फतेहपुर सीकरी के नाम से जाना जाने लगा। लेकिन पानी की कमी के कारण यह स्थान छोड़ना पड़ा। कहा जाता है कि सन् 1619 में जहांगीर के तीन महीने यहां रहने के बाद, 1719 में मुहम्मद शाह की ताजपोशी में इस स्थान को दोबारा सजाया गया था।

आगरा के ईदगाह बस स्टैंड से बस द्वारा फतेहपुर सीकरी जाया जा सकता है। इस सड़क मार्ग के दोनों ओर दूर–दूर तक फैले हरे–भरे खेतों में कहीं लहलहाती फसल दिखाई देती है तो भेड़ बकरवाल भी जगह–जगह पर दिखाई देते हैं। सराय सराहा, भेढाकुर, मेहुअर, क्वेराली के आसपास प्राचीन कोस मीनार भी दिखाई देते हैं। करीब चार–पांच कोस मीनार इस क्षेत्र के आसपास नजर आते हैं। आगरा में आठ कोस मीनार पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित हैं। इनमें से पांच आगरा–फतेहपुर सीकरी मार्ग और तीन आगरा मथुरा मार्ग पर स्थित हैं।

कोस दूरी मापने के प्रयोग में लाए जाते थे। यह दो मील या सवा तीन कि.मी. के बराबर होता था। शेरशाह सूरी ने वर्ष 1540–45 तक के अपने शासनकाल में ग्रैंड ट्रंक रोड के किनारे कोस मीनार बनवाये थे। उसने हर दो कोस की दूरी पर कोस बनवाये थे। करीब 30 फुट ऊँची कोस मीनारों को लाखोरी ईंटों व चूने से बनाया गया था। इनके ऊपर चूने का मोटा प्लास्टर किया गया था। जहांगीर ने कोस मीनारों को पक्की ईंटों व पत्थरों से बनवाने का आदेश दिया था।

आगरा फतेहपुर सीकरी मार्ग में स्थित कोस मीनार –

1) आगरा फतेहपुर सीकरी मार्ग, मील 9, फर्लांग 4

2) आगरा फतेहपुर सीकरी मार्ग, मील 11, फर्लांग 1

3) आगरा फतेहपुर सीकरी मार्ग, मील 12, फर्लांग 7

4) आगरा फतेहपुर सीकरी मार्ग, मील 15, फर्लांग 2

5) आगरा फतेहपुर सीकरी मार्ग, मील 4, फर्लांग 3

आगरा मथुरा मार्ग में स्थित कोस मीनार –

1) आगरा मथुरा मार्ग, मील 6, फर्लांग 7

2) आगरा मथुरा मार्ग, मील 9, फर्लांग 4

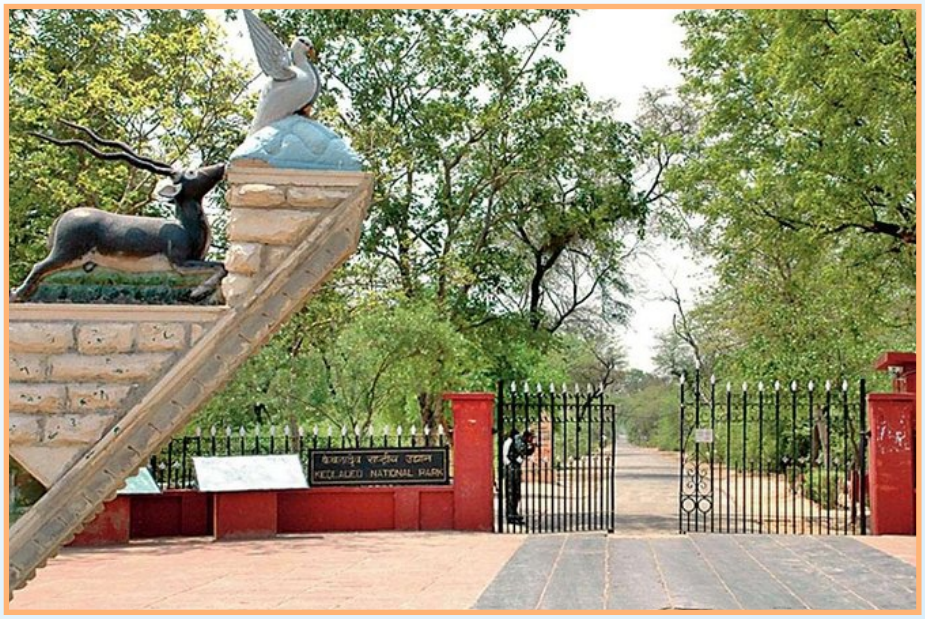
3) आगरा मथुरा मार्ग, मील 12, फर्लांग 6

इन्हीं मीनारों को देखकर सैनिक राहगीर यात्रा करते थे। तब डाक प्रेषण में भी इन्हीं मीनारों का सहारा लिया जाता था।

सराय सहारा, भेढ़कुर, मेहुअर क्वेराली होते हुए फतेहपुर सीकरी पहुँचा जाता है। बस अड्डे से कुछ पहले ही उतरकर एक मार्ग बुलन्द दरवाजा को जाता है। विशालकाय दरवाजा तक लगभग 51 सीढ़ियाँ चढ़कर पहुंचना होता है। इसके अंदर मस्जिद के अलावा कई प्राचीन स्मारक हैं, यहां से एक मार्ग जोधाबाई महल के लिए भी जाता है। यहां बुलन्द दरवाजा के अलावा शेख सलीम चिश्ती का मकबरा, खास महल, दीवान–ए–खास, दीवान–ए–आम, इत्यादि स्मारक दर्शनीय हैं।

फतेहपुर सीकरी से भरतपुर स्थित केवलादेव राष्ट्रीय पार्क जाया जा सकता है। भारतीय पर्यटकों के लिए 91 रुपये शुल्क लिया जाता है जबकि विदेशी पर्यटकों के लिए लगभग पांच सौ रूपया है। पार्क में घूमने के लिए आप चाहें तो रिक्शा, साईकिल भी ले सकते हैं।

यहां पार्क के अंतिम सिरे पर केवलादेव का एक प्राचीन मंदिर भी है। इस पार्क के बारे में कहा जाता है कि पहले यह क्षेत्र एक निचला क्षेत्र था। यमुना नदी का बाढ़ प्रभावित तटीय क्षेत्र भी शामिल था। अठारहवीं शताब्दी में भरतपुर राज्य के शासक महाराजा सूरजमल ने बांध बनवाया जो 3270 हेक्टेयर में फैला हुआ था। सन् 1850–99 के दौरान इस क्षेत्र को बत्तखों के आखेट हेतु और गांव के पशुओं के लिए चारागाह उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विकसित किया गया। सन् 1902 में तत्कालीन ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड कर्जन ने संगठित बत्तख आखेट स्थल के रूप में इसका औपचारिक रूप से उद्घाटन किया। सन् 1956 में इसे पक्षी विहार के रूप में अधिसूचित किया गया लेकिन सन् 1965 तक यहां आखेट होता रहा। वर्ष 1967 में इसे राजस्थान वन एक्ट 1953 के अंतर्गत संरक्षित वन क्षेत्र घोषित किया गया। सन् 1981 में एक राष्ट्रीय पार्क का दर्जा दिया



केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर

गया व जानवरों की चराई पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसे 1985 में यूनेस्को विश्व प्राकृतिक स्थल के रूप में शामिल किया गया। कोई भी ऐसा स्मारक या प्राकृतिक स्थल जो मानवता के लाभार्थ संरक्षण के योग्य हो, का विश्वदाय सूची में नामांकन किया जा सकता है।

यहां पार्क में रात्रि विश्राम के लिए फारेस्ट लॉज भी हैं व इसके पास ही सालिम अली इंटरप्रिटेशन सेंटर भी है जिसने पार्क में पर्यावरण क्षति के कारण जीव जन्तुओं पर हो रहे प्रभावों को उजागर किया है।

मुख्य गेट से लेकर श्री केवलादेव मंदिर तक का पथ लगभग बारह–तेरह कि.मी. का है जिसके दोनों तरफ कई किस्मों के पक्षी चहचहाते हुए दिखाई देते हैं। प्रसिद्ध पक्षी विशेषज्ञ सालिम अली ने सन् 1935 में यहां आकर पक्षियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां एकत्र की व तदुपरांत जीवन पर्यन्त उनका लगाव इससे बना रहा। उनके नेतृत्व में 1980 में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान परिवेश परियोजना की शुरूआत बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी द्वारा की गई।

पक्षी अभ्यारण्य से बाहर आकर भरतपुर किला व म्यूजियम देखने जाया जा सकता है। भरतपुर बाजार में से होते हुए मुख्य द्वार की दूरी लगभग डेढ़ दो कि.मी. होगी। वहां के प्राचीन राजाओं से जुड़ी वस्तुएं म्यूजियम में प्रदर्शित की गई हैं। इसके अलावा कई प्राचीन मूर्तियां भी दर्शनीय हैं। यह म्यूजियम भरतपुर दुर्ग के अंदर स्थित हैं। लोहगढ़ के उपनाम से प्रसिद्ध यह दुर्ग महाराजा सूरजमल द्वारा 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में सन् 1733 ई. में बनवाया गया। इस दुर्ग में मोती महल, किशोरी महल, कचहरी कला कमरा खास, महल खास, फौजदार हवेली, बिहारी जी का मंदिर इत्यादि भी स्थित हैं। पाषाण खंडों से बनी ऊंची प्राचीरयुक्त 2872 मीटर परिधि वाले इस आयताकार दुर्ग को 34 बुर्जों के द्वारा मजबूती प्रदान की गई है। इसके चारों ओर 41 से 72 मी. चौड़ी तथा 8 से 10 मी. गहरी एक खाई बनी है। इस दुर्ग में प्रवेश हेतु दो विशाल द्वार हैं – उत्तर की ओर अष्टधातु एवं दक्षिण की ओर चौबुर्जा। इस दुर्ग के अंदर तत्कालीन दरबार एवं महल, हवेलियां, अस्पताल, तोप रखने के स्थान, आवासीय भवन, मंदिर तथा जवाहर बुर्ज स्थित हैं। इस बुर्ज का निर्माण महाराजा सूरजमल (1756–63 ई.) ने करवाया था तथा इसके ऊपर स्थित तीन मंडप जवाहर सिंह (1763–68 ई.) ने दिल्ली विजय के उपलक्ष्य में बनवाये थे। इनमें से एक मंडप में पौराणिक आख्यानों का चित्रण है।



केवलादेव मंदिर, भरतपुर का दृश्य

चुनावी सफरनामा : 1951–1952 से 2024 तक



अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, मुख्यालय
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

दुनिया के सबसे बड़े लोकतान्त्रिक देश भारत में चुनावों को एक पर्व की तरह मनाया जाता है। यह किसी भी लोकतान्त्रिक देश के लिए चुनाव सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। हमारे यहाँ त्रिस्तरीय चुनाव होते हैं – लोकसभा, विधान सभा तथा नगर ग्राम पंचायत चुनाव। इसके आलावा मंडी समिति जैसे निकायों के भी चुनाव सम्पूर्ण पारदर्शिता के साथ कराए जाते हैं। भारतीय संसद द्विसदनीय प्रणाली का पालन करती है। इसके दो सदन हैं, अर्थात् राज्यसभा (उच्च सदन) और लोकसभा (निचला सदन)। जिस पार्टी (या गठबंधन) को लोकसभा में बहुमत मिलता है वह केंद्र सरकार बना लेती है। सरकार का कार्यकाल अधिकतम 5 वर्ष या जब तक पार्टी (या गठबंधन) को लोकसभा में बहुमत प्राप्त नहीं हो जाता, जो भी पहले हो, के लिए होता है।

पहली लोकसभा के गठन के लिए कराए गए चुनाव के साथ–साथ सभी राज्यों की विधानसभाओं के भी चुनाव हुए। 1947 में ब्रितानी हुकूमत से आजादी मिलने के बाद पहली बार 1951–52 में भारत में आम चुनाव होने निश्चित हुए। यह चुनाव सिर्फ इसलिए बेहद अहम नहीं था कि यह ऐतिहासिक चुनाव था या स्वतंत्र भारत का पहला चुनाव था बल्कि इसलिए भी अहम था कि सारी दुनिया की निगाहें इस पर टिकी थी। लोकसभा के साथ–साथ राज्यों की विधानसभाओं के भी चुनाव होने थे। मुख्य चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन के कुशल नेतृत्व में जब चुनाव सफलतापूर्वक संपन्न हुए तो दुनिया हैरान रह गई। साल 1952 से अब तक कुल 17 बार लोकसभा चुनाव हो चुके हैं और 18वें लोकसभा चुनाव का शंखनाद हो चुका है।

चुनौतियां:

एक ऐसा देश जहां औसतन हर 10 में मुश्किल से 2 लोग भी शिक्षित नहीं थे, वहां सफलतापूर्वक चुनाव कराना आसान नहीं था। 21 साल या उससे ऊपर के सभी महिला–पुरुषों को वोट देने का अधिकार प्राप्त था। घर–घर जाकर 17.3 करोड़ वोटरों को पंजीकृत करना ही अपने आप में बेहद चुनौतीपूर्ण था। ऐसी भी महिलाएं थीं, जो नाम पूछने पर अपना परिचय फलां की पत्नी या फलां की मां के तौर पर देती थीं। इसका परिणाम यह हुआ कि करीब अस्सी लाख महिलाओं का नाम मतदाता सूची में दर्ज नहीं किया जा सका। हालांकि इस चुनौती से निपटने के लिए चुनाव से पहले चुनाव आयोग की तरफ से बड़े पैमाने पर जनजागरूकता अभियान चलाया गया था। चुनाव

करवाने के लिए लगभग 56,000 लोगों को पीठासीन अधिकारी के पद पर नियुक्त किया गया था जिनकी सहायता के लिए करीब दो लाख अट्ठाईस हजार सहायकों और दो लाख चौबीस हजार पुलिस कर्मियों को लगाया गया था। पूरे भारत में दो लाख चौबीस हजार मतदान केंद्र (पोलिंग बूथ) बनाए गए थे। कुल 16500 लोगों को मतदाता सूची बनाने के लिए अनुबंध पर रखा गया था। पोलिंग बूथ पर पार्टियों या स्वतंत्र उम्मीदवारों के चुनाव चिह्न वाले अलग–अलग बैलट बॉक्स रखे गए ताकि वोटर अपने मतपत्र को संबंधित बैलट बॉक्स में डाल सकें। लोहे के दो करोड़ से ज्यादा बैलट बॉक्स बनाए गए और करीब 62 करोड़ बैलट पेपर छापे गए थे। तब परिवहन के सीमित संसाधन थे, ऐसे में पोलिंग बूथों तक बैलट बॉक्स पहुंचाना कितनी बड़ी चुनौती रही होगी, इसका सहज अंदाजा लगाया जा सकता है। आखिरकार इन सभी चुनौतियों से पार पाते हुए 1921 में भारतीय सिविल सेवा में चुने गए पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव सुकुमार सेन जिन्हें मुख्य चुनाव आयुक्त बनाकर दिल्ली लाया गया था, के नेतृत्व में चुनाव आयोग ने इस ऐतिहासिक चुनाव को सफलतापूर्वक संपन्न कराया।

आजादी के बाद से लोकसभा चुनाव के इतिहास पर एक नजरः

पहला लोक सभा चुनाव – 1952: (भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का दखल)

अवधि : 25 अक्तूबर 1951 से 21 फरवरी 1952

प्रमुख तथ्यों पर एक नजर : –

यह भारतीय गणराज्य में पहला चुनाव था जिसे 25 अक्तूबर 1951 से 21 फरवरी 1952 के मध्य सम्पन्न कराया गया। 489 सीटों के लिए 1949 उम्मीदवारों ने पर्चा भरा। ये सीटें 26 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 401 निर्वाचन क्षेत्रों में आवंटित की गई थीं। 314 निर्वाचन क्षेत्रों से एक–एक उम्मीदवार चुना जाना था जबकि 86 निर्वाचन क्षेत्रों से दो–दो उम्मीदवारों को चुना जाना था। उत्तरी बंगाल निर्वाचन क्षेत्र से तीन लोकसभा प्रतिनिधि चुने गए थे। एक निर्वाचन क्षेत्र से एक से अधिक प्रतिनिधि चुने जाने की यह व्यवस्था 1957 तक चली। कुल अर्ह मतदाताओं की संख्या लगभग 17.3 करोड़ थी। यूँ तो सभी पार्टियाँ जनसभाएं कर चुनाव प्रचार कर रही थीं, लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी अकेली पार्टी थी जिसको रेडियो पर प्रचार करने का मौका मिला था। वह भी आकाशवाणी पर नहीं, बल्कि रेडियो मॉस्को पर। यह रेडियो स्टेशन ताशकंद में अपने ट्रांसमीटर के जरिए कम्युनिस्ट पार्टी का चुनाव प्रचार करता था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) की तरफ से जवाहर लाल नेहरू ने अपनी पहली चुनावी सभा लुधियाना में की।

1952 के चुनाव का पहला वोट 25 अक्तूबर, 1951 को हिमाचल प्रदेश की चीनी तहसील में डाला गया। मतदाताओं को चुनाव परिणाम के लिए महीनों इंतजार करना पड़ा क्योंकि देश के दूसरे भागों में जनवरी और फरवरी, 1952 में ही मतदान कराया जा सका। सबसे अधिक 80 फीसदी मतदान केरल के कोट्टायम चुनाव क्षेत्र में हुआ जबकि मध्य प्रदेश के शहडोल चुनाव क्षेत्र में सबसे कम 20 फीसदी वोट डाले गए। पूरे देश व्यापक अशिक्षा के बावजूद करीब 60 फीसदी मतदाताओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। भारतीय जनतंत्र में लोगों के विश्वास की सबसे बड़ी मिसाल हैदराबाद से आई जहाँ कुछ साल पहले तक भारत सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलने वाले निजाम हैदराबाद ने सबसे पहले आकर मतदान किया।

चुनावों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) ने 364 सीटें जीतीं। केवल दो अन्य पार्टियों ने दोहरे अंक में सीटें जीतीं। सीपीआई ने 16 सीटों के साथ और सोशलिस्ट पार्टी ने 12 सीटों के साथ जीत हासिल की। कांग्रेस को कुल डाले गए वोटों का 45% वोट मिला। वर्तमान भाजपा के पिछले अवतार भारतीय जनसंघ (बीजेएस) ने 49 सीटों पर चुनाव लड़कर केवल 3 सीटों पर विजय प्राप्त की। कांग्रेस के बाद सबसे ज्यादा सीटें निर्दलीयों ने जीतीं। सभी दलों की महिला उम्मीदवारों ने 22 सीटें जीतीं जबकि मुस्लिम सांसदों की संख्या 21 थी। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 46.5 वर्ष थी। आश्चर्यजनक रूप से बंबई से जे.बी. कृपलानी और बी.आर. अंबेडकर एवं राजस्थान से जय नारायण व्यास चुनाव हार गए थे।

17 अप्रैल 1952 को प्रथम लोकसभा का गठन हुआ था। इसकी पहली बैठक 13 मई, 1952 को आयोजित की गई थी। गणेश वासुदेव मावलंकर पहली लोकसभा के अध्यक्ष थे जो 15 मई 1952 से 27 फरवरी 1956 तक इस पद पर रहे। पहली लोकसभा के उपाध्यक्ष एम. अनंतशयनम अय्यंगर थे। उनका कार्यकाल 30 मई 1952 से सात मार्च 1956 तक था। चुनावों के बाद प्रधानमंत्री चुने गए नेहरू जी ने इलाहाबाद ईस्ट और जौनपुर वेस्ट की संयुक्त सीट से चुनाव जीता था। बाद में इस सीट का नाम बदल कर फूलपुर कर दिया गया।

प्रथम आम चुनावों में ऑडिटर जनरल की भूमिका:

इस दिलचस्प वाकये का जिक्र दुर्गादास ने अपनी पुस्तक "From Curzon to Nehru and after" में किया है। नेहरू जी को यह ठीक नहीं लग रहा था कि वे उस हवाई जहाज़ में चुनाव प्रचार करें जिसे वे प्रधानमंत्री के तौर पर इस्तेमाल करते थे। दूसरी तरफ न तो उनके पास और न तो कांग्रेस पार्टी के पास इतना धन था कि वे चुनाव प्रचार के लिए एक जहाज़ को किराए पर ले सकें। तब उस समय के ऑडिटर जनरल श्री वी. नरहरी राव ने नेहरू जी की मदद के लिए एक अच्छा फॉर्मूला सुझाया जिसमे कहा गया कि भारत के प्रधानमंत्री की सुरक्षा के साथ कोई समझौता न किया जाए। ये तभी हो सकता था जब वे हवाई जहाज़ से यात्रा करें। हवाई जहाज़ से यात्रा करने का एक फायदा ये होगा कि उनकी सुरक्षा के लिए रेल की तुलना में कम लोगों की ज़रूरत पड़ेगी। चूँकि प्रधानमंत्री की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी सरकार की है, इसलिए सरकार को ये ख़र्च वहन करना चाहिए। अतः नियम बनाया गया कि नेहरू सरकार को, एक व्यक्ति को जहाज़ से ले जाने का किराया वहन करेंगे। उनके साथ चलने वाले सुरक्षाकर्मियों का किराया सरकार देगी और अगर उनकी पार्टी का कोई सदस्य उनके साथ जहाज़ में है तो वो अपना किराया खुद वहन करेगा।

दूसरा लोक सभा चुनाव – 1957: (पहली बार बूथ कैपचरिंग का गवाह बना देश)

अवधि : 24 फरवरी 1957 से 14 मार्च 1957

494 सीटों में से, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) ने 371 सीटें जीतीं। केवल दो अन्य पार्टियों ने दोहरे अंक में सीटें जीतीं। सीपीआई ने 27 सीटों के साथ और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (पीएसपी) ने 19 सीटों के साथ जीत हासिल की। कांग्रेस को कुल वोट का 48% वोट मिला। बीजेएस ने केवल 4 सीटें जीतीं। इस चुनाव में महिला सांसदों की संख्या मे कोई बढ़ोतरी नहीं हुई यानि की उनकी संख्या 22 ही रही। मुस्लिम सांसदों की संख्या इस बार 23 थी। एक बार

फिर, कांग्रेस के बाद निर्दलीयों ने सबसे ज्यादा सीटें जीतीं। इस बार 92 सीटें ऐसी थीं जिनमे से दो संसद चुने जाने थे। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 46.7 वर्ष थी। अटल बिहारी बाजपेयी पहली बार संसद के लिए चुने गए। दूसरे आम चुनाव के दौरान ही देश पहली बार बूथ कैपचरिंग जैसी घटना का गवाह बना। यह घटना बिहार के बेगूसराय जिले में रचियारी गांव में हुई थी। यहां के कछारी टोला बूथ पर स्थानीय लोगों ने कब्जा कर लिया। फूलपुर सीट से निर्वाचित जवाहरलाल नेहरू पुनः प्रधानमंत्री चुने गए। दूसरी लोकसभा के दौरान विपक्ष का कोई आधिकारिक नेता (एलओपी) नहीं था।

तीसरा लोक सभा चुनाव – 1962: (अमिट स्याही का प्रथम बार प्रयोग)

अवधि : 19 फरवरी 1962 से 25 फरवरी 1962

494 सीटों में से, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) ने 361 सीटें जीतीं। इन चुनावों में, चार अन्य पार्टियों (सीपीआई, जनसंघ, स्वतंत्र पार्टी और पीएसपी) ने दोहरे अंक में सीटें जीतीं। कांग्रेस का वोट शेयर पिछले चुनाव के 48% से घटकर लगभग 45% रह गया। इस चुनाव मे 31 महिलाएं संसद मे देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनी गईं। एक सीट से दो सांसद चुने जाने वाली व्यवस्था इन चुनावों से समाप्त कर दी गई। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 49.4 वर्ष थी। जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री चुने गए। लेकिन 1964 में उनके निधन के बाद, गुलजारी लाल नंदा को अंतरिम पीएम बनाया गया, जिनके बाद लाल बहादुर शास्त्री आए, जो मृत्युपर्यंत लगभग 19 महीने तक इस पद पर रहे। इसके बाद रायबरेली सीट से चुनी गईं इंदिरा गांधी ने सत्ता संभाली। इन चुनावों में अमिट स्याही का पहली बार प्रयोग हुआ।

चौथा लोकसभा चुनाव – 1967: (राज्य विधानसभाओं के साथ आखिरी चुनाव)

अवधि : 17–21 फरवरी 1967

इस चुनाव में मतदाताओं की संख्या लगभग 25 करोड़ थी। इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने 520 में से 283 सीटें जीतकर लगातार चौथी बार सत्ता हासिल की। लेकिन कांग्रेस का वोट शेयर घटकर करीब 41 फीसदी रह गया। इन चुनावों में, छह अन्य पार्टियों ने दोहरे अंकों में सीटें जीतीं, सी. राजगोपालाचारी की स्वतंत्र पार्टी ने 44 सीटें जीतीं और सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी के रूप में उभरी। चौथी बार हुए आम चुनाव में 29 महिलाएं ही संसद पहुँच सकीं अर्थात उनकी संख्या मे कमी आई। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 48.7 वर्ष थी। दिल्ली की सात संसदीय सीटें इसी चुनाव से की गईं। कांग्रेस के मौजूदा सांसदों के हारने का सिलसिला इसी चुनाव से प्रारम्भ हुआ। अपने पुराने निर्वाचन क्षेत्र रायबरेली से चुनी गईं इंदिरा गांधी दूसरी बार प्रधानमंत्री बनीं। इस चुनाव से पहले तक राज्य विधान सभाओं के चुनाव लोकसभा के चुनाव के साथ कराए जाते थे परंतु इस चुनाव के बाद वह परंपरा भी समाप्त हो गई।

पाँचवां लोकसभा चुनाव – 1971: (पहली बार समय से पूर्व चुनाव)

अवधि : 1 मार्च 1971 से 10 मार्च 1971

ये चुनाव पिछले चुनाव जो 1967 में हुए थे, के पाँच साल बाद अर्थात् 1972 मे होने थे परंतु राजनीतिक कारणों से एक साल पूर्व ही आयोजित करने पड़े। इंदिरा गांधी के कांग्रेस से अलग होने के बाद यह पहला चुनाव था। उनकी पार्टी ने 518 में से 352 सीटें जीतीं, जबकि मोरारजी देसाई के नेतृत्व में कांग्रेस के

दूसरे गुट ने केवल 16 सीटें जीतीं। इस बार महिला सांसदों की संख्या और भी कम होकर 21 ही रह गई। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 49.2 वर्ष थी। इस चुनाव मे 'गरीबी हटाओ' नारे का सूत्रपात हुआ। एक बार फिर रायबरेली से चुनी गईं इंदिरा गांधी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनीं।

छठा लोकसभा चुनाव – 1977: (पहली बार कांग्रेस सत्ता से बाहर)

अवधि : 16 मार्च 1977 से 20 मार्च 1977

आपातकाल के बाद ये पहले चुनाव थे। इन चुनावों में भारतीय लोक दल (बीएलडी या जनता पार्टी) पहली बार कांग्रेस को हराकर विजयी हुई। बीएलडी का गठन 1974 के अंत में स्वतंत्र पार्टी सहित श्रीमती इंदिरा गांधी का विरोध करने वाली सात पार्टियों के विलय से हुआ था। 1977 में, बीएलडी ने जनसंघ और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (संगठन) के साथ मिलकर जनता पार्टी बनाई। नवगठित जनता पार्टी ने 1977 का चुनाव बीएलडी चिन्ह पर लड़ा और स्वतंत्र भारत की पहली ऐसी सरकार बनाई जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा शासित नहीं थी। बीएलडी ने 542 सीटों में से 295 सीटें जीतीं, जबकि कांग्रेस केवल 154 सीटें जीत सकी। इस बार सबसे कम महिलाएं संसद पहुँच सकीं। संसद में मात्र 19 महिलाओं को ही प्रतिनिधित्व मिल सका जबकि 34 मुस्लिमों को संसद में प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 52.1 वर्ष थी अर्थात् यह अब तक की सबसे 'प्रौढ़' लोकसभा थी। प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी भी अपनी सीट नहीं बचा पाईं। "दूसरी आजादी" और "सिंहासन खाली करो कि जनता आती है" जैसे नारे इस चुनाव की देन थे। गुजरात के सूरत निर्वाचन क्षेत्र से चुने गए जनता पार्टी के मोरारजी देसाई प्रधान मंत्री बने, लेकिन 1979 में जनता गठबंधन में कुछ दलों के हटने के बाद उन्हें पद छोड़ना पड़ा। उनके पद से हटने के बाद चौधरी चरण सिंह उनके उत्तराधिकारी बने।

सातवां लोकसभा चुनाव – 1980: (सर्वाधिक मुस्लिम सांसदों को चुनने वाला चुनाव)

अवधि : 3 जनवरी 1980 और 6 जनवरी 1980

गठबंधन सरकार के प्रयोग की विफलता के बाद, इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस (आई) ने प्रस्तावित 529 सीटों में से 353 सीटें जीतकर सत्ता में वापसी की। पूर्ववर्ती जनता गठबंधन की पार्टियाँ पिछले चुनाव में अपना प्रदर्शन नहीं दोहरा सकीं। विपक्ष का कोई नेता (एलओपी) नहीं था। इसी चुनाव के दौरान इन्दिरा गांधी की पार्टी का नाम बदलकर कांग्रेस (आई) रखा गया था। आठवीं लोकसभा के गठन से पूर्व ही आज की भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई थी। उस वक्त कांग्रेस (आई) का नारा था "काम करने वाली सरकार को चुनिए"। सातवीं लोकसभा का कार्यकाल 18 जनवरी 1980 से 31 दिसंबर 1984 रहा। कुल सांसदों मे से लगभग 9.3% अर्थात 49 मुस्लिम सांसद होने के कारण लोकसभा के इतिहास में सबसे अधिक मुस्लिम सांसदों वाली लोकसभा सातवीं लोकसभा बनी। इस चुनाव मे महिलाओं की भी संख्या बढ़ी। 28 महिलाओं ने इस बार संसद में पदार्पण किया जबकि इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 49.9 वर्ष थी। इस बार अपने पुराने लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र रायबरेली को छोड़ आंध्र प्रदेश के मेडक लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से चुनी गईं इन्दिरा गांधी प्रधानमंत्री चुनी गईं।

आठवां लोकसभा चुनाव – 1984: (पहली बार किसी पार्टी का चार सौ पार)

अवधि : 24, 27 और 28 दिसंबर 1984

इंदिरा गांधी की हत्या के बाद, पूरे देश में मृत प्रधानमंत्री एवं उनके परिवार के प्रति सहानुभूति की लहर दौड़ गई। फलस्वरूप राजीव गांधी (इंदिरा गांधी के पुत्र) के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी भारी जीत के साथ सत्ता में आई। कांग्रेस ने 514 में से 404 सीटें जीतीं। यही नहीं, इस बार संसद के लिए चुनी गई महिलाओं की संख्या में भी अच्छी खासी बढ़ोतरी हुई। उनकी संख्या 42 तक पहुँच गई जबकि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने 2 सीटें जीतकर चुनावी शुरुआत की, एक गुजरात में और दूसरी आंध्र प्रदेश (अब तेलंगाना) में। मुस्लिमों ने अपने प्रदर्शन को जारी रखा हालांकि उनकी संख्या थोड़ी सी गिरकर 46 पर पहुँच गई। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 51.4 वर्ष थी। अमेठी संसदीय क्षेत्र से चुने गए राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने।

नौवां लोकसभा चुनाव – 1989: (पहली बार त्रिशंकु सदन का गठन)

अवधि: 22 एवं 26 नवंबर 1989

इन चुनावों के परिणामस्वरूप पहली बार त्रिशंकु सदन का गठन हुआ और किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला। 529 सीटों में से कांग्रेस ने 197, जनता दल ने 143 और भाजपा ने 85 सीटें जीतीं। महिलाओं ने अपना पिछला प्रदर्शन कायम नहीं रखा और इस बार मात्र 29 महिलाएं ही संसद का मुंह देख सकीं। मुसलमान सांसद भी इस चुनाव में अपनी पिछली ताकत नहीं दिखा सके और संसद में उनकी संख्या 33 पर आ गई जबकि इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 51.3 वर्ष थी। भाजपा ने शानदार बढ़त हासिल की। जनता दल ने भाजपा और वामपंथी दलों के बाहरी समर्थन से राष्ट्रीय मोर्चा सरकार बनाई। फतेहपुर संसदीय क्षेत्र से चुने गए विश्वनाथ प्रताप सिंह (वी.पी. सिंह) प्रधानमंत्री भी चुने गए। जनता दल में उनके प्रतिद्वंद्वी चन्द्रशेखर ने 1990 में अलग होकर समाजवादी जनता पार्टी बनाई। नतीजा यह हुआ कि वी.पी. सिंह को पद छोड़ना पड़ा। फिर 1990 में कांग्रेस के बाहरी समर्थन से बलिया (उत्तर प्रदेश) से निर्वाचित चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री बने। यह प्रयोग चार माह तक चला और मजबूरन केवल 2 वर्षों में आम चुनाव कराने पड़े।

दसवां लोकसभा चुनाव – 1991: (पहली बार दक्षिण भारतीय प्रधानमंत्री, प्रतिशत के संदर्भ में अब तक का सबसे कम मतदान इस चुनाव में रहा)

अवधि : 20 मई , 12 जून एवं 15 जून 1991

इन चुनावों में भी किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिल सका। कांग्रेस ने अपना प्रदर्शन थोड़ा सुधारा और 521 में से 232 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी जबकि भाजपा ने 120 सीटें जीतीं। प्रतिशत के संदर्भ में अब तक का सबसे कम मतदान इस चुनाव में रहा मगर महिलाओं का प्रतिशत बढ़ा। इस चुनाव में 37 महिलाएं संसद पहुँचीं जबकि 28 मुस्लिम संसद के लिए चुने गए। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 51.4 वर्ष थी। पी.वी. नरसिम्हा राव ने जो उस समय संसद के किसी भी सदन के सदस्य नहीं थे, अल्पमत सरकार का नेतृत्व किया और प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठने वाले दक्षिण भारत के पहले व्यक्ति बने। हालांकि नवंबर 1991 में आंध्र प्रदेश के नांदयाल निर्वाचन क्षेत्र से उन्हें लोकसभा के लिए चुना गया था।

उन्हें आर्थिक सुधारों की शुरुआत करने और डा. मनमोहन सिंह की देश से पहचान कराने का श्रेय दिया जाता है जो उनके मंत्रिमंडल में वित्तमंत्री तथा बाद में प्रधान मंत्री बने।

ग्यारहवां लोकसभा चुनाव – 1996: (तेरह दिनों की सरकार, तीन प्रधानमंत्री)

अवधि : 27 अप्रैल , 2 मई एवं 7 मई 1996

इन चुनावों में भाजपा का प्रदर्शन थोड़ा सुधरा एवं वह त्रिशंकु सदन में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। भाजपा ने 161, कांग्रेस ने 140 और जनता दल ने 46 सीटें जीतीं। इस चुनाव से क्षेत्रीय दलों का उदय शुरू हुआ। क्षेत्रीय दलों ने 129 सीटें जीतीं। उनमें से प्रमुख थे टीडीपी, शिवसेना और डीएमके। महिलाओं ने अपना पिछला प्रदर्शन सुधारा और इस बार 40 महिलाओं ने संसद में कदम रखा। मुसलमान सांसदों के लिए तसल्ली की बात यह रही कि उनकी संख्या अगर बढ़ी नहीं तो घटी भी नहीं। वे 28 पर स्थिर रहे। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 52.8 वर्ष थी अर्थात इस लोकसभा ने "प्रौढ़ता" में छठी लोकसभा का रिकॉर्ड तोड़ा। प्रचलित परंपरा के मुताबिक राष्ट्रपति ने चुनाव के बाद सबसे बड़े दल अर्थात बीजेपी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। भाजपा ने गठबंधन बनाने की कोशिश की, लेकिन ज्यादा दूर तक नहीं जा सकी और 13 दिनों में लखनऊ संसदीय सीट से चुने गए अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा। कांग्रेस पार्टी ने सरकार बनाने से इनकार कर दिया, लेकिन जनता दल और 'संयुक्त मोर्चा' बनाने वाली अन्य छोटी पार्टियों को बाहर से समर्थन देने का फैसला किया। अचानक, कर्नाटक के एच.डी. देवेगौड़ा को प्रधानमंत्री चुन लिया गया और वह 18 महीने तक रहे, बाद में उन्हें भी कार्यकाल पूरा किए बिना पद छोड़ना पड़ा और इन्द्र कुमार गुजराल उनके उत्तराधिकारी बने।

बारहवां लोकसभा चुनाव – 1998: (सबसे छोटे कार्यकाल – 413 दिन वाली लोकसभा का गठन)

अवधि : 16, 22 एवं 28 फरवरी 1998

इस बार भी भाजपा 543 में से 182 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। कांग्रेस ने 141 सीटें जीतीं और अन्य क्षेत्रीय दलों ने 101 सीटें जीतीं। महिलाओं ने अपना सुधरा हुआ प्रदर्शन जारी रखा और इस बार संसद में उनकी संख्या 43 तक पहुँच गई। इस बार मुस्लिम सांसदों की संख्या में मामूली वृद्धि हुई और वे एक पायदान आगे बढ़कर 29 हो गए। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 46.4 वर्ष थी। भाजपा ने अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) का गठन किया। अटल बिहारी वाजपेयी ने दूसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली पर उनकी सरकार लंबे समय तक नहीं चल सकी और अन्नाद्रमुक द्वारा समर्थन वापस लेने के बाद उन्हें 13 महीने के कार्यकाल के बाद इस्तीफा देना पड़ा।

तेरहवां लोकसभा चुनाव – 1999: (पहली बार कांग्रेस से इतर किसी गठबंधन का पाँच साल का कार्यकाल पूरा)

अवधि : 5 सितंबर और 3 अक्तूबर 1999

इस चुनाव में भी भाजपा 182 सीटों के साथ फिर से सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी जबकि कांग्रेस केवल 114 सीटें जीत सकी। इस बार क्षेत्रीय दलों ने 158 सीटें जीतीं। महिलाओं ने भी इस बार बेहद दमदार प्रदर्शन किया और लोकसभा में अपनी संख्या को 49

तक पहुंचा दिया। मुस्लिमों सांसदों की संख्या में थोड़ा और सुधार हुआ और वह बढ़कर 32 हो गई। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 55.5 वर्ष थी। यह लोकसभा ग्यारहवीं लोकसभा से भी भी "वरिष्ठ" थी और अब तक की सबसे "प्रौढ़" लोकसभा है। भाजपा इस बार अधिक स्थिर एनडीए बनाने में सफल रही और यह पहली बार था कि कोई गैर–कांग्रेसी गठबंधन पूरे पांच साल तक चला। लखनऊ संसदीय सीट से चुने गए अटल बिहारी वाजपेयी ने तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली।

चौदहवां लोकसभा चुनाव – 2004: (पहली बार ईवीएम से चुनाव)

अवधि : 20 अप्रैल, 26 अप्रैल, 5 मई एवं 10 मई 2004

इस बार भाजपा का प्रदर्शन आशानुरूप नहीं रहा और वह केवल 138 सीटें जीत सकी, जबकि कांग्रेस ने अपनी सीटें बढ़ाकर 145 कर लीं। इस बार महिलाओं के प्रदर्शन में थोड़ी गिरावट आई और लोकसभा में उनकी संख्या घटकर 45 तक आ गई। मुस्लिम सांसदों ने चुनावों मे अपना सुधरा हुआ प्रदर्शन जारी रखा और इस बार वे 36 पर पहुँच गए। क्षेत्रीय दलों ने 159 सीटों के साथ अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराई वहीं दूसरी ओर भाजपा ने हार मान ली जिसके फलस्वरूप कांग्रेस ने अन्य दलों के समर्थन और वाम दलों के बाहरी समर्थन से संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) का गठन किया। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 52.2 वर्ष थी। पी.वी. नरसिम्हा राव की सरकार में आर्थिक सुधारों के पुरोधा एवं वित्तमंत्री रहे राज्यसभा सदस्य डा. मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री चुना गया।

पंद्रहवां लोकसभा चुनाव – 2009: (प्रथम बार दो मुख्य चुनाव आयुक्तों के नेतृत्व में चुनाव)

अवधि: 16 अप्रैल 2009 से 13 मई 2009 तक पाँच चरणों में

यह चुनाव कांग्रेस ने श्रीमती सोनिया गांधी के नेतृत्व में लड़ा वहीं दूसरी ओर भाजपा नीत गठबंधन (एनडीए) का नेतृत्व लालकृष्ण आडवाणी कर रहे थे। कांग्रेस ने इस बार अपना प्रदर्शन सुधार कर 206 सीटों पर बाजी मारी जबकि भाजपा केवल 116 सीटें जीत सकी। क्षेत्रीय दलों ने 146 सीटें जीतीं। इस चुनाव में महिलाओं की संख्या पहली बार 50 के पर चली गई। कुल मिलकर 59 महिलाएं संसद के लिए चुनी गईं। मुसलमान सांसदों की संख्या में इस चुनाव में गिरावट आई पर फिर भी उनकी संख्या 30 तक रही। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 53.7 वर्ष थी। कांग्रेस के नेतृत्व वाला गठबंधन (यूपीए) लगातार दूसरी बार सत्ता में आया। राज्यसभा सदस्य डॉ. मनमोहन सिंह ने दूसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली।

सोलहवां लोकसभा चुनाव – 2014: (अब तक के लोकसभा चुनावों का सर्वाधिक मतदान प्रतिशत)

अवधि : 7 अप्रैल से 12 मई 2014 तक नौ चरणों में

भाजपा ने अकेले 282 सीटों पर विजय प्राप्त करके अपने दम पर बहुमत हासिल किया, जबकि कांग्रेस ने सिर्फ 44 सीटों के साथ आम चुनावों में अपना अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन दर्ज किया। कांग्रेस से ज्यादा सीटें देश की महिलाओं ने जीतीं। मुस्लिम सांसदों की संख्या इस बार 1957 के चुनावों से भी एक कम रही

अर्थात इस बार मात्र 22 सांसद ही चुने गए। वहीं दूसरी ओर कुल 15 राजनीतिक दलों से 62 महिलाओं ने संसद की दहलीज को पार किया। सबसे अधिक 13 महिलाएं उत्तर प्रदेश से चुनी गई थीं। जबकि संसदीय सीटों के प्रतिशत के रूप में पश्चिम बंगाल से सर्वाधिक 29% महिलाएं चुनी गईं। सबसे अधिक 30 महिलाएं भाजपा के टिकट पर चुनी गईं जबकि महिला सांसदों के मामले में अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस का दूसरा स्थान है। महिला सदस्यों की औसत आयु 47 वर्ष आँकी गई जबकि पुरुषों के मामले में यह आंकड़ा 54.6 वर्षों का है। 315 सांसद पहली बार चुने गए जबकि 62 मे से 40 महिलाएं पहली बार निर्वाचित हुई हैं। इस लोकसभा मे विविध व्यवसाय वाले वर्गों का प्रतिनिधित्व है परंतु "कृषि एवं सामाजिक कार्यकर्ता" वर्ग से सर्वाधिक सदस्य चुने गए थे। आम आदमी पार्टी ने 413 सीटों पर अपनी जमानत खो दी जो एक कीर्तिमान था। पिछला कीर्तिमान "दूरदर्शी पार्टी" का था जो उसने वर्ष 1991 में 321 सीटों पर अपनी जमानत जब्त करवा कर बनाया था। 1984 के बाद यह पहली बार था कि किसी पार्टी ने अपने दम पर बहुमत हासिल किया। इस लोकसभा के सदस्यों की औसत आयु 53.8 वर्ष थी। वाराणसी और वड़ोदरा संसदीय क्षेत्र से चुने गए नरेंद्र मोदी भाजपा के नेता और प्रधानमंत्री चुने गए।

सत्रहवां लोकसभा चुनाव – 2019: (चुनी गई महिला सांसदों की सर्वाधिक संख्या)

अवधि : 11 अप्रैल से 19 मई 2019 तक सात चरणों में

इस आम चुनाव में भाजपा ने बढ़े हुए जनादेश के साथ जीत हासिल की। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली बीजेपी ने अपने दम पर 303 सीटें जीतीं और अपने सहयोगियों (एनडीए) के साथ 350 का आंकड़ा पार कर लिया। जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी के बाद नरेंद्र मोदी भारत के इतिहास में लगातार दो बार एक ही पार्टी को बहुमत हासिल करने वाले तीसरे व्यक्ति बन गए। कांग्रेस को एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा और वह केवल 52 सीटें ही जीत पाई। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी अमेठी से चुनाव हार गए। 17वीं लोकसभा में महिला राजनेताओं की अब तक की सबसे अधिक संख्या 78 यानी लगभग 14% है। पिछली लोकसभा में 62 महिला सांसद थीं। इस लोकसभा में 27 मुस्लिम सांसद चुने गए हैं जिसमें सर्वाधिक 6 सांसद उत्तर प्रदेश से हैं। 17वीं लोकसभा की औसत आयु 54 वर्ष बताई गई है और 12% सांसद 40 वर्ष से कम आयु के हैं। क्योंझर निर्वाचन क्षेत्र से बीजद की चंद्राणी मुर्मू 25 वर्ष, 11 महीने और नौ दिन की आयु में सबसे कम उम्र की सदस्य बनीं और सपा के शफीकुर रहमान बर्क संभल निर्वाचन क्षेत्र से 89 वर्ष की आयु में सबसे उम्रदराज सदस्य बने। शिक्षा के मामले में, 43% सांसदों के पास स्नातक स्तर की शिक्षा है, 25% स्नातकोत्तर हैं और 4% सदस्यों के पास डॉक्टरेट है। कुल संख्या में से 300 सदस्य पहली बार सदस्य के रूप में चुने गए हैं और 197 सदस्य लगातार दूसरी बार चुने गए हैं यानी वे 16वीं लोकसभा में भी सदस्य थे। सुल्तानपुर निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा सदस्य मेनका गांधी और बरेली निर्वाचन क्षेत्र से संतोष गंगवार आठवीं बार लोकसभा के लिए चुने गए हैं। धर्म के आधार पर, 90.4% सदस्य हिंदू हैं और 5.2% मुस्लिम हैं, बाकी, लगभग 4%, सिख, ईसाई और अन्य अल्पसंख्यक हैं।

17वीं लोक सभा की शुरुआत ऐतिहासिक पहले सत्र के साथ हुई जिसमें रिकार्ड 35 विधेयक पारित हुए थे और कुल 37 बैठकों में 280 घंटे कामकाज हुआ।

17वीं लोकसभा की प्रमुख उपलब्धियाँ:

- **कई प्रमुख विधेयकों का पारित होना** : 17वीं लोकसभा में 179 विधेयक (वित्त और विनियोग विधेयकों को छोड़कर) पारित किये गये। वित्त मंत्रालय और गृह मंत्रालय ने सबसे अधिक संख्या में (इनमें से प्रत्येक ने 15%) विधेयक प्रस्तुत किये, जिसके बाद विधि एवं न्याय मंत्रालय (9%) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (9%) का स्थान रहा। इनमें शामिल कुछ प्रमुख विधेयक निम्नलिखित हैं :

  – महिला आरक्षण विधेयक 2023

  – जम्मू–कश्मीर पुनर्गठन विधेयक 2019

  – मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त (नियुक्ति, सेवा की शर्तें एवं कार्यालय की अवधि) विधेयक, 2023

  – तीन श्रम संहिताएँ

  – डिजिटल डेटा संरक्षण विधेयक, 2023

  – भारतीय दंड संहिता 1860, फौजदारी प्रक्रिया संहिता 1973 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 को प्रतिस्थापित करने वाले तीन विधेयक।

- **शून्यकाल का सदुपयोग:**

  – 7वीं लोक सभा के पहले सत्र में शून्यकाल का जितना उपयोग किया गया शायद ही कभी किया गया हो। 37 दिनों के कामकाज में सांसदों ने शून्यकाल के दौरान 1066 मुद्दे उठाए जो एक रिकॉर्ड है। 18 जुलाई को तो शून्यकाल 4 घंटे 48 मिनट तक चला और इस दौरान रिकॉर्ड 161 सांसदों को बोलने का मौका मिला। 17वीं लोक सभा में अब तक शून्यकाल के दौरान 4648

अमिट स्याही : *इस समय तीस देशों में चुनावों में अमिट स्याही का प्रयोग किया जा रहा है। भारत में किसी भी लोकसभा चुनाव में अमिट स्याही की अपने नाम के अनुकूल ही एक अमिट भूमिका होती है जो 1962 के आम चुनाव से जारी है। इसका इस्तेमाल फर्जी मतदान को रोकने के लिए किया जाता है ताकि वोट दे चुका एक मतदाता दूसरी बार वोट न दे सके। इस प्रकार एक ईमानदार मतदान प्रक्रिया सुनिश्चित की जा सके। इस स्याही का रंग इतना पक्का होता है कि साबुन से रगड़–रगड़ कर साफ करने पर भी त्वचा से नहीं छूटता है। लगाए जाने के कुछ दिन बीत जाने के बाद ही धीरे त्वचा की मृत कोशिकाओं के साथ ही यह धीरे–धीरे छूटता है।*

निर्माण : *इस स्याही का निर्माण देश में एकमात्र कंपनी मैसूर पेंट्स एंड वार्निश लिमिटेड (एमपीवीएल) तैयार करती है हालांकि इस अमिट स्याही का आविष्कार राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला (नेशनल फिजिकल लैबोरेटरी) मे किया गया था। मैसूर के वाडियार राजवंश के कृष्णराज ने 1937 में पेंट्स की एक फैक्ट्री खोली और उसका नाम रखा – मैसूर लाख एंड पेंट्स। बाद में इसे कर्नाटक सरकार ने अधिग्रहीत कर लिया और यहाँ अमिट स्याही का उत्पादन प्रारम्भ हुआ।*

यह काम कैसे करता है : *चुनाव के दौरान लगने वाली इस स्याही को बनाने में सिल्वर नाइट्रेट नमक रसायन का उपयोग किया जाता है। जब यह स्याही मतदाता की अंगुली पर लगाई जाती है तो पलक झपकने के अंतराल में ही सिल्वर नाइट्रेट शरीर में मौजूद सोडियम के साथ सिल्वर क्लोराइड बनाने लगता है, जिससे यह नीली स्याही काले रंग की हो जाती है। सिल्वर नाइट्रेट एक ऐसा रसायन है जो पानी के संपर्क मे आकर गहरा होता जाता है और छूटता भी नहीं है साबुन भी इस पर बेअसर रहता है।*

गोपनीय सूत्र : इस अमिट स्याही का सूत्र आज तक गुप्त रखा गया है। न तो मैसूर पेंट्स एंड वार्निश लिमिटेड (एमपीवीएल) और न ही राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला (नेशनल फिजिकल लैबोरेटरी) ने ही इस स्याही के सूत्र को सार्वजनिक किया है। इसके अलावा किसी और कंपनी को इस स्याही का निर्माण करने का अधिकार नहीं है। इस बार आम चुनाव में इस स्याही की 26.6 लाख शीशियों की आवश्यकता है। यह भी ज्ञात हो कि 700 मतदाताओं के मतदान के लिए 10 मिली लीटर की एक शीशी का प्रयोग होता है। इसमें सबसे बड़ी खेप उत्तर प्रदेश और सबसे छोटी लक्षद्वीप भेजी गई है।

जनहित के मुद्दे सांसदों द्वारा सदन में उठाए गए हैं। वहीं नियम 377 के तहत भी 3039 मुद्दे लोक सभा सदस्य सदन के अंदर बीते तीन सालों में उठा चुके हैं।

अठारहवां लोकसभा चुनाव – 2024:

भारत में लोकसभा के 543 सदस्यों को चुनने के लिए 19 अप्रैल से 1 जून 2024 तक सात चरणों में आम चुनाव हो रहे हैं जिसके नतीजे 4 जून 2024 को घोषित किए जाएंगे। यह इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा चुनाव है, जो 2019 के भारतीय आम चुनाव को पीछे छोड़ देगा। निवर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जिन्होंने दूसरा कार्यकाल पूरा किया, लगातार तीसरे कार्यकाल के लिए प्रयास कर रहे हैं। एक अरब चालीस करोड़ लोगों की आबादी में से लगभग 97 करोड़ लोग मतदान करने के पात्र हैं। आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम राज्यों में राज्य विधान सभा चुनाव आम चुनाव के साथ–साथ 12 विधान सभाओं में 25 सीटों के लिए उपचुनाव इसी चुनाव के साथ होने हैं।

2024 आम चुनाव कैसे होंगे

2024 के चुनाव के लिए, 968 मिलियन लोग मतदान करने के पात्र हैं, जो 2019 के चुनाव से लगभग 150 मिलियन अधिक है। अरुणाचल प्रदेश में, मालोगम गांव में एकमात्र पंजीकृत मतदाता के लिए एक मतदान केंद्र स्थापित किया जाएगा, चुनावी कानूनों के कारण मतदान केंद्र सभी बस्तियों से दो किलोमीटर के भीतर रखे जाने का प्रावधान है। गुजरात में एक शिपिंग कंटेनर में भी मतदान केंद्र स्थापित किए जाएंगे, साथ ही मणिपुर में अंतरजातीय हिंसा के दौरान विस्थापित हुए लगभग 59,000 लोगों की मेजबानी करने वाले 320 राहत शिविरों में भी मतदान केंद्र स्थापित किए। दस लाख से अधिक मतदान केंद्रों के लिए लगभग 5.5 मिलियन इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों का उपयोग किया जाएगा, जबकि 15 मिलियन चुनाव कार्यकर्ताओं और सुरक्षा कर्मियों को चुनाव के संचालन का प्रबंधन करने का काम सौंपा जाएगा।

ऊपर दिए गए चुनाव संबंधी तथ्यों से स्पष्ट है कि शांतिपूर्ण ढंग से सत्ता परिवर्तन हेतु चुनाव करवाने हेतु हमारी सरकारें कितनी गंभीर रही हैं। सरकारें चाहे किसी भी दल की रही हों मगर सत्ता परिवर्तन का रास्ता हमारे सभी राजनीतिक दल शांतिपूर्ण चुनावों को ही मानते रहे हैं। हमारे लोकतंत्र को ऐसे ही नहीं विश्व का सबसे महान लोकतन्त्र कहा जाता है। आजादी के इतने साल हो गए मगर हमने आज तक अपने देश का सत्ता परिवर्तन हमेशा शांतिपूर्ण ही देखा है जबकि हमरे देश के साथ या उसके आसपास स्वतंत्र होने वाले देशों में ऐसा एकाध बार ही हुआ है। हमारे पड़ोसी देश का उदाहरण सामने है। एक दूसरे पड़ोसी देश में तो लोकतंत्र की मांग करने वाले छात्रों को ही सरेआम चौराहे पर फौज द्वारा गोलियों से भून दिया गया था। एक अन्य देश में विरोधी दल के सांसदों सहित भवन को ही नष्ट कर दिया गया था। ये हमारे महान देश के कर्णधारों द्वारा हमें सौंपी गई विरासत है जो हम आज इतने विधिसम्मत एवं सरल सत्ता परिवर्तन के साक्षी बन पा रहे हैं। हमें आशा है कि हमारी आने वाली राजनीतिक पीढ़ियाँ इस विरासत को और आगे बढ़ाएंगीं।

स्रोत:

1. चुनाव आयोग की वेबसाइट 2. शैक्षणिक वेबसाइट 3. विकिपीडिया 4. दैनिक जागरण 5. लोक क्षेत्र में उपलब्ध सूचनाएँ।

चरित्रहीन

संजय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
तमिलनाडु, चेन्नई–600018

ढ़ोल नगाड़ों का शोर बढ़ता जा रहा था। शादियों में होने वाले शोर को भी इस शोर ने पीछे छोड़ दिया था। हो भी क्यों ना? जिस गाँव के लोग सरकारी नौकरियों को तरसते हैं, उस गाँव के किसी लड़के का जिलाधिकारी के पद तक जाना अपने आप में बहुत बड़ी बात थी। मैं अपने घर में तीसरी मंजिल पर अपने छोटे से कमरे में लेटी हुई थी। इस शोर को सुनकर मेरी भी नींद टूट गई। मैंने देखा कि इस शोर को सुनकर अंजू भी गहने की पेटी को छोड़कर खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई और बड़े उत्साह से सामने का दृश्य देखने लगी। "अरे भाभी! अभी तक सोई हो। उठो तो, देखो उन लोगों की गाड़ी आ गयी है। बहुत सारे लोग आए हैं भाभी। अरे जरा देखो तो, रघुनाथ सिंह भी आए हैं। और भाभी इतनी सारी गाड़ियाँ एक साथ कभी भी अपने गाँव में नहीं देखी।" अंजु ने ऐसा समा बाँधा कि मैं भी खिड़की के पास आकर खड़ी हो गई। "रघुनाथ बाबा इतने बड़े नेता होकर खुद हमारे गाँव में आए हैं। ऐसा पहली बार हुआ है जब हमारे जिले में कोई लड़का जिलाधिकारी बना है, और वह भी हमारे गाँव से। अनुज ने इस गाँव का नाम रोशन कर दिया भाभी। देखो तो कितने सारे लोग जमा हैं और वह देखो भाभी बीच में जो गाड़ी लगी है उसी में अनुज खड़ा है। देखो तो कितना जँच रहा है अनुज! सही है, अधिकारी बनने के बाद बंदा अलग ही दिखने लगता है।" मैंने भी गौर किया अब अनुज कुछ अलग ही दिखता है। अब चेहरे पर वह मासूमियत नहीं दिखती जो 14 साल पहले थी। चेहरे की सख्ती मूंछे रखने से और अधिक बढ़ गई है। अब तो थोड़ा पेट भी निकला हुआ दिखता है। मैं अनुज को देखते ही पुराने ख्यालों में खो गई। कितना शर्मिला हुआ करता था वह कॉलेज के दिनों में। लड़कियों से बात करने में तो उसकी हालत ही खराब हो जाती थी। जब हम कॉलेज में नए–नए आए थे तो वह अलग सा ही रहता था, किसी से अधिक बात भी नहीं करता था। कॉलेज में हम हमेशा उसे सिर्फ अशोक के साथ ही देखते थे। अशोक ने ही बताया था कि वह थोड़ा परेशान है अपनी मानसिक बीमारी को लेकर, एक अजीब सी बीमारी जिसे सीजोफ्रेनिया (Schizophrenia) या मनोविदलन कहते हैं, जिसमें रोगी हर वक्त अपने विचारों में ही खोया रहता है। अनुज दिन में 15 घंटे सोता था, और जब जागता था तो अशोक के घर चला जाता था।

आज अनुज जो कुछ भी बना है वह उसका हकदार है। अपनी मानसिक बीमारी के बावजूद वह हमारी कक्षा का सबसे अच्छा विद्यार्थी था। मुझे आज भी याद है कॉलेज की एक वाद–विवाद प्रतियोगिता में उसने पूरे साक्ष्यों के साथ साबित कर दिया था कि भारत का इतिहास लाखों वर्ष

पुराना है। हमारे कॉलेज के सारे मार्क्सवादी प्रोफेसर देखते रह गए थे। उस दिन उसने बहुत सारे प्रशंसक बनाए थे जिसमें मैं भी थी। मेरा मन उस दिन अनुज से बात करने को बहुत हुआ था। सारे लोगों ने उसे घेर लिया था। मैं चाहकर भी उस दिन उससे बात नहीं कर पाई थी। आने वाले दिनों में अनुज से मेरी सारी मुलाकातें हमारे मित्रों के माध्यम से ही होती। मेरे मन पर अनुज ने ऐसा जादू कर डाला था कि मैं दिन भर उसी के बारे में सोचती रहती। सुबह उठकर कॉलेज जाने की बेताबी रहती क्योंकि मैं अनुज को देखना चाहती थी। क्लास के लेक्चर्स में मैं सबकी नजरें बचाकर अनुज को देख लेती थी। पर वह इतना शर्मिला था कि किसी लड़की की तरफ देखता भी नहीं था। एक बार ऐसे ही मैं किताबों की आड़ से उसे देख रही थी, अचानक से उसकी नजर मुझ पर पड़ी। मुझे देखकर वह घबरा सा गया था। मैं समझ नहीं पा रही थी कि मेरे साथ क्या हो रहा है? क्या इसी को प्यार कहते हैं? मेरे जीवन में यह नया मोड़ था। हर लड़की की तरह मैं भी बचपन की दहलीज लाँघ कर युवावस्था में प्रवेश कर रही थी। मैं ने अब कुछ ज्यादा ही सजना–संवरना शुरू कर दिया था। हर दिन नए–नए कपड़े पहनकर मैं कॉलेज जाती लेकिन वह तो ऐसा शर्मिला था कि मेरी तरफ देखता भी नहीं था। और एक दिन कुछ ऐसा हुआ जिसकी मैंने सपने में भी कल्पना नहीं की थी। अशोक ने आकर मुझे बताया कि अनुज भी मुझसे प्यार करता है। अशोक की बात सुनकर मेरा पूरा शरीर काँपने लगा था। अशोक ने मुझसे हाथ जोड़कर कहा "बस तुम, हाँ बस तुम ही श्रुति मेरे दोस्त को ठीक कर सकती हो। मैं जानता हूँ कि प्यार में बहुत ताकत होती है। वह तुम्हारे प्यार के भरोसे ठीक हो जाएगा। सिर्फ उससे एक बार बात कर लो। वह तुमसे अकेले में बात करना चाहता है।"

मुझे आज भी याद है वह बुधवार का दिन था। हमेशा कॉलेज देरी से आने वाला अनुज उस दिन जल्दी आ गया था। मैं उस दिन बहुत ही घबराई हुई थी। अशोक ने हमें कॉलेज के एक कमरे में बिठा दिया ताकि हम आराम से बात कर सके। उसने शर्माते हुए मुझसे पूछा था "क्या तुम मुझसे शादी करोगी?" मैंने शर्माते हुए अपनी मौन स्वीकृति दे दी थी। उस दिन मैं बहुत खुश थी। अनुज और उसके सारे दोस्त भी उस दिन बहुत खुश थे। अनुज ने हमारे कॉलेज की कैंटीन में बहुत बड़ी पार्टी दी थी। हम दोनों ने मिलकर एक नई जिंदगी जीने के सपने देखे थे। वह मुझसे कहता कि मुझे क्या पसंद हैं लड़का या लड़की? अगर हमारा लड़का हुआ तो हम उसका नाम अविनाश रखेंगे और लड़की हुई तो संध्या। मैं सकी बात पर खूब हँसती। मैं जैसे–तैसे उसे जानती गई मुझे उसकी अच्छाइयाँ पता चलने लगीं। वह बहुत नेक इंसान था। मेरा बहुत ख्याल रखता था। अपने आप को मानसिक बीमारी से मुक्त करने के लिए उसने अपने घर में मंदिर स्थापित करके पूजा–पाठ करना चालू कर दिया था। वह मेरे लिए कुछ बनाना चाहता था। उसने अशोक के साथ मिलकर आई.ए.एस. की तैयारी चालू कर दी थी। वह चाहता था कि जब वह मेरा हाथ माँगने मेरे पिता के पास जाए तो मेरे पिता उसे इंकार ना कर सकें। मैं जब भी कॉलेज जाने के लिए मेट्रो पकड़ने जाती तो वहाँ अनुज को अपना इंतजार करते हुए पाती क्योंकि वह मेरे घर से थोड़ी दूरी पर रहता था।

हालाँकि हम दोनों एक दूसरे के घर कभी नहीं गए थे। मुझे अपने घर पर पापा और भैय्या से बहुत डर लगता था कि कहीं वह अनुज को मेरे साथ ना देख लें। हम दोनों मेट्रो में साथ ही सफर करते। कालकाजी मेट्रो स्टेशन से राधा भी

हमारे साथ आ जाती। कॉलेज छूटने के बाद हम मेट्रो में घंटों खड़े रहकर बातें करते। हमारी मोहब्बत के किस्से धीरे–धीरे पूरे कॉलेज में फैलने लगे थे। सबसे अच्छी बात यह थी कि हम दोनों जाटों की बिरादरी से आते थे। मैं जानती थी कि जिस दिन अनुज की नौकरी लगी मेरे पापा हमारी शादी के लिए जरूर मान जाएँगे। एक दिन अनुज ने बातों–बातों में ही मेरा हाथ पकड़ लिया। मुझे अपने शरीर में एक करंट की अनुभूति हुई। मैंने अनुज का हाथ झटकते हुए उसे कहा कि जब तक हमारी शादी नहीं हो जाती तब तक तुम मुझे नहीं छू सकते। अनुज का मुँह देखते ही बनता था, उसका चेहरा लटक गया था। मैं उसके चेहरे को देखकर मन ही मन हँसने लगी। अनुज ने घर पर अपनी माँ को भी हमारे बारे में बता दिया था। लेकिन शायद हम ज्यादा दिन साथ नहीं रहने वाले थे। हर अच्छी चीज का एक दिन अंत होता है। एक दिन कॉलेज जाते समय कुछ लड़कों ने मुझसे छेड़खानी की। अनुज मेरे साथ था। उसने इसका प्रतिवाद किया, लेकिन वह 10 लड़के थे। उन्होंने अनुज को इतना मारा कि उसके माथे से खून निकलने लगा। वहीं अस्पताल में मेरा परिचय अनुज के परिवार से हुआ। मुझे उसके परिवार में सारे लोग बहुत अच्छे लगे। उसकी दोनों बहनें, तीनों भाई, माँ, पिताजी और दादाजी सब मुझे अपने से लगे। मैं जल्द से जल्द उस घर में दुल्हन बनकर जाने के सपने देखने लगी।

उन गुंडों से मुझे बचाने के कारण अनुज सबकी नजरों में हीरो बन गया था। कॉलेज में उसकी इज्जत और बढ़ गई थी, लेकिन उस एक घटना ने उसे बदलकर रख दिया। अब वह हमेशा मेरे साथ सतर्क होकर चलता। आसपास से जाने वाले किसी भी शख्स पर उसकी नजर रहती। उसे भीड़ में चलने वाला हर नौजवान छेड़खानी करने वाला ही दिखता। मैं अनुज के साथ अब असहज होती जा रही थी। उसका मेरे साथ इस तरह चलना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं था। मैं आजाद होकर चलना चाहती थी, हंसना चाहती थी लेकिन अनुज मेरे अगल–बगल एक दीवार खींच रहा था, भय और असहजता की दीवार। आए दिन हमारे झगड़े होने लगे। अब मुझे अनुज के अंदर कमियाँ दिखने लगीं। मुझे अब अनुज जरूरत से ज्यादा दुबला पतला और कमजोर दिखता। मैं बार–बार उसे कहती "तुम इतने दुबले पतले क्यों हो? मेरे पापा तुम्हें देखकर रिजेक्ट कर देंगे।" वह इन बातों को सुनकर घबरा जाता। मेरे दोस्त जिन्होंने कभी मेरे और अनुज के प्रेम को प्रोत्साहन दिया था वह भी मुझे कहते कि मुझे और बेहतर लड़का मिल सकता था। ईशिता मुझे बार–बार कहती "यार श्रुति सच बताऊँ, तुझे कोई भी लड़का मिल सकता है। तूने बहुत जल्दबाजी में यह फैसला कर लिया। तुझे यही सींकिया पहलवान मिला था। हाँ मानती हूँ कि देखने में वह सुंदर है पर उसकी पर्सनेलिटी देखी है। वह खुद अपने आप को नहीं संभाल सकता तो तुझे क्या संभालेगा।" मुझे ईशिता की बातों में सच्चाई दिखती। मुझे भी अब लगने लगा था कि मुझे अनुज से अच्छा लड़का मिल सकता है। मैं उसे बातों–बातों में कहती कि अगर हमारी शादी नहीं हुई तो तुम उदास मत होना और मन लगाकर पढ़ना। इन सब बातों को सुनकर वह रोने लगता और कहता "ऐसा क्यों कहती हो। मैं तुम्हारे लिए ही तो इतनी पढ़ाई कर रहा हूँ। मेरी नौकरी होते ही मैं तुम्हारे घर आकर तुम्हारे पापा से तुम्हारा हाथ माँग लूँगा।" पर मेरा मन अब अनुज से कटने लगा था। मैं अब उससे अलग होना चाहती थी। हमारे रोज–रोज के झगड़ों से परेशान होकर उसने कहा "मैं कुछ दिनों के लिए अपने गाँव जा रहा हूँ। वहाँ रहकर अच्छे से पढ़ाई कर

लूँ क्योंकि परीक्षा अब सर पर हैं और तुम्हारे लिए मुझे अच्छी सी नौकरी जो लेनी है।" वह मई का महीना था जब वह गाँव चला गया।

अनुज के गाँव जाने से मुझे कोई विशेष फर्क नहीं पड़ा। वह मेरी मजबूरी बन चुका था, एक ऐसा अपाहित अंग जिसे इंसान सिर्फ मजबूरी में ढोता है। इन्हीं दिनों में, मैं ईशिता की बहन की शादी में गई। हमारे बाकी दोस्त भी वहाँ मौजूद थे। हम लोग वहाँ आपस में बात कर ही रहे थे कि अचानक पीछे से मेरीपीठ पर ईशिता ने हाथ मारते हुए कहा "Hello Gorgeous lady. Where were you? I was looking for you for last half an hour. Let me introduce you to Prince Charming." ईशिता ने ऐसा कहते हुए मेरा परिचय वहाँ मिथेलेश जी से करवाया। मैं मिथिलेश जी को लगातार एकटक देखती रह गई। उन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे फिल्मों का नायक मेरे सामने आकर खड़ा हो। 6 फुट की लंबाई, गठीला बदन। मेरे ध्यान को उस वक्त ईशिता ने तोड़ा "अरे सिर्फ एक दूसरे को देखते ही रहोगे कि कुछ बातें भी करोगे। श्रुति यह मिथिलेश हैं, मेरी सहेली मंजु के भाई और मिथिलेश यह श्रुति है। आप लोग बातें करिए तब तक मैं थोड़ी देर में आई।" उस दिन मिथिलेश के रूप में मुझे जो सहारा मिला वह आज तक चल रहा है। मुझे लगा कि मैं आज तक अधूरी थी और मिथिलेश ने आकर मुझे पूरा किया। हम दोनों हर रोज मिलने लगे। मैं घर पर कॉलेज जाने का बहाना करके उससे मिलने पहुँच जाती। मिथिलेश बैंक में असिस्टेंट मैनेजर थे। घर पर 5 भाई–बहनों में वह सबसे बड़े थे। मेरे मन ने अब मिथिलेश और अनुज में तुलना करना आरंभ कर दिया था। कहाँ मिथिलेश जिनकी इतनी सुंदर पर्सनेलिटी है और कहाँ कृशकाय अनुज। जो अपने आप को नहीं संभाल सकता वह मुझे क्या संभालेगा? और ऊपर से अनुज बेरोजगार भी है और यहाँ मिथिलेश हैं, आज बैंक में मैनेजर हैं, कल तो उनका पद और बढ़ेगाा। मैं अब अनुज से छुटकारा पाना चाहती थी। मिथिलेश ने जब मुझे पहली बार छुआ तो मैंने कोई भी आपत्ति नहीं की। हम दोनों का रिश्ता मात्र दो महीनों में सारी हदों को तोड़कर बहुत दूर जा चुका था।

"तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया श्रुति। मैं तो तुम्हारे लिए ही पढ़ाई कर रहा था। प्लीज मेरे सवालों का जवाब दो। मुझे छोड़कर मत जाओ श्रुति। मैं तुम्हारे बिना पागल हो जाऊँगा। और यह मिथिलेश कौन है?" अपने गाँव से अनुज ने मुझे फोन किया था। मैंने उससे साफ–साफ कह दिया "मैं तुम्हें कोई भी बात बताना जरूरी नहीं समझती। हर वक्त झगड़ा, हर वक्त लड़ाई।" मुझे अपने आप से आजाद करो। अपना पागलपन मुझ पर थोपने की कोशिश मत करो। समझे! आज के बाद यहाँ फोन मत करना। हाँ! मैं मिथिलेश से प्यार करती हूँ, और शादी भी उससे करूँगी। जानते हो वह तुम्हारी तरह पागल नहीं हैं। मेरे साथ खुलकर चलते हैं। तुम्हारी तरह हर वक्त डरे नहीं रहते। और सबसे बड़ी बात, वह मुझे संभाल सकते हैं। तुमने कभी अपने आप को देखा है? क्या हो तुम आज के समय में? कितना पैसा कमा लेते हो दिन का? अनुज ने रोते हुए मुझसे कहा "मैंने तुम्हारे पापा को अपना पापा समझा। तुम्हारी माँ को अपनी माँ समझा।" मैंने उसे सीधा जवाब दिया "तो मैंने कहा था समझने के लिए।" अनुज इन बातों को सुनकर गुस्से से आगबबूला हो उठा "तुम अपने आप को समझती क्या हो श्रुति? तुम बहुत घटिया लड़की हो। तुम चरित्रहीन हो श्रुति,

चरित्रहीन। भगवान तुम्हें कभी माफ नहीं करेंगे।" मैंने अनुज का फोन काट दिया। मेरी आँखों से आंसू निकल रहे थे। लेकिन मैं यह समझ नहीं पाई कि मेरे आँसू क्यों निकले? अनुज से बिछड़ने के गम में या उसने मुझे चरित्रहीन कहा था इसलिए?

अब कॉलेज में मेरा और अनुज का सामना तो होता था लेकिन हम दोनों एक–दूसरे से बात नहीं करते थे। मैंने कई बार ऐसा महसूस किया कि वह मुझसे बात करना चाहता है लेकिन मैं कतराकर निकल जाती। हमारे ब्रेक–अप के किस्से सारे कॉलेज में लोगों की जुबान पर थे। अशोक ने कई बार आकर मुझसे कहा कि मैं अनुज को एक और मौका दूँ पर मुझे उसकी सूरत तक से नफरत थी। हमारे कॉलेज का सेमेस्टर 4 महीनों में खत्म होने वाला था। ऐसे ही एक दिन सुबह अशोक का फोन आया "श्रुति, अनुज को कुछ पता चला है। मिथिलेश पहले से शादीशुदा है। वह तुम्हें बेवकूफ बना रहा है। अनुज से एक बार बात कर लो प्लीज। अनुज को आज ही पता चला है कि मिथिलेश उसी के गाँव का रहने वाला है। उसने 5 साल पहले एक लड़की से शादी की थी पर बाद में उसे छोड़ दिया। अनुज आज भी तुमसे प्यार करता है दीवानों की तरह।" अशोक की यह बात सुनकर मैं गुस्से से भर गई। "अपने दोस्त से कहो कि मेरा पीछा करना छोड़ दे। और यह बकवास के मनगढंत किस्से अगली बार से मुझे मत सुनाना अशोक, वरना तुमसे भी मेरी दोस्ती टूट जाएगी।" मैंने यह कहकर फोन पटक दिया।

"चलो भाभी नीचे चलते हैं, सारे लोग इंतजार कर रहे हैं। मिथिलेश भैय्या बाजार से आ गए हैं। चलो भाभी अब देर मत करो।" अंजु ऐसा कहते हुए मुझे खींचकर नीचे ले गई। ढोल नगाड़े अब बहुत तेजी से बजने लगे थे। हमारे मुख्य दरवाजे पर यह जनसैलाब आकर रूक गया था। मेरे ससुर जी गाँ के प्रतिष्ठित लोगों में आते थे। गाँव का कोई भी जुलूस हमारे यहाँ से ही होकर गुजरता। हमारे दरवाजे पर अपार जनसमूह एकत्रित था जिसमें मेरे घर की सारी औरतें थी। आज पता नहीं मेरे मन को क्या हो रहा था? आज फिरसे मैं अनुज को देखना चाहती थी। 10 साल पहले उन लम्हों में लौटना चाहती थी जिसमें निश्छलता थी, जहां पर मेरा पहला प्यार अनुज था। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं आज फिर से 16 साल की श्रुति बन गई हूँ। मैं अनुज की उस मुस्कान पर हँसना चाहती थी जिसने मेरे यौवन का निर्माण किया था। जैसे ही मैं मुख्य दरवाजे की तरफ बढ़ी तब तक संध्या आकर मेरे पैरों से लिपट गई और रोते हुए कहने लगी "मम्मी भूख लगी है।"

मैं वापस से अपने विचारों में खो गई। 8 साल पहले का दृश्य मेरी आँखों के सामने नाचने लगा। अनुज उस दिन मेरा पीछा कर रहा था। मैं काफी डर गई थी। आज तो मिथिलेश भी नहीं हैं साथ में। हे भगवान अब क्या करूँ? मैं मेट्रो से निकलकर अपने घर की तरफ जल्दी से भागी। अनुज अब भी मेरा पीछा कर रहा था। भाग्य से उस दिन मेरे भैय्या अपने दोस्तों के साथ चाय पीते हुए मोड़ पर ही मिल गए। मैं जाकर भैय्या के पीछे छिप गए। "भैय्या यह लड़का बहुत देर से मेरा पीछा कर रहा है।" मैंने हाँफते हुए कहा। मेरे भैय्या का पारा अनुज को देखते ही चढ़ गया। उन्होंने मुझे घर भेज दिया। बाद में पता चला कि मेरे भैय्या और उनके दोस्तों ने अनुज को उस दिन बहुत मारा था। अनुज के हाथ पैर टूट गए थे। उसका हुलिया पहचान में नहीं आता था। इस घटना के 1 सप्ताह बाद मिथिलेश अपने परिवार वालों के साथ मेरे घर आए। मेरे पापा ने हमारी शादी को मंजूरी दे दी। दो महीनों बाद मेरी शादी होने वाली थी। मैं मिथिलेश जैसा जीवन साथी पाकर

बहुत खुश थी। और देखते–देखते मेरी शादी का दिन भी आ गया। शादी वाले दिन एक अंजान नंबर से मुझे मुझे बार–बार फोन आते। मैं जब फोन रिसीव करती तो उधर से कोई जवाब ना देता। हनीमून के लिए मैं और मिथिलेश शिमला गए थे। शिमला से वापस लौटकर मैंने और मेरे दोस्तों ने इतिहास विषय से स्नातकोत्तर में दाखिला लिया क्योंकि मिथिलेश चाहते थे कि मैं अपनी पढ़ाई जारी रखूँ। मुझे अशोक से ही पता चला कि अब अनुज आगे पढ़ाई नहीं करेगा क्योंकि मेरे माथे में वह किसी और के नाम का सिंदूर नहीं देख सकता था। बाद में मुझे मेरे दोस्तों से पता चला कि अनुज पूरी तरह से पागल हो गया है। वह अपने आप से ही बातें करता है, कभी जोर–जोर से हँसता है और कभी अपने आप रोने लगता है। पर उसके बारे में जानकर मुझे रत्तीभर फर्क नहीं पड़ा। मेरे पास तो मिथिलेश थे, मेरा सबसे बड़ा सहारा।

शादी को 1 महीना हो चुका था घड़ी ने रात के 1 बजे की सूचना दी। मिथिलेश अभी भी घर नहीं लौटे थे। मैं बिस्तर पर लेटे ही करवट बदल रही थी। अचानक से किसी गाड़ी की तेज आवाज ने मुझे चौंकाया। मैं खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई। मैंने देख कि एक बड़ी गाड़ी से मिथिलेश लड़खड़ाकर उतर रहे हैं। शायद मिथिलेश ने शराब पी है। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि देवता जैसा मेरा पति शराब पी सकता है। उन्हें सहारा देकर एक लड़की हमारे दरवाजे तक लेकर आई। घर पर सारे लोग सो गए थे इसलिए मैंने जाकर दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते ही मिथिलेश लड़खड़ाकर गिर जाते अगर ऐन मौके पर मैं उन्हें नहीं संभाल लेती। मैं मिथिलेश को हमारे कमरे में लेकर गई। मैंने मिथिलेश के कपड़े बिस्तर पर ही बदले और उनके सिरहाने एक तकिया लगाया। रात को मिथिलेश नींद में ही "आई लव यू श्वेता" कह रहे थे। मुझे मेरे कानों पर विश्वास नहीं हुआ, जो आदमी दिन के 24 घंटे मेरे प्यार की कसमें खाता था आज उसके मुँह से किसी दूसरी लड़की का नाम सुनकर मैं टूट गई थी। मैं सुबह का इंतजार करने लगी।

सुबह होते ही मैंने मिथिलेश से पूछा "कल आपको छोड़ने कौन लड़की आयी थी।" मिथिलेश ने मेरे सवालों को अनसुना करने की कोशिश की। मैंने अपना सवाल दोहराया "मिथिलेश मैं आपसे कुछ पूछ रही हूँ। मेरे सवालों का जवाब दीजिए।" मैं मिथिलेश के एकदम सामने तनकर खड़ी हो गई। मिथिलेश ने मेरे इस अचानक से बदले व्यवहार पर मेरी कलाई पकड़ ली और उसे मोड़ते चले गए। मैं दर्द के मारे कराह उठी। मिथिलेश ने मुझे बिस्तर पर गिराते हुए कहा "मेरी माँ बनने की कोशिश मत करो। बीवी हो, बीवी की तरह रहो। मेरे बहुत सारे दोस्त हैं जिसमें से कई लड़कियाँ भी हैं। हाँ मैं रोज रात को उनके साथ जाता हूँ और आगे भी जाता रहूँगा। इस नई जिंदगी की आदत डाल लो तो तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।" मुझे बिस्तर पर रोता हुआ छोड़कर मिथिलेश चले गए। मैंने महसूस किया कि मेरे इस नए घर में कोई भी मेरा साथ नहीं देता था। मेरे सास, ससुर, बड़ी ननद मंजु तथा देवर सभी लोगों का व्यवहार मेरे लिए सौतेला था। सिर्फ घर पर दो ही लोगों से मुझे अपार स्नेह मिलता, एक मेरी छोटी ननद अंजु और दूसरे हमारे घर में काम करने वाले महावीर काका। महावीर काका मिथिलेश के ही गाँव के रहने वाले थे। रात को देर से आना अब मिथिलेश की दिनचर्या बन गई थी। हर बार उन्हें घर तक छोड़ने नई–नई लड़कियाँ आती। एक बार अपना कमरा साफ करते हुए मेरे हाथ में एक पुरानी एलबम लगी। मैं उसे उठाकर ऐसे ही देखने लगी। एलबम देखते–देखते मुझे अचानक

से झटका लगा। उसमें एक तस्वीर में मिथिलेश एक लड़की के माथे में सिंदूर डाल रहे थे। तो क्या मिथिलेश पहले से शादीशुदा हैं? तो उनकी पहली पत्नी कहाँ है? मैं तकिये में मुँह छिपाकर फूट–फूटकर रोने लगी। मुझे अचानक से अनुज याद आ गया। अनुज भी तो मुझे बताना चाहता था कि मिथिलेश पहले से शादीशुदा हैं, पर मैंने उसकी कितनी हँसी उड़ाई थी उस वक्त। उसे दुत्कार कर भगा दिया था। भगवान मुझे माफ करना। मैंने अपने अनुज का दिल तोड़ दिया। भगवान मुझे अपने अनुज से फिर से मिला दो। उस दिन मुझे एहसास हुआ कि शादी के दिन मुझे फोन करने वाला अनुज ही था।

मैंने फैसला कर लिया था कि मैं मिथिलेश के बारे में सच्चाई जानकर रहूँगी। मैं जानती थी कि घर पर मुझे कोई भी खुल कर नहीं बताएगा, इसलिए मैंने महावीर काका से बातों–बातों में पूछा, "महावीर काका बड़े मालिक की पहली पत्नी कहाँ गई।" यह सुनते ही महावीर काका घबरा गए। "नहीं नहीं बिटिया तुम्हें गलतफहमी हुई है। बड़े मालिक की कोई शादी नहीं हुई। उनकी शादी तो आपसे ही हुई है।" मैंने महावीर काका का हाथ अपने सिर पर रखते हुए कहा "महावीर काका, आप मुझे अपनी बेटी कहते हैं। सच–सच बता दो वरना अपनी बेटी का मरा हुआ मुँह देखोगे।" महावीर काका ने अपना हाथ झटका और रोते हुए बोले "अरे नहीं नहीं बिटिया यह क्या करती हो? हाँ बेटी! मिथिलेश बाबू की शादी 5 साल पहले हुई थी। दहेज में इन लोगों ने बहुत सारा रूपया लिया था पर उस बेचारी के शरीर पर चेचक के दाग थे इसलिए इन लोगों ने उसको छोड़ दिया।"

मैं महावीर काका के चले जाने के बाद अपने कमरे में आकर रोने लगी। भगवान ने मुझे मेरे कर्मों की बहुत बड़ी सजा दी थी। मैंने अपने अनुज का दिल तोड़ा था इसलिए भगवान ने मुझे मिथिलेश जैसे इंसान के पास भेजा। और तो और मिथिलेश और अनुज एक ही गाँव के रहने वाले थे। अब शायद अनुज को देखकर रोना ही विधाता ने मेरे नसीब में लिख दिया था। मिथिलेश मुझसे प्रेम नहीं करते थे। वह सिर्फ मेरे जिस्म से प्रेम करते थे। हर रात मैं उनकी वासना का शिकार होती। मैं हर रोज मरती गई और एक दिन ऐसा आया जब मैंने अविनाश को जन्म दिया। अविनाश के दो साल बाद विनय मेरी जिंदगी में आया। मेरे बच्चों ने आकर मेरी जिंदगी पूरी कर दी। मैं इनके चेहरों को देखकर अपने गम भूल जाती। मुझे लगता था कि अपने बच्चों को देखकर मिथिलेश के स्वभाव में कुछ अंतर आएगा और वह अपनी गलत हरकतें छोड़ देंगे। लेकिन मिथिलेश नहीं बदले, हालांकि वह अपने बच्चों से खूब प्यार करते। अब भी रातों को वह अपने दोस्तों के साथ बाहर घूमते। उन्हें घर तक छोड़ने आज भी घर पर लड़कियाँ आती थीं। अब उन्होंने हर रोज पीना चालू कर दिया था। पीकर वह मुझे मारते भी थे। उनकी बेल्टों के निशान आज भी मेरे शरीर पर अंकित हैं और चीख–चीख कर मिथिलेश की मर्दानगी के किस्से बयान करते हैं। तीन साल पहले मेरी सबसे छोटी बेटी संध्या का जन्म हुआ। इसी बीच मुझे खबर मिली कि अनुज पागलखाने से लौट आया है। अनुज के पिता ने दिल्ली के सबसे बड़े डॉक्टर से अनुज का इलाज करवाया था। मैं रोज अपने कमरे में अकेले में अनुज को याद करके खूब रोती थी। राधा ही मेरी एकमात्र ऐसी सहेती थी जिससे मेरी शादी के बाद भी बात होती थी। राधा ने ही मुझे बताया कि अनुज इन पाँच सालों में पागलखाने में सिर्फ मेरा नाम लेता था। पागलखाने से लौटने के बाद भी वह मेरे बारे में ही सोचता था। लेकिन अंत में जब उसे यकीन हो

गया कि मैं उसकी जिंदगी में कभी नहीं लौटूंगी तो उसने अपना पूरा ध्यान पढ़ाई में लगा दिया। उसने फिर से अपनी तैयारी चालू की और एक दिन अपनी मेहनत से आई.ए.एस. बनकर दिखाया।

अनुज की गाड़ी मेरे दरवाजे पर आकर रूक गई। उसमें से अनुज निकला और मेरे ससुर जी के पाँव छुए। "खुश रहो बेटा। आज तुमने पूरे गाँव की इज्जत रख ली। बहुत खूब बेटा। इसी तरह आगे बढ़ते रहो। भगवान तुम्हें बरकरार रखें।" ऐसा कहकर मेरे ससुर जी ने उसे गले लगा लिया। एक–एक करके मेरे सारे परिवार वाले अनुज से मिलने लगे। अंजु तो दौड़कर उसके पास चली गई सेल्फी लेने के लिए। फिर मिथिलेश जी से अनुज मिला। मेरे ससुर जी ने मिथिलेश का परिचय अनुज से करवाते हुए कहा "अनुज बेटा, मिथिलेश को तुम जानते ही होंगे। पहले यह शहर में बैंक में असिस्टेंट मैनेजर थे, लेकिन अब गाँव में अपना खुद का बैंक खोलना चाहते हैं। अगर तुम हमारी मदद कर दो बेटा तो इस गाँव के लाग भी बैंकों से सीधे रूप से जुड़ पाएँगे।" अनुज ने हँसते हुए हामी भरी "जरूर चाचाजी। मुझसे जहाँ तक हो पाएगा, मैं जरूर करूँगा।" सारे लोगों से मिलने के बाद ससुर जी ने मेरा परिचय अनुज से करवाया "बेटा यह मिथिलेश की पत्नी हैं। साक्षात लक्ष्मी का स्वरूप है बेटा।" मैंने अनुज को नमस्ते की। अनुज आज फिर से मेरे सामने था। मेरा पहला प्यार आज इस रूप में मेरे सामने आएगा मैंने सोचा भी नहीं था। 8 सालों बाद मैं उसे देख रही थी। अनुज ने आज अपने आप को साबित कर दिया था। मैं आज उससे हार गई थी। क्या कसूर था मेरे अनुज का? क्या चाहता था मेरा अनुज? वह तो मेरे साथ सिर्फ खुशी से रहना चाहता था। पर मैंने उसके सारे सपने एक झटके से तोड़ दिए थे और एक ऐसे इंसान से शादी की थी जो मुझसे प्यार ही नहीं करता था। मेरे मन ने मुझसे कहना चालू किया "मुझे अपने साथ ले चलो अनुज। मैं तुम्हारी श्रुति हूँ। हम लोग फिर से अपनी जिंदगी की शुरूआत करेंगे। एक नई दुनिया बसाएँगे।" मैं चाहती थी कि मैं वापस से 10 साल पहले चली जाऊँ। मैं यह सब सोच ही रही थी तब तक मेरी सास अचानक से संध्या को गोद में लिए आईं और अनुज की गोदी में देते हुए बोली "बबुआ यह मेरी सबसे छोटी पोती है। इसे आशीर्वाद दीजिए। यह सबकी लाडली है।" अनुज से संध्या को गोद में लिया। उसके माथे को चूमा और अपनी जेब से 500 के नोट निकालकर संध्या के ऊपर न्यौछावर करते हुए मुझे दिए। "आपकी बेटी बहुत प्यारी है। इसका ख्याल रखिए। इसकी जिंदगी में कभी भी कोई कमी मत आने दीजिए।" ऐसा कहकर उसने संध्या को मेरी गोद में पकड़ा दिया। शायद किसी ने गौर नहीं किया संध्या को मेरी गोद में देते वक्त अनुज की आँखों में आँसू थे। अनुज ने मेरी आँखों की तरफ देखा। उसकी आँखें आँसुओं से डबडबा गई थीं। किसी के जानने से पहले अनुज ने रूमाल से अपने आँसू पोंछे और वापस अपनी गाड़ी की तरफ मुड़ गया। अनुज के साथ यह जनसैलाब मेरे घर से वापस गाँव की तरफ निकल पड़ा। मेरा प्यार आज फिर मुझसे जुदा हो गया था। मैं चाहती थी कि यह लम्हा यहीं पर रूक जाए और मैं अपने अनुज को ऐसे ही देखती रहूँ। मैं अंजु के साथ सीढ़ियों पर तब तक खड़ी रही जब तक उनकी गाड़ियों का काफिला मेरी आँखों से ओझल नहीं हो गया। मेरी आँखों से आँसू निकल आए। शायद हमें इसी तरह जीना है अनुज। मैं तुम्हारी अपराधिनी हूँ। इस जन्म में तो हम नहीं मिल पाए लेकिन मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगी कि आगे आने वाले हर जन्म में वह मुझे तुम्हारी जीवनसंगिनी बनाए।

मदर्स डे



प्रवीण कुमार सहगल
डी–1209, डबुआ कॉलोनी,
फरीदाबाद, हरियाण–121001

आज आश्रम में बड़ी चहल पहल थी। कौशल्याजी और हिरेन भाई दौड़–दौड़ कर सारी तैयारियां करवा रहे थे। वैसे यह आयोजन कोई पहली बार नहीं हो रहा था। उनके यहां अक्सर ही कुछ दयालु, भावुक लोग अपने बच्चे का जन्मदिन अनाथाश्रम में मनाने आते और बच्चों में फल, कपड़े, मिठाई, खिलौने बांट जाते, साथ ही आर्थिक मदद भी कर जाते आश्रम की।

कौशल्याजी को प्यार से बच्चे यशोदा जीजी भी कहते। काम यशोदा वाला ही था उनका। बरसों संतान सुख से वंचित रहने पर अपनी इस पुश्तैनी जमीन पर यह अनाथाश्रम खोल लिया था उन्होंने। बच्चों के दुख के आगे अपना दुख कम लगता उन्हें।

तभी हॉर्न बजा और आश्रम के सब कर्मचारी और बच्चे गेट के पास स्वागत के लिए खड़े हो गए। सभी बच्चों ने नए कपड़े पहने थे। फिर शुरू हुआ जश्न, केक, गुब्बारे, चॉकलेट, मिठाई, खिलौने और गाना बजाना, बच्चों ने खूब मस्ती की और उस बच्चे को जिसका जन्मदिन था, ढेर सारी शुभकामनाये भी दीं। आश्रम की परंपरानुसार एक गिफ्ट भी बच्चों के द्वारा दिलवाया गया। पार्टी खत्म हुई, सब अपने–अपने कमरे में सोने चले गए। कौशल्याजी और हिरेन भाई भी कामकाज निपटाकर बच्चों के सिर पर हाथ फेर सोने चले गए। कौशल्याजी को सारे बच्चे उदास से दिखे, कोई खिलौने, चॉकलेट और मिठाई की तरफ देख भी नहीं रहा था। सब अपने–अपने बिस्तर पर गुमसुम पड़े थे। उन्होंने सोचा थक गए हैं शायद, लेकिन रात को बच्चों की खुसुर–फुसुर सुन कौशल्याजी की नींद खुल गई।

दबे कदमों से जा के देखा तो सारे बच्चे राजू, जो कि आश्रम का सबसे बड़ा, समझदार और पहला बच्चा था, के पास बैठे सिसक रहे थे और राजू उनको समझा रहा था।

छः साल का गोलू बोला – "राजू भइया देखा था आपने वह बच्चा कैसे अपनी मम्मी का हाथ पकड़ कर नाच रहा था। उसके मम्मी–पापा कैसे उसे लाड़ कर रहे थे ना?"

सात साल के पप्पु ने कहा – "राजू भइया हमारे मम्मी पापा क्यों नहीं हैं? कहा चले गए हमें छोड़कर? अगर आज होते तो हमें भी ऐसा ही लाड़ करते ना?"

नन्हा चुन्नू बोला – "सबकी माँ ऐसे ही होती है क्या प्यारी–प्यारी, कैसे उसके गाल पर पप्पी लगा रही थी न वो।"

आठ साल के नानू ने उसे जवाब देते हुए कहा – "हां ऐसी ही होती है प्यारी प्यारी।"

चुन्ने ने उसे धौल जमाते हुए कहा – "जा जा, तुझे बड़ा पता है जैसे तूने मेरी मां को देखा है।"

नानू बुझ–सा गया, लेकिन बोला – "मेरे दोस्त हैं ना स्कूल में, पेरेंट्स मीटिंग में आते हैं सबके मम्मी–पापा साथ में। एक बार मैंने उससे पूछा था तो उसने बताया कि मां बहुत प्यार करती है। हाथ से खाना खिलाती है, नहलाती है, अपने से चिपका कर सुलाती है। पापा उसके साथ खेलते हैं, वो घूमने–फिरने जाते हैं रात को।"

सब बच्चे उसकी बात ऐसे सुन रहे थे जैसे नानू के दोस्त की जगह वे खुद अपने मां–बाबा के साथ हों। यह देख कौशल्याजी की रुलाई फूट पड़ी। मुंह में पल्लू भर वे वहां से चली गई। तभी अर्जुन बोला – "हां राजू भइया, कल दिन में अपने आश्रम के पीछे रहने वाली आंटी और उनके बच्चे को भी मैंने साथ खेलते देखा, मैंने झांक–झांक कर उनका घर भी देख लिया था, घर ऐसा ही होता होगा ना? आंटी के बच्चे उन्हें बता रहे थे कि कल उनके स्कूल में मदर्स डे मनाया जायेगा, इसलिये वो कल स्कूल में सबसे सुंदर साड़ी पहनकर आएं।"

राजू चुप था। क्या बोलता, कैसे समझाता, जब आज तक अपने आप को नहीं समझा पाया। 15 साल पहले कोई इसी चौखट पर छोड़ गया था उसे। क्यों? नहीं जानता। तब से यही घर और यही मां–बाबा। उसके बाद कितने ही बच्चे आए, कोई झाड़ियों में मिला, कोई नाली में, कुछ के मां–बाप किसी दुर्घटना में खत्म हो गए। हर एक की अलग कहानी, लेकिन सबका साझा दुख। मां की याद, जो हर दिन झुलसा जाती है। जिन्होंने मां को देखा उन्हें भी, जिन्होंने नहीं देखा उन्हें भी। हर बार किसी बच्चे को उसकी मां के साथ देखकर मन जाने कैसा–कैसा हो जाता है बता नहीं सकता।

बच्चों के बुझे हुए चेहरे देख वह उन्हें सांत्वना देता हुआ बोला – "चलो–चलो, फालतू में दिमाग मत खाओ। घर, मां क्या लगा रखा है? क्या यह घर नहीं है, देखो पीछे वाली आंटी के घर से ज्यादा कमरे हैं।"

तभी राजू के दिमाग में कुछ कौंधा, उछलते हुए बोला – "हम भी मदर्स डे मनाएंगे।"

सब बच्चे एक साथ बोले – "लेकिन हमारी मां तो है ही नहीं।"

राजू बोला – "क्यों यशोदा जीजी नहीं है क्या हमारी मां? क्यों चुन्नू सबसे छुपा कर तेरे लिए मलाई कौन रखता है? क्यों गुड्डी तेरे बीमार होने पर रात–रात भर तेरे सिरहाने कौन बैठता है? चोट लगने पर कौन माथा सहलाता है? कौन मन पसंद की चीजें बारी–बारी से बनाता है? रूठने पर कौन मनाता है? रात को कहानी, लोरी कौन सुनाता है? पढ़ाई में मदद कौन करता है? घूमने कौन ले जाता है? बोलो बोलो, मां भी तो यही सब करती है।"

सब बच्चे खुशी से बोले – "यशोदा जीजी और हिरेन दादा और कौन।"

"हां–हां राजू भइया हमारे भी मां–बाबा हैं, हमारी भी मां है।" अचानक सबके चेहरे चमक उठे।

उनके आश्रम में कृष्ण जन्म ही मनता था और कृष्ण लीला होती थी। इस बार बच्चों ने सोच लिया कि हम कल यशोदा मां को मदर्स

डे विश करेंगे। राजू ने हंसते हुए कहा – "सुबह जल्दी उठ जाना।" सुबह की उत्सुकता में बच्चे अपना दर्द भूल मीठी नींद में सो गए।

कौशल्याजी का रो–रोकर बुरा हाल था। हर जन्मदिन जो उनके यहां मनाया जाता है, वह बच्चों के दर्द को जिंदा कर देता है। यह वह क्यों नहीं सोच पाई? उन्हें याद आया कि इस आश्रम में हर बच्चे के साथ वह उस बच्चे से ज्यादा रोई हैं। बच्चे की तड़प, उसकी असहायता, उसकी आंखों में अपने को तलाशती बेचैनी, बच्चे का गुमसुम उदास, सहमा–सा चुप–चुप चेहरा और तकलीफ को बयान न कर पाने की मजबूरी में उसका बिलखना देख उसका हृदय चीत्कार उठा। वे हाथ जोड़ विधाता से कहती – "हे ईश्वर सब छीन लेना किसी से, लेकिन मां की गोद किसी बच्चे से मत छीनना।" बच्चों में ही अपनी संतान की छवि देख वे तृप्त हो जातीं। वे और हिरेन भाई मां–बाबा बनने का प्रयास करते।

सुबह उठते ही बच्चों के कमरे में पहुंची, सोये हुए मासूमों को देख दिल भर आया। तभी बाहर से आश्रम की सहयोगी ने आकर बताया कि कोई समाज सेवी संस्था का फोन है, आश्रम में मदर्स डे मनाना चाह रही है। सुनकर उनका मुंह विकृत हो गया – "अनाथाश्रम में मदर्स डे?" उठकर बाहर गईं – "क्षमा कीजिए, आपका उत्सव मेरे बच्चों को दुखी कर देगा। आप आर्थिक मदद ही कर सकें तो ....।" फोन रखकर वे ऑफिस की तरफ चली गईं, जहां हिरेन भाई को उन्होंने रात वाली बात बताकर अनाथाश्रम में जन्मदिन मनाना बंद करने का नोटिस निकालने को कहा।

बच्चे फुर्ती से उठ खड़े हुए। अपनी अलमारी में से जो भी रंग, ब्रश, मोती, सिक्के, चमक, लड़ियां, रिबन थे, निकाल लाए। राजू पहले ही तैयार बैठा था। सबने मिल कर एक बड़ा–सा कार्ड बनाया और उस पर लिख दिया – "हमारी मां यशोदा मां।" एक दूसरे से छुपा कर रखी चॉकलेट और टॉफियां निकाली तो सब एक दूसरे के छुपे खजाने को देख हंसने लगे। उधर कौशल्याजी हैरान थी कि देर से उठने वाले नन्हे शैतान आज इतनी सुबह कैसे, दरवाजा भी अंदर से बंद है।

तभी दरवाजा खुला और उन्होंने देखा कि नन्हे–नन्हे हाथों में एक बड़ा–सा कार्ड थामे बच्चे चले आ रहे हैं। उनकी आंखों में आंसू आ गए। आंसुओं की वजह से कार्ड पर क्या लिखा है, वे देख नहीं पाईं। लेकिन उन मासूम आंखों में क्या लिखा था उसे पढ़ने के लिए किसी भाषा की जरूरत नहीं थी। उन्होंने दौड़कर बच्चों को गले लगा लिया और उन्हें चूमने लगीं। दोनों तरफ कई जोड़ी आंखों से बहते आंसुओं ने मन का विषाद धो डाला था।



ग़ज़ल



रामानन्द शर्मा
76/55 शिप्रा पथ, मानसरोवर
जयपुर, राजस्थान

आपके मन में जो क्रोध है।
क्या आपको उसका बोध है।।

तनाव में घट रही सभी घटनाएँ।
क्या मन उन पर करता शोध है।।

मन की थकान को यूँ बदलें
तोड़ डालें जहाँ भी अवरोध है।।

विचार के तल पर न ठहरें।
मनस्वी बने करता रहे विचार विरोध है।।

मलिनता जहाँ रहे, छाँट दीजिए।
करता रहे मन चाहें विचारों से मनोविनोद है।।

आत्म–तत्व को गहराई में जा ढूंढ लीजिए।
मिलती जहाँ शांति वहीं असल प्रबोध है।।

विचारों के जाल में फँसता रहा यह मन।
उस पर पड़ती भारी चोट है।।

कभी सिकुड़ता, कभी फैलता यह मन
करता अठखेलियाँ, कभी रहता निर्विरोध है।

भाई और बहन का रिश्ता



सुश्री ज्योति यादव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
361, अण्णा सलाई,
तमिलनाडु, चेन्नै–600018

भाई और बहन का रिश्ता है ऐसा, कोई दूसरा नहीं दुनियाँ में वैसा,
ना समझ आया है और ना ही समझ आयेगा, कि ये बंध है कैसा।।

दोनों का है दिलों का रिश्ता,
एक हँसे तो दूसरा है खिलखिलाता।
जब खुशियों का वक्त है आता,
तो बहन भाई को और भाई बहन को आगे लाता।
लेकिन जब दुःख दरवाजा है खटखटाता,
तो भाई बहन को पीछे छुपाता।

ये ही तो है बहन और भाई का प्यार,
जो रहते हैं एक दूसरे के लिए हर वक्त तैयार।
बहन भाई के लिए कुछ भी कर सकती है,
उसके हर गम को अपना बना सकती है।
भाई भी उसके लिए आसमान से तारे तोड़कर लाने की सोच सकता है,
उसके लिए सारे जहान से भी लड़ सकता है।
दोनों में एक दूसरे की जान है बसती,
एक दूसरे को देखकर मुस्कानें है खिलती।

इसलिए हर भाई को बहन और बहन को भाई है चाहिए,
और फिर तो उनके जीवन की बगिया में प्यार के फूल खिलने ही चाहिए।

देहली वाली गर्लफ्रेंड



मेहरबान सिंह नेगी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)
भूखण्ड 191 (एफ–2), वैशाली,
सेक्टर–4, गाजियाबाद, उ.प्र.

वह दिन बखूबी याद है मुझे
जब मैं देहली से बम्बई आया था
तब एक अजीज शायर दोस्त से
देहती की तमाम बातें
तफ़सील से बतियाया था
बातों ही बातों में उसने
एक राज़ उगलवाया
पर वो गुफ्तगू की संजीदगी को ज़रा–सा न पचा पाया।
कुछ वर्ष बीते शायर मित्र ने
चर्चित उन्मान पे एक गीत रचा
संगीतकार ने रचित लफ्ज़ों को
तवज्ज़ो दे शानदार धुन दी सजा
गायक ने उन्हीं स्वर–भावों में गीत गाया
वर्षों बाद एक निर्माता–निर्देशक ने
वही गीत बड़ी हसरत से फिल्माया
लेकिन महज मेरा दिल जानता है
फलक पर एक अपलक झलक देख
मैंने अपने आपको तब कैसा असहज पाया!

मैं रात भर सोचता रहा
सिर के श्वेत–श्याम बाल नोचता रहा
कैसे सहूं किससे कहूं उस देहली वाली की यादों ने
मुझे तब से अब तलक कितना सताया था!
सच कहूं तो बेहद तड़फाया था
गाना बजते ही वही अश्क वही सिसकियां बारम्बार
करते हैं धड़कते दिल पर बज्र–पाती प्रहार
उस रात गाना सुनने के बाद तो हद हो गई
मुम्बई गहन निंद्रा में सो गई
रोते सिसकते हुआ था मेरा बुरा हाल

सुबह सवेरे बृहन मुम्बई बना था वृहद विरही ताल
मैंने एक सबक लिया शहनाज की तरह ज्यादा न बोलो
मसखरों–शायरों बच्चों–कान के कच्चों से तो दिल के राज बिल्कुल न खोलो।
वह बात भी याद है मुझे अब तलक
जब मेरी महबूबा शहनाज तब दशकों पहले
सुबकती सिसकती कितना समझाती रही
कहना चाहती थी जो जोर देकर
लोकलाज शर्मीले अंदाज में शहनाज सिर्फ गुनगुनाती रही
दिल की आवाज रूंधे कंठ से सफ़रनामा तय कर
शमशाद बेगम की तरह मुख से कम
नासिका से ज्यादा आती रही
इस पत्थर दिल इंसान को बहुत मनाती रही।
उसने सच कहा था – 'बम्बई वह गागर है
समाया जिस में सागर है
जो कोई बम्बई शहर गया
वह गया तो गहर गया – वहीं ठहर गया।
मैं मानता हूं मेरे मन में उसका मान सम्मान था
दिल की कोर के करीब आरक्षित कोने में स्थान था
उभर आती हैं धुंधलाती तस्वीरें
उस ऐतिहासिक शहर की जो खास हैं
उस भग्नावशेष इमारतों की जो अब इतिहास है
शहनाज़ की आवाज ज़वां शक्ल सूरत अंदाज अदाएं
अभी इस खण्डहर दिल में सही सलामत हैं
दिल की रिहायशी बस्ती में बसी वे हंसीं
सभी नायाब अदद उसी की अमानत हैं
मेरा यकीन है – पूरा विश्वास है
उन जवां शोख अदाओं में थी जो बात वो कुछ तो खास है।

मैं जो जवां शाहनवाज जौहर बम्बई आया था
यहां बम्बइया हसीन नाज़नीन का शौहर बना
बम्बई शहर तो मैं नौजवां गोल मटोल आया था
मुम्बई महानगर में शक्ल से खण्डहर बना
मेरी हमसफर जान–ए–जिगर
हसीन नाज़नीन हुई है जो अब दंतहीन
जनाब किसी खण्डहर से कम नहीं
खुदा की कसम इस मुम्बइया ताज में
हसरत की वसीयत उस असली ताज–सा दम नहीं।

चिलमन की पोर – दिल की कोर पर
जमीं के चांद की वो छाप तब जो जवानी में छपी थी
वह तो काले हिजाब़ में बिल्कुल वैसी है
जैसी काली रात्रि में हूबहू चौदहवीं के चांद जैसी है।

ट्रेन में देखा मैंने सारा संसार



सुमित कुमार-III
स.म.ले.प.अ., अंबाला मंडल
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
उत्तर रेलवे, बडौदा हाउस, नई दिल्ली

ट्रेन में देखा मैंने सारा संसार
सोता, जागता, हँसता, रोता, चुप्पी साधे या गतिमान
खाता, पीता, गाता
मामा, फूफा, चाचा–चाची, नाना–नानी, मौसा–मौसी, जीजा–जीजी, साला–साली
न जाने कितने नातेदार
ट्रेन में देखा .....

बिना टिकिट यात्रा करते मनोभाव
कार्यालय, कॉलेज, दुकान, शादी, जन्मदिन, खेत–खलिहान
परीक्षा, खेलकूद, कबड्डी, खो–खो, ही–ही–हू–हू–हे–हे–हो–हो
सबसे निपटकर अपना घर बार
ट्रेन में देखा .....

शोक–विलाप, हिंसा–क्रोध, प्रतिशोध की ज्वाला,
साँय–साँय, फायं–फायं एक्सरे, ईसीजी, ईईजी
दवा–गोली, मरहम–पट्टी, कोर्ट कचहरी पैरवीकार
ट्रेन में देखा मैंने सारा संसार।

बिखरे लम्हे

सुश्री ललिता मैनाली
प्लॉट नं. सी–5, 1303
भारत सिटी, नियर टीला मोड़
लोनी, गाजियाबाद

बिखरे लम्हों को बांध लो जिल्द में
जिंदगी फिर एक किताब बन जाएगी
इंतजार के लम्हों को न गिनो वरना
जिंदगी फिर एक हिसाब बन जाएगी।

महकों खुशबू की तरह हर एक पल
जिंदगी फिर एक गुलाब बन जाएगी
रोशन करो सूरज की तरह हर पल को
जिंदगी फिर एक आफताब बन जाएगी।

छोड़ना ना उम्मीद का दामन एक पल के लिए भी
वरना जिंदगी हाथों से रेत की तरह फिसल जाएगी
दूसरों के लिए जीना और चाहना हर पल किसी को
ये बातें किताबों की हैं और किताबों में ही रह जाएगी।

बिखरे लम्हों को बांध लो जिल्द में
जिंदगी फिर एक किताब बन जाएगी।

संजीवनी



आकाश त्रिवेदी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, सातवीं मंजिल, ए–ब्लॉक
रक्षा कार्यालय कॉम्पलैक्स, अफ्रीका एवेन्यू, नई दिल्ली

ए पवन तनय ए संकट मोचन,
मुझको भी ला दो संजीवन।।

मेरे तो लक्ष्मण राम नहीं,
मेरा सब कुछ मेरी बेटी है,
कुछ मेघनाथ के कृत्यों से,
देखो ये मूर्छित लेटी है,
उठा के लक्ष्मण भैया सा,
इसको भी कर लो आलिंगन।
ए पवन तनय ए संकट मोचन,
मुझको भी ला दो संजीवन।।

इसने न कोई युद्ध किया,
न किसी का कुछ बिगाड़ा है,
फिर भी दरिंदों ने मिलकर,
इसके वस्त्रों को फाड़ा है,
एक तन की लोभ की खातिर,
है छीन लिया इसका जीवन।
ए पवन तनय ए संकट मोचन,
मुझको भी ला दो संजीवन।।

अब खुद जागो, इसे जगाओ,
इसे मौत की नींद से उठाओ,
दो बाण इसे भी लक्ष्मण सा,
सामने से इन्द्रजीत लाओ,
दे भेद न भीष्म पितामह सा,
न शांत हो तब तक ये मन।
ए पवन तनय ए संकट मोचन,
मुझको भी ला दो संजीवन।।

इस धरती के हम मानवगण,
क्या कोई तुम्हारे नहीं लगते,
क्या रोज सैकड़ों दुष्कर्मों से,
भी हृदय काँप नहीं उठते,
कैसे ये सब देख के भी,
तपस्या से अपनी नहीं जगते,
जब लाज बची न अहिल्या की,
क्या काम करेगा राम भजन।
ए पवन तनय ए संकट मोचन,
मुझको भी ला दो संजीवन।।

जीवन

विदित अग्रवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक (इस्पात)
रांची शाखा, दूसरा तल इस्पात भवन
भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई, छत्तीसगढ़

जीवन खपा दिया, जीवन संवारने में,

फिर भी लगा ना कहीं यूं, कहीं थोड़ी सी कमी रह गई।

निखारने में इसको,

फिर भी उदास रूठी सहमी सहमी सी रह गई।

अपनेपन की चाह में, घूमता रहा मैं,

दिल टूटा, अश्क सूखे, फिर भी आंखों में नमी रह गई।

बदलते मौसम की तरह किरदार बदलते रहे,

दिल में उथल–पुथल हुआ, बस तरंग ध्वनि रह गई।

कुछ कर गुजरने की चाहत में, यह क्या कर गए हम,

अपेक्षाओं का अब मोल नहीं, अब सिर्फ मनमानी रह गई।

क्या फर्क पड़ता है किसी को अब भावनाओं का,

रिश्तों की यह परंपरा, अब मात्र जुबानी रह गई।

गुजरे खट्टे मीठे पल, अब याद बहुत वो आते हैं,

जीवन अब जीवन ना रहा, बस बनके कहानी रह गई।

अब चाह नहीं कुछ जीवन में, और ना ही इतना वक्त बचा,

अब ना ही वो उमंग रही, और ना वो जवानी रह गई।

जीवन का यह रंगमंच, कर्तव्य अधिकार से भरा रहा,

कितना भी किया पर, दुनिया को मुझसे शिकायत ही रह गई।

जीवन के इस कालखंड में अगणित अनुभव पाया हूं,

अश्क उभरता है दिल में, बस जिस्म रूहानी रह गई।

ना लोग अपने, ना रिश्ते नाते, ना ही ये जीवन अपना,

कुदरत की यह नेमत है यह बात समझनी बाकी रह गई।

जीवन खपा दिया, जीवन संवारने में,

फिर भी लगा यूं कि, थोड़ी सी कमी रह गई।

नारी शक्ति



सतनाम सिंह
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली

नारी, नारी तुम परमात्मा की शान हो
विधाता की रचना महान हो
हौंसले की बात करूँ तो, अन्तरिक्ष की उड़ान हो
धैर्य की बात करूँ तो, धरा महान हो
पराक्रम की बात करूँ तो, वीरांगना महान हो
दृढ़ता की बात करूँ तो, पर्वत समान हो
नारी, नारी तुम परमात्मा की शान हो
विधाता की रचना महान हो

ज्ञान की बात करूँ तो, ग्रन्थों का ज्ञान हो
गहराई की बात करूँ तो, सागर की गहरान हो
प्रेम की बात करूँ तो, प्रियतम की जान हो
त्याग की बात करूँ तो, निज सुखों का बलिदान हो
नारी, नारी तुम परमात्मा की शान हो
विधाता की रचना महान हो

वात्सल्य की बात करूँ तो, बच्चों का जहान हो
तुम अबला नहीं, तुम सबला हो, तुम सक्षम बलवान हो
नारी, नारी तुम परमात्मा की शान हो
विधाता की रचना महान हो

फिर क्यों लोगों की हवस का शिकार बनाई जाती हो?
लाज बचाने के लिए ज़ोर–ज़ोर चिल्लाती हो
दहेज के लोभियों द्वारा आज भी जलाई जाती हो
कन्या भ्रूण हत्या के लिए मजबूर कराई जाती हो
हर माह की प्राकृतिक प्रक्रिया में, अछूत ठहराई जाती हो
निर्भया को याद कर, निर्भय नहीं हो पाती हो
शाम अंधेरा होते ही, घर आने को व्याकुल हो जाती हो
नारी! हो तो तुम परमात्मा की शान
विधाता की रचना भी महान!

परंतु तुम्हारी व्यथा देख, अंतर्द्वंद्व में पड़ जाता हूँ
नारी शक्ति के नारों से, अपने मन को बहलाता हूँ
फिर नारी शक्ति के नारों से कुछ विचलित सा हो जाता हूँ
क्योंकि इन नारों की गूंज में भी तुमको असहाय पाता हूँ
पर अपना फर्ज़ जान तुम्हें जगाने आता हूँ
फिर रामचरित मानस की ये चौपाई गाता हूँ

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना।।
पवन जनय बल पवन समाना। बुद्धि बिबेक बिग्यान निधाना।।

सुनकर तुमने भी अपने बल को पहचाना
तुम अबला नहीं तुम सबला हो तुमने ये जाना
दुष्टों के प्रति, प्रतिकर्म को तुमने है ठाना
तुम्हारे नव अवतार को दुनिया ने जाना
तुम्हारे नव अवतार को दुनिया ने माना
तुम्हारे नव अवतार को दुनिया ने माना .....

किसकी कब विदाई



श्याम दत्त मिश्रा
कार्यालय महालेखाकार (ले.प.)
वीर चंद पटेल मार्ग,
पटना, बिहार

पूरे साल भर की
सेवानिवृत्ति की सूची की कुछ प्रतियाँ
काँख में दबाये एक नया चपरासी
केबिन में घुसा
केबिन में आठ–दस थे बैठे
घुसते ही उसने
एक साहब का नाम पुकारा
साहब ने हाथ पुकारा
साहब ने हाथ उठाया
चपरासी ने लिस्ट
झट उन्हें थमाया
और जो दिख रहे थे बूढे
कुछ थोड़े थके–थके से
उनकी ओर भी लिस्ट
धीरे से सरकाया
साहब ने गौर फरमाया
उस लिस्ट में अपना नाम पाया
देख लिस्ट में नाम अपना
भावुक हो बोले
बस दो महीना और
यहाँ अब है रहना
तभी एक और नाम देखा
जो ठीक पास था बैठा
चहक कर बोले
देख तेरा भी नाम है
यार तू भी मेरे साथ है।
पूरे सोलह नामों से
पटी थी वह सूची
फिर क्या था
एक कहकहे की झड़ी फूटी
एक ने कहा – यार तेरा नम्बर
मेरे एक महीने बाद है
तभी किसी ने कहा
और तेरे दो महीने बाद मेरा
तेरे साथ दो और हैं
और मैं हूँ चौकड़ी के साथ
एक ने कहा
यार उस दिन में अकेला रहूँगा
दूल्हा उस दिन का मैं ही बनूँगा
इनकी बातें सुन कवि मन
चंचल हो उठा
सोचने लगा
यदि यमराज जी भी
आगामी एक वर्ष की
ऐसे ही लिस्ट
कर दें जारी
तो क्या होगा?
शायद कुछ–कुछ
सेवानिवृत्त जैसा ही होगा
पहले मन दुखी होगा
फिर चहक उठेगा
कोई कहेगा
तू आज जा
मैं कल आता हूँ
कोई कहेगा
चिंता किस बात की
मैं तो समूह में जा रहा हूँ
जितने दिन बचेंगे
सब जश्न में कटेंगे
काला–उजला जो कमाया
कुछ गरीबों के नाम बटेंगे
टके की दुनिया से
शेष दिन दूर दिखेंगे
मौलाना–पण्डित
गले मिलते दिखेंगे
अल्लाह–राम
जहाँ–तहाँ मुस्काते मिलेंगे
गिले–शिकवे
फिर कहाँ रहेंगे
जानी दुश्मन भी
फिर दोस्त लगेंगे
और सबसे अहम
जो कुटुम्ब अन्त बाद
मिलने आते हैं
वो पहले से ही
विदाई में खड़े मिलेंगे
खैर मजाक–मजाक में
न जाने क्या–क्या कह गया
पर तारीख न पता हो
तो ही अच्छा है
झटके में निकल जाने का
अलग ही मजा है

दुनिया की सच्चाई

सुचित कुमार शुक्ला
डी.ई.ओ, ग्रेड–ए,
कार्यालय प्रधान निदेशक
रक्षा वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
बेंगलूर–560001

हजारों चेहरे इस दुनिया के,
सबके रूप अनेक रंग अनेक
मगर पहचाने कैसे कोई इन्हें,
सबके बोल अनेक, ढंग अनेक।
जब दुनिया से मेरी पहली मुलाकात हुई,
जान हुई पहचान हुई हंस के फिर कुछ बात हुई।
सबने मुझपे प्यार लुटाया सब कितने अच्छे थे,
बोली में उनके विश्वास भरा था सब कितने सच्चे थे।
चऊँ ओर खुशियाँ ही खुशियाँ मानो दीपक जलते हो,
लोग सभी इते हैं प्यारे मानो पुष्पों में पलते हों।
फिर हल्की सी दस्तक दी दरवाजे पे एक आँधी ने,
दीपक बुझते बाग उजड़ते देखा फिर इन आँखों ने।
सच्चाई की ढींगें भरने वाले ओंठों पे जैसे पहरे हैं,
धोखा मिलना तो सहज बात है चेहरे के ऊपर चेहरे हैं।
दूजे के खातिर जहर तो केवल शंकर ही पीता है,
इस दुनिया का इंसान तो केवल अपने खातिर जीता है।
दूजा कोई मरे तो मरे भला हो केवल अपना,
जिस काम में हो दूजे का भला, वो तो है केवल सपना।
इंसान का अस्तित्व ही जब केवल स्वयं से उपजता है,
तो स्वयं के अलावा किसी का भला उसे सहज अखरता है।
ऐसा नहीं कि सब कुछ बुरा है, सब इक दूजे से जलते हैं,
लेकिन दान पुण्य सब कुछ ही, अपने भले के लिए करते हैं।
माया के इस तम पाश को काटे वो ही सच्चा मानव है,
लेकिन यहां नहीं है मानव, सब माव भेष में मानों दानव हैं।

साड़ी की महिमा

श्रीमती तृप्ता
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवाएं, सातवीं मंजिल
ए–ब्लॉक, रक्षा कार्यालय कॉम्पलैक्स
अफ्रीका एवेन्यू, नई दिल्ली

साड़ी कहने को एक परिधान है,
मगर सदियों से यही हमारी पहचान है
ये गुरूर रही द्रौपदी की, ये सुंदरता रही सीता की
ये मान है भारत का, ये सम्मान है संस्कृति का
इसमें गहनों की खूबसूरती है, इसमें परंपराओं की मजबूती है
ये धरोहर है हमारे पूर्वजों की।

ये सब पर भारी है, सबकी पसंद यही दावेदारी है
हर श्रृंगार अधूरा है, इसके बिना हमारा देश अधूरा है।
इसमें मान्यता, वचन, संस्कार दिखते हैं
अजर अमर बलिदान दिखते हैं।
माँ लक्ष्मी, रानी लक्ष्मी की शक्तियों से निहित हैं,
रेशम, कॉटन, चंदेरी, बनारसी कितनी कलाओं से सुसज्जित है
रहीशों से गरीबों को सजाती है, इसमें नारी की सम्पूर्णता विराजती है
मॉडर्न वेस्टर्न सबको लुभाती है, धार्मिकता का अंदाज दिखाती है
ये साड़ी है ... बंगाली, महाराष्ट्रियन, हिंदुस्तानी कहलाती है।।

पायल, टीका, नथुनी, बिंदिया इसके बिना अधूरे हैं
कविताओं में भी श्रृंगार नहीं पूरे हैं।

यादों का झरोखा



नवीन 'एकान्त' दैया
निजी सचिव
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

पुरानी फ़ोटो में देखा पापा मम्मी को तो अपना अतीत आया याद।
वो बेलबोटम वाली पैंट और बड़ी कॉलर की शर्ट भी आया याद।।
सफ़ेद पी.टी. शूज़ जिन्हें वाइट कलर से रंगना भी आया याद।
वो नई–नई टाई की गाँठ बांधना सीखना भी आया याद।।
पहली साइकिल को मोहल्ले में इतराते हुए चलाना भी आया याद।
25–50 पैसे की जेबखर्ची से बर्फ़ के गोले का शर्बत भी आया याद।।
होली दिवाली पे रिश्तेदारों से मिले अठन्नी रूपया भी आया याद।
और शाम को उन पैसा का हिसाब जैसे करोड़ों की मिली जायदाद।।

वो शादियों में खाने के बाद भी फिर से खाना खा लेना भी आया याद।
कहाँ गुम हो गया वो बचपन, अब तो सिर्फ़ दिल में रह गई याद।।
'एकान्त' मन की इच्छा कोई एक बार बचपन फिर से दिखला दे।
एक बार वो बचपन वाला मासूम बच्चा फिर से बना दे।।

मुख्यालय की "कीर्ति"



अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी, मुख्यालय
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

यह वर्ष भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग परिवार के लिए अतिशय हर्ष एवं गौरव का क्षण लेकर आया जब राजभाषा विभाग ने भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/बोर्डों/स्वायत्त निकायों/न्यासों/सोसाइटियों आदि के मध्य राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए वर्ष 2022–23 के "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय के **प्रथम**





सम्मेलन मे उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचारों से अवगत कराते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू

स्थान की घोषणा की। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने के लिए 300 से अधिक कार्मिक वाले मंत्रालय/विभाग को भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला यह सर्वोच्च पुरस्कार है।

हमारे विभाग का गौरव बढ़ाने वाला यह पुरस्कार रूपी सम्मान हमारे कार्यालय को वर्ष 2023–24 में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित "तृतीय अखिल भारतीय सम्मेलन" पुणे में दिया गया जिसका उद्घाटन माननीय गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्र द्वारा किया गया। इससे पहले हिंदी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह (14.09.2023) अपने संदेश में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र का उल्लेख करते हुए कहा कि अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। किसी राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि राष्ट्र के निवासियों ने अपनी भाषा को किस सीमा तक शक्तिशाली, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया। उनके भाषण के उपरांत सम्पन्न पुरस्कार वितरण समारोह में हमारे कार्यालय की ओर से यह सम्मान मुख्यालय के राजभाषा अनुभाग के महानिदेशक श्री भवानी शंकर ने ग्रहण किया। यह पुरस्कार हमारे कार्यालय की राजभाषा के प्रति निष्ठा एवं प्रेम को दिखाता है जो इस तथ्य से भी परिलक्षित है कि श्री जे.पी. एन. सिंह, महानिदेशक (राजभाषा) के कार्यकाल में वर्ष 2020–21 में भी कार्यालय को इसी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

दिनांक 14.09.2023 से 29.09.2023 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी भाषा



हिन्दी दिवस समापन समारोह को संबोधित करते हुए अपर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री आनंद मोहन बजाज



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के सम्बोधन पर उन्हें धन्यवाद ज्ञपित करते हुए राजभाषा महानिदेशक श्री भवानी शंकर

पर आधारित अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं को इस प्रकार अभिकल्पित किया गया था जिससे इनके माध्यम से प्रतिभागियों के हिंदी भाषा के लेखन, अनुवाद, सम्प्रेषण एवं टंकण कौशल की समग्र रूप से जांच हो सके। इनमें मुख्यतः निबंध, अनुवाद, वर्गपहेली तथा टिप्पण एवं प्रारूपण सम्मिलित थे। इस दौरान मुख्यालय के पुस्तकालय में मुख्यालय से प्रकाशित होने वाली पत्रिका **"लेखापरीक्षा प्रकाश"** समेत विभिन्न विषयों पर लिखी गईं समकालीन हिंदी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसका उद्घाटन अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय द्वारा किया गया।

दिनांक 29.09.2023 को सम्पन्न होने वाले समापन एवं हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय द्वारा की गई। अपने उद्बोधन में माननीय अध्यक्ष महोदय ने समारोह में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए सर्वप्रथम उन्होंने कार्यालय द्वारा **राजभाषा कीर्ति पुरस्कार में प्रथम स्थान** प्राप्त करने पर मुख्यालय के राजभाषा अनुभाग को बधाई दी तथा राजभाषा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता एवं कार्यकुशलता की सराहना की। राजभाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा में कार्य करना कहीं से भी क्लिष्ट नहीं होना चाहिए। उपयोग में कम आने वाले एवं क्लिष्ट शब्दों के स्थान पर सरल शब्दों के प्रयोग करने का उन्होंने सुझाव दिया। विनोदपूर्ण लहजे में उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आगाह किया कि आमतौर पर हिंदी को बढ़ावा देने वाले ऐसे उत्सवों में आमंत्रित अधिकारीगण वैसे तो बहुत लुभावने आश्वासन करते हैं परंतु वास्तविकता के धरातल पर उनकी उपलब्धियां नाममात्र की ही होती हैं। ऐसी परिस्थितियों से बचने की उन्होंने सलाह दी। क्षेत्रीय कार्यालयों समेत मुख्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा विभाग द्वारा जारी की गई कंठस्थ प्रयुक्ति का उपयोग बढ़ाने का आह्वान भी किया। हिंदी भाषा के विकास में पत्र–पत्रिकाओं के योगदान को भी उन्होंने स्वीकार किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी हमारा कार्यालय राजभाषा में कार्य करने के अपने इसी स्तर को न सिर्फ बनाए रखेगा बल्कि नए प्रतिमान भी रचेगा। उनके प्रेरणादायी भाषण का उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने तालियाँ बजाकर स्वागत किया।

हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह का शुभारंभ अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा मुख्य अतिथि



उपस्थित गणमान्य अतिथियों का स्वागत करती हुई समारोह कार्यक्रम संचालिका कनिष्ठ अनुवादक सुश्री नेहा यादव

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय एवं विशेष अतिथि उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (एचआर, आईआर एवं समन्वय) महोदया के स्वागत से हुआ। जिसके पश्चात् महानिदेशक (राजभाषा) ने अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का स्वागत किया।

अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के संबोधन के पश्चात् समारोह के अध्यक्ष भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय ने कार्यालय की तरह से आयोजित अधिकारी एवं कर्मचारी संवर्ग हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (एचआर, आईआर एवं समन्वय) महोदया ने हिंदी में पूरे वर्ष में सबसे अधिक कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया। उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने विजेताओं का मानवर्धन करतल ध्वनि से किया। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय के भाषण व पुरस्कार वितरण के उपरांत पखवाड़े का समापन महानिदेशक (राजभाषा) के धन्यवाद भाषण के द्वारा हुआ। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने समापन समारोह में भारी संख्या में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने प्रतियोगिता के सभी प्रतिभागियों को भी धन्यवद देते हुए कहा कि प्रतियोगिता की जीत व हार किसी भी अधिकारी/कर्मचारी के राजभाषा के प्रति समर्पण का मापदंड नहीं है। राजभाषा के प्रति निष्ठा एवं समर्पण भाव से प्रतियोगिता में हिस्सा लिया जाना ही इस देश की राजभाषा के प्रति सेवा भावना की असली कसौटी है। उन्होंने इस कसौटी पर खरे उतरने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का उत्साहवर्द्धन किया एवं आशा प्रकट की कि अगले वर्ष इससे भी अधिक संख्या में इन प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा भाग लिया जाएगा।



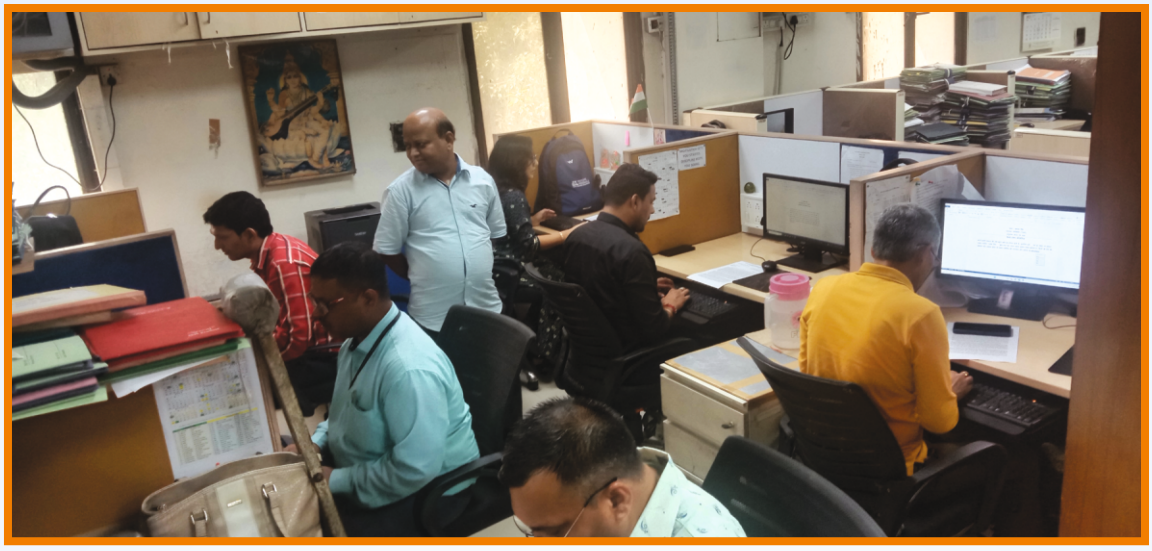
राजभाषा समारोह में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अभूतपूर्व उपस्थिति



राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करने पर राजभाषा अनुभाग को बधाई देते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू



हिंदी दिवस कार्यक्रम का आनंद उठाते हुए अधिकारीगण



टंकण प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी



टिप्पण प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी



निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मु से विजेताओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान करने का अनुरोध करते हुए राजभाषा महानिदेशक श्री भवानी शंकर



उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक सुश्री परवीन मेहता को पुरस्कार वितरण में सहयोग करते हुए महानिदेश राजभाषा श्री भवानी शंकर

प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति–पत्र प्रदान करते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक










प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति–पत्र प्रदान करते हुए उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक



















पुरस्कार प्राप्ति के पश्चात विजेताओं के गौरवशाली पत्र



पुरस्कार विजेताओं का करतल ध्वनि से स्वागत करते हुए दर्शकगण



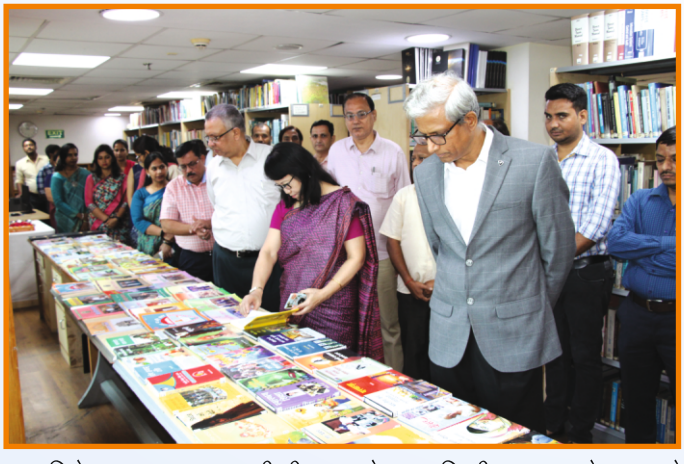
कार्यक्रम हेतु पुस्तकालय प्रस्थान करते हुए महानिदेशक मुख्यालय एवं राजभाषा के साथ अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय



पुस्तक प्रदर्शनी कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय



पुस्तक प्रदर्शनी कार्यक्रम में वाग्देवी को नतमस्तक अपर उपनियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक महोदय



महानिदेशक मुख्यालय सुश्री रीना अकोइजम हिन्दी पुस्तक को ध्यान से पढ़ते हुए



अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक एवं महानिदेशक मुख्यालय के साथ महानिदेशक राजभाषा पुस्तकों पर चर्चा करते हुए



उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक सुश्री परवीन मेहता का स्वागत करते हुए
अपर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री आनंद मोहन बजाज



मुख्यालय का राजभाषा अनुभाग का दल

पंजीकरण सं.–2 एल (9)/8747177/87(90)



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124